श्री तीस चौबीसी विधान

(श्री महालक्ष्मी प्राप्ति विधान)

रचियता
आर्ष मार्ग संरक्षक, कविहृदय, प्रज्ञायोगी
दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

सम्पादन
मुनि श्री चन्द्रगुप्त जी

प्रकाशक :
श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन
श्री अतिशय क्षेत्र धर्मतीर्थ
धर्मतीर्थ क्षेत्र कचनेर के पास, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
Email : dharamrajshree@gmail.com

पुस्तक का नाम	:	**श्री तीस चौबीसी विधान**
आशीर्वाद	:	तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मतिसागरजी गुरुदेव गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव
रचनाकार	:	आर्षमार्ग संरक्षक प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव
संपादन	:	मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी
सहयोग	:	मुनि श्री सुयशगुप्तजी, मुनि श्री विमलगुप्तजी, मुनि श्री विनयगुप्तजी, गणिनी आर्यिका क्षमाश्री माताजी गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी क्षुल्लक श्री धर्मगुप्तजी, क्षुल्लक श्री शांतिगुप्तजी क्षुल्लिका धन्यश्री माताजी, क्षुल्लिका तीर्थश्री माताजी ब्र. केशरबाई
सर्वाधिकार सुरक्षित	:	रचनाकाराधीन
प्रतियाँ	:	1000
संस्करण	:	द्वितीय, वर्ष-2016, तृतीय, वर्ष-2021
प्रकाशन	:	**श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन, धर्मतीर्थ क्षेत्र कचनेर के पास, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)** Email : dharamrajshree@gmail.com
प्राप्ति स्थान:		1. प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ससंघ 2. श्री धर्मतीर्थ, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) 9421503332 3. श्री नितिन नखाते, नागपुर, 9422147288 4. श्री राजेश जैन (केबल वाले), नागपुर 9422816770 5. श्री रमणलाल साहू जी, औरंगाबाद मो. 9823182922 6. श्री सुबोध जैन, राधेपुरी, दिल्ली 9910582687
मुद्रक	:	**राजू ग्राफिक आर्ट, जयपुर** मो.नं. : 9829050791 E-mail : rajugraphicart@gmail.com

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृ.नं.
1.	आशीर्वाद – आचार्य सन्मतिसागर	5
2.	शुभाशीष – ग.आ. कुन्थुसागर	8
3.	शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनायें – आचार्य कनकनन्दी	9
4.	प्रस्तावना – आचार्य गुप्तिनंदी	11
5.	महाफलदायी जिनपूजा – मुनि सुयशगुप्त	13
6.	सम्पादकीय लेख– मुनि चन्द्रगुप्त	15
7.	तीस चौबीसी व्रत विधि	17
8.	क्यों करें ये विधान ?	18
9.	विनय पाठ	19
10.	पूजा आरंभ (हिन्दी)	20
11.	श्री नित्यमह पूजा– ग. आर्यिका राजश्री माताजी	24
12.	श्री तीस चौबीसी विधान समुच्चय पूजन	28
13.	(1) जम्बूद्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ भूतकालीन 24 तीर्थंकर पूजा	32
14.	(2) जम्बूद्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकर पूजा	37
15.	(3) जम्बूद्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ भविष्यत्कालीन 24 तीर्थंकर पूजा	43
16.	(4) जम्बूद्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालीन 24 तीर्थंकर पूजा	48
17.	(5) जम्बूद्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकर पूजा	54
18.	(6) जम्बूद्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ भविष्यत्कालीन 24 तीर्थंकर पूजा	59
19.	(7) पूर्वधातकी खंड द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ भूतकालीन 24 तीर्थंकर पूजा	65
20.	(8) पूर्वधातकीखंड द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकर पूजा	71
21.	(9) पूर्वधातकीखंड द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ भविष्यत्कालीन 24 तीर्थंकर पूजा	77
22.	(10) पूर्वधातकीखंड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालीन 24 तीर्थंकर पूजा	82
23.	(11) पूर्वधातकीखंड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकर पूजा	88
24.	(12) पूर्वधातकीखंड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ भविष्यत्कालीन 24 तीर्थंकर पूजा	93
25.	(13) पश्चिमधातकीखंड द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ भूतकालीन 24 तीर्थंकर पूजा	99

26.	(14) पश्चिम धातकीखंड द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकर पूजा	105
27.	(15) पश्चिम धातकीखंड द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ भविष्यत्कालीन 24 तीर्थंकर पूजा	110
28.	(16) पश्चिम धातकीखंड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालीन 24 तीर्थंकर पूजा	116
29.	(17) पश्चिमधातकी खंड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकर पूजा	122
30.	(18) पश्चिम धातकी खंड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ भविष्यत्कालीन 24 तीर्थंकर पूजा	128
31.	(19) पूर्व पुष्करार्ध द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ भूतकालीन 24 तीर्थंकर पूजा	133
32.	(20) पूर्व पुष्करार्ध द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकर पूजा	138
33.	(21) पूर्व पुष्करार्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ भविष्यत्कालीन 24 तीर्थंकर पूजा	143
34.	(22) पूर्व पुष्करार्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालीन 24 तीर्थंकर पूजा	148
35.	(23) पूर्व पुष्करार्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकर पूजा	154
36.	(24) पूर्व पुष्करार्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ भविष्यत्कालीन 24 तीर्थंकर पूजा	159
37.	(25) पश्चिम पुष्करार्ध द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ भूतकालीन 24 तीर्थंकर पूजा	165
38.	(26) पश्चिम पुष्करार्ध द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकर पूजा	171
39.	(27) पश्चिम पुष्करार्ध द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ भविष्यत्कालीन 24 तीर्थंकर पूजा	176
40.	(28) पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालीन 24 तीर्थंकर पूजा	181
41.	(29) पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकर पूजा	186
42.	(30) पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ भविष्यत्कालीन 24 तीर्थंकर पूजा	192
43.	पंच विदेह में विद्यमान 20 तीर्थंकर पूजा	197
44.	बड़ी जयमाला	202
45.	प्रशस्ति	204
46.	आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव की पूजन– मुनि श्री चन्द्रगुप्त	205
47.	अर्घावली	208
48.	समुच्चय अर्घ	210
49.	शांतिपाठ (हिन्दी)/विसर्जन पाठ	211–212
50.	आरती	213–214
51.	संघ द्वारा प्रकाशित साहित्य सूची	215–216

आशीर्वाद

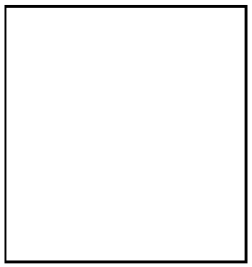

यह भारत भूमि पूर्व की भाँति साधु-संतों के अवतरण, निष्क्रमण, आचरण एवं साधना से पवित्र, पावन, पुनीत होती रही है तथा जिनसे भूत, भविष्य तथा वर्तमान काल में अनेक भव्य जीव अपनी आत्मा का उद्धार कर रहे हैं। उन्हीं में से मुनिकुंजर, समाधि सम्राट, अप्रतिम उपसर्गविजेता, आदर्श तपस्वी महामुनि, दक्षिण भारत के वयोवृद्ध संत, आचार्य परमेष्ठी आचार्य श्री आदिसागरजी महाराज अंकलीकर के पट्टाधीश आचार्य श्री महावीरकीर्तिजी महाराज के शिष्य वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विमलसागरजी महाराज इन महापुरुषों के उद्धार की प्रणाली आगमोक्त रही है। इन्होंने स्वात्महित के साथ परहित भी किया है तथा अपनी तपोपूत आत्मा से भव्य आत्माओं को हितोपदेश दिया है। वह उपदेश ग्रंथरूप में लिपिबद्ध है।

आचार्य श्री आदिसागरजी (अंकलीकर) ने भाद्रपद शुक्ला 4 वि.सं. 1923 सन् 1866 को अंकली में जन्म लिया। मगसिर शुक्ला 2 वि.सं. 1970 सन् 1913 को कुंथलगिरि पर दीक्षा ली, ज्येष्ठ सुक्ला 5 वि.सं. 1972 सन् 1915 को जयसिंहपुर (काडगेमला, उदगांव) में आचार्य पद को ग्रहण किया। फाल्गुन कृष्णा 13 वि.सं. 2000 सन् 1944 को उदगांव कुंजवन में समाधिमरण किया। उन्होंने अपने दीक्षा काल में प्रायश्चित्त विधान (प्राकृत) को भाद्रपद शुक्ला 5 वि.सं. 1972 सन् 1915, जिनधर्म रहस्य (संस्कृत) को मगसिर शुक्ला 2 वि.सं. 1999 सन् 1941, शिवपथ (संस्कृत) को भाद्रपद शुक्ला 4 वि.सं. 2000 सन् 1943, वचनामृत मराठी को माघ शुक्ला 14 वि.सं. 2000 सन् 1943, उद्बोधन (कन्नड़) को फाल्गुन शुक्ला 14 वि.सं. 2000 सन् 1943, अंतिम दिव्य देशना (कन्नड़) को फाल्गुन कृष्णा 13 वि.सं. 2001 सन् 1944 में पूर्ण किया।

आचार्य श्री आदिसागरजी महाराज (अंकलीकर) के पट्टाधीश आचार्य श्री महावीरकीर्तिजी महाराज ने वैसाख कृष्णा 9 वि.सं. 1967 सन् 1910 को फिरोजाबाद में जन्म लिया, फाल्गुन शुक्ला 14 वि.सं. 2000 सन् 1943 को उदगांव में दीक्षा ली। आश्विनी शुक्ला 10 वि.सं. 2000 सन् 1943 को उदगांव में आचार्यपद ग्रहण किया, माघ कृष्णा 6 वि.सं. 2028 सन् 1972 को महसाना में समाधि ग्रहण की। आपने अपने परम्परागत ज्ञान से अपने दीक्षा काल में प्रायश्चित्त विधान (संस्कृत टीका) को फाल्गुन शुक्ला 13 वि.सं. 2009 सन् 1952, वचनामृत (अंग्रेजी वर्डस ऑफ नेक्टर) को मगसिर कृष्णा 10 वि.सं. 2000 सन् 1943 धर्मानन्द श्रावकाचार (हिन्दी) को चैत्र शुक्ला 13 वि.सं. 2000 सन् 1943, प्रबोधाष्टक (संस्कृत स्वोपज्ञ टीका सहित) को फाल्गुन शुक्ला 11 वि.सं. 2004 सन् 1947, शिवपथ (टीका) को मगसिर कृष्णा 10 वि.सं. 2004 सन् 1947, जिनधर्म रहस्य (हिन्दी टीका) को फाल्गुन शुक्ला 13 वि.सं. 2010 सन् 1954 चतुर्विंशति स्तोत्र (संस्कृत) को मगसिर शुक्ला 11 वि.सं. 2018 सन् 1961 को ग्रंथों की पूर्णता की।

आचार्य श्री विमलसागरजी महाराज ने आश्विनी कृष्णा 7 वि.सं. 1972 सन् 1915 को कोसमा ग्राम में जन्म लिया, फाल्गुन शुक्ला 13 वि.सं. 2009 सन् 1952 को सोनागिरि में मुनि दीक्षा ग्रहण की। मगसिर कृष्णा 2 वि.सं. 2018 सन् 1960 को टुण्डला में आचार्य पद ग्रहण किया। पौष कृष्णा 12 वि.सं. 2051 सन् 1994 को सम्मेद शिखर में समाधिमरण किया। अपने दीक्षा काल में परम्परागत ज्ञान से जिनवाणी का वैभव (हिन्दी) को कार्तिक शुक्ला 15 वि.सं. 2008 सन् 1951, हे आचार्य आदिसागर (अंकलीकर) हिन्दी को कार्तिक कृष्णा 10 वि.सं. 2039 सन् 1982 संदेश हिन्दी को आश्विनी शुक्ला 9 (23 अक्टूबर) को वि.सं. 2050 सन् 1993 में प्रतिपादन कर पूर्ण किया।

संदेश- हमारी आचार्य परम्परा में प्रथम मुनिकुंजर आचार्य श्री आदिसागरजी अंकलीकर हैं। आप आचार्य श्री महावीरकीर्तिजी के दीक्षा गुरु

हैं। आचार्य श्री आदिसागरजी (अंकलीकर) ने अपना आचार्य पद श्री महावीरकीर्तिजी को दिया है।

जैन समाज में आचार्य श्री आदिसागरजी (अंकलीकर) की परम्परा और आचार्य श्री शांतिसागरजी दक्षिण की परम्परा इस युग में निर्बाध चली आ रही है। समाज का कर्त्तव्य है कि किसी प्रकार का विवाद न करके दोनों आचार्य परम्परा को आगमसम्मत मानकर वात्सल्य से धर्म प्रभावना करें।

परम पूज्य मुनिकुंजर समाधि सम्राट आचार्य श्री आदिसागरजी (अंकलीकर) के शिष्य आचार्य श्री महावीरकीर्तिजी के शिष्य गणधराचार्य श्री कुंथुसागरजी के शिष्य **आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी** इसी मेधावी आचार्य परम्परा में हैं जिनका ज्ञान काव्य में एवं साहित्य में अच्छा अधिकार है। उसी काव्य ज्ञान से पूर्व में **रत्नत्रय विधान** की रचना हुई है। उस कृति से चतुर्विध संघ लाभ ले रहा है। वर्तमान कृति **'तीस चौबीसी विधान'** की रचना है। इस रचना की बहुत बड़ी आवश्यकता थी जिसकी पूर्ति इस परम्परा के आचार्य गुप्तिनंदीजी ने की है। अन्य भाषाओं में यह विधान उपलब्ध है परन्तु हिन्दी भाषा में आचार्य के द्वारा उपलब्ध होना विशेष महत्त्वपूर्ण है। इससे समाज अपने कर्त्तव्य का निर्वाह कर शुद्ध चिद्रूप की प्राप्ति कर सकेगी। इसकी प्राप्ति का प्रारम्भ जिनेन्द्र देव के अभिषेक पूजा विधान इत्यादि के माध्यम से होता है। आत्म स्वभाव की प्राप्ति होना अतिदुर्लभ है परन्तु कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति को कुछ भी दुर्लभ नहीं है, सुगम है।

अतः इस **'तीस चौबीसी विधान'** से सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्र एवं सम्यक् तप इन आराधनाओं की सिद्धि सहज हो जाती है। इसलिए प्रस्तुत कृति से प्राणीमात्र पुण्योपार्जन के साथ-साथ मोक्षमार्ग में चलकर अपनी आत्मा को अजर-अमर बनाएंगे इसी भावना के साथ...

जन्माष्टमी 2009 **आचार्य सन्मतिसागर**

इचलकरंजी

शुभाशीष

बड़ी प्रसन्नता इस बात की है कि हमारे सुयोग्य शिष्य, कविहृदय, मनोज्ञ **आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी** ने **तीस चौबीसी विधान** की रचना की है। यह अतिशय प्रभावकारी विधान है। इसमें ढाई द्वीप के पाँच भरत और पाँच ऐरावत क्षेत्र संबंधी, तीन काल की तीस चौबीसी की आराधना है। अर्थात् दस क्षेत्रों के तीनों कालों की तीस चौबीसी के सात सौ बीस तीर्थंकरों की, उनकी तप साधना की, समोशरण की महा-अर्चा है। इस विधान के करने से महापुण्य का बंध होता है। कर्मों की निर्जरा होती है। परिणामों में विशुद्धता आती है। आचार्य गुप्तिनंदी जी ने यह बहुत ही अच्छा कार्य किया है। इससे पहले भी आपने अनेक छोटे-बड़े विधानों की रचना की है। सभी विधान अतिशयकारी हैं। सरल छंदों में सुन्दर भाषा में लिपिबद्ध हैं। पढ़ते ही सहज समझ में आते हैं। आप हमारे संघ के कवि लेखक आचार्य हैं। आपका क्षयोपशम निरन्तर बढ़ता रहे। आगे और भी इसी तरह की रचना करते रहें। ऐसा मेरा आशीर्वाद है।

आप सबका रत्नत्रय ठीक होगा। मेरा भी ठीक है। आचार्य गुप्तिनंदीजी व संघ में सबको प्रतिनमोऽस्तु व यथायोग्य।

ग.आ. कुन्थुसागर

31-7-2013

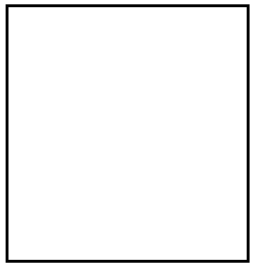

शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनायें

(तर्ज - अजर-अमर....)

अरिहंताय नमो नमः,. अनन्ताय नमो नमः, तीर्थंकराय नमो नमः।
नमो नमः हे नमो नमः, सर्व जिनेन्द्राय नमो नमः, सर्वज्ञाय नमो नमः (धुन)॥1॥
सर्वज्ञाय नमो नमः, शुद्धात्मने नमो नमः, परमेष्ठीन नमो नमः॥2॥ नमो..
परमसुखाय नमो नमः, केवलिन नमो नमः, विरागाय नमो नमः॥3॥ नमो..
शुद्धाय नमो नमः, बुद्धाय नमो नमः, चिन्मयाय नमो नमः॥4॥ नमो..
कल्याणाय नमो नमः, मंगलाय नमो नमः, श्री शिवाय नमो नमः॥5॥ नमो..
शंकराय नमो नमः, पावनाय नमो नमः, पवित्राय नमो नमः॥6॥ नमो..
अजराय नमो नमः, अमृतराय नमो नमः, शंभवाय नमो नमः॥7॥ नमो..
शाश्वताय नमो नमः, क्षेत्रज्ञाय नमो नमः, स्थविराय नमो नमः॥8॥ नमो..
वरिष्ठाय नमो नमः, गरिष्ठाय नमो नमः, सर्वात्माय नमो नमः॥9॥ नमो..
निर्लेपाय नमो नमः, विमलाय नमो नमः, स्वतंत्राय नमो नमः॥10॥ नमो..
पद्मेशाय नमो नमः, विशोकाय नमो नमः, पूजिताय नमो नमः॥11॥ नमो..
विवेकाय नमो नमः, महेश्वराय नमो नमः, महासत्त्वाय नमो नमः॥12॥ नमो..

महात्माय नमो नमः, शमात्माय नमो नमः, सुव्रताय नमो नमः॥13॥ नमो..
सदोदयाय नमो नमः, सदातृप्ताय नमो नमः, सदाशिवाय नमो नमः॥14॥ नमो..
पद्मगर्भाय नमो नमः, लोकेश्वराय नमो नमः, विशिष्टाय नमो नमः॥15॥ नमो..
परात्मज्ञाय नमो नमः, परात्पराय नमो नमः, विशिष्टाय नमो नमः॥16॥ नमो..
कलाधराय नमो नमः, जगन्नाथाय नमो नमः, गुह्यात्माय नमो नमः॥17॥ नमो..
शान्ताय नमो नमः, भूतहिताय नमो नमः, प्रजाहिताय नमो नमः॥18॥ नमो..
विश्वगुरुवे नमो नमः, परमेश्वराय नमो नमः, सुगताय नमो नमः॥19॥ नमो..
प्रभामयाय नमो नमः, हितंकराय नमो नमः, वागीश्वराय नमो नमः॥20॥ नमो..
लोकोत्तराय नमो नमः, जगद्धिताय नमो नमः, मोक्षपतये नमो नमः॥21॥ नमो..
नमो नमो हे ! नमो नमः सर्व जिनेन्द्राय नमो नमः, सर्वज्ञाय नमो नमः।

हमारे संघस्थ **आचार्य गुप्तिनंदी** जब मेरे पास थे तब से पद्य-विधा में वे भी लिखते आ रहे हैं। अभी **'तीस चौबीसी विधान'** की रचना आपके द्वारा हुई है। इसके माध्यम से भव्य जीव भगवान् बने ऐसी शुभ-भावना है।

आचार्य गुप्तिनंदी को प्रति नमोऽस्तु सहित मेरी मंगल कामना है कि आप स्व-पर-विश्वकल्याण के लिए निस्पृह भाव से साधना रत रहे-

- आचार्य कनकनन्दी
हल्दीघाटी (राजसमन्द)
दि. 26.7.2013

प्रस्तावना

भरतैरावत क्षेत्र के, त्रिंशत चौबीस नाथ।
जो उनको ध्याये सदा, वही बने जगनाथ।।

तीन काल, तीन लोक में, सार्वभौमिक, सर्वकालिक, अनाधिनिधन, धर्म यदि कोई है तो वह एकमात्र जिनधर्म है। इसकी सम्पूर्ण व्यवस्था, रचना विवेचन प्रामाणिक, सटीक और अकाट्य है। उस पर श्रद्धान मात्र से जीव का कल्याण प्रारम्भ हो जाता है। जिनधर्म सर्व सीमाओं से परे दशों दिशाओं में और तीनों लोकों में व्याप्त है।

जैन भूगोल से हमें ज्ञात होता है कि वर्तमान दृश्यमान जगत से आगे भी बहुत कुछ है। बहुत बड़ा संसार है। मध्य लोक का सबसे छोटा भाग जम्बूद्वीप है। बल्कि यूं कहें कि द्वीपों में पहला द्वीप जम्बूद्वीप है। हम तो मात्र जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र के कुछ भाग को ही देख पा रहे हैं। जबकि यह भरत क्षेत्र भी पूरे जम्बूद्वीप का 190वाँ हिस्सा है। अर्थात् पूरा जम्बूद्वीप या पूरा भरत क्षेत्र भी हम नहीं देख पा रहे हैं। परन्तु आगम पर श्रद्धान् करके हम उससे आगे भी जान सकते हैं। जैन आगम के अनुसार मध्य लोक में असंख्यात् द्वीप व समुद्र हैं। सभी एक दूसरे को वलयाकृति में घेरे हुए हैं। इनमें से मात्र ढाई द्वीप में ही मनुष्यों का सद्भाव है। उससे आगे मनुष्य नहीं जा सकते हैं।

जम्बूद्वीप में एक भरत व एक ऐरावत क्षेत्र है। धातकी खण्ड में दो भरत व दो ऐरावत क्षेत्र हैं। पुष्करार्द्ध द्वीप में भी दो, भरत व दो ऐरावत क्षेत्र हैं। इस तरह ढाई द्वीप में पाँच भरत व पाँच ऐरावत क्षेत्र हैं। इन दस क्षेत्रों में दुखमा सुखमा नामक कृतयुग में चौबीस तीर्थंकर भगवान होते हैं। इस प्रकार से एक काल में दस क्षेत्रों की दस चौबीसी होती हैं और भूत-भविष्यत्-वर्तमान नामक तीन काल में तीस चौबीसी होती है। तीस चौबीसी में 720 तीर्थंकर जिनेन्द्र होते हैं। प्रस्तुत **'तीस चौबीसी विधान'** तीस चौबीसी के 720 तीर्थंकरों की आराधना का विधान है। इस एक विधान में 720 तीर्थंकरों की समुच्चय आराधना हो जाती है। यह विधान मनवाञ्छित कार्यों की सिद्धि कराने वाला विधान है। सर्व अरिष्ट विघ्नों का परिहार करने वाला विधान है। क्रम परम्परा से आठों कर्मों का नाश करके मोक्ष सिद्धी दिलाने वाला विधान है। यह विशुद्ध आध्यात्मिक विधान है। जब इस विधान से मोक्ष सिद्धी की प्राप्ति हो सकती है तो भौतिक कार्यों की सिद्धी तो बिना माँगे स्वयमेव होने वाली है। हमें बिना किसी अपेक्षा के, निष्काम भाव से इसकी आराधना करना चाहिए। उत्तम रूप में इसके उपवास करना चाहिए व मध्यम रूप में नीरस या एकाशन भी किया जा सकता है। इसका मंत्र जाप अवश्य करना चाहिए।

प्रस्तुत विधान में समुच्चय पूजा के बाद तीस चौबीसी के 720 अर्घ विद्यमान विदेह क्षेत्र के 20 तीर्थंकरों के बीस अर्घ, 31 पूर्णार्घ हैं। परम पूज्य तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मतिसागरजी, परम पूज्य गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी, वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव के आशीर्वाद से इस विधान की रचना की है। इसमें मुनि श्री सुयशगुप्तजी, मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी व आर्यिका आस्थाश्री माताजी का सहयोग विशेष उल्लेखनीय है। विधान के लेखन, संशोधन आदि में तीनों ने पूरा सहयोग दिया है। जिन भक्ति में उनका सह-सहयोग उन्हें बहुत जल्दी सयोग केवली बनायें यही उनके लिए विशेष आशीर्वाद शुभकामना है। प्रुफ संशोधन आदि कार्यों में मुनि श्री महिमासागरजी, क्षुल्लिका धन्यश्री माताजी ने सहयोग दिया है। एतदर्थ सभी साधु-साध्वियों को यथायोग्य प्रतिनमोऽस्तु। मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी ने बड़े ही मनोयोग से इसका संपादन किया है। उनका यह सम्पादन उनके पुण्य सम्पादन में व सिद्धपद के निष्पादन में कारण बने यही उनके प्रति हमारी विशेष शुभकामना है।

मेरे सभी विधानों की प्रेरणा गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी हैं। उनकी समाधि से कुछ माह पूर्व उन्होंने मुझसे श्री तीस चौबीसी विधान लिखने की प्रार्थना की थी। इसलिए सन् 2009 में तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मतिसागरजी से इसका आशीर्वाद भी मँगवाया था। फिर पुष्पगिरी से आते समय फरवरी-2011 में इसका लेखन कार्य आरम्भ किया। पर बीच में अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य आ जाने से दिसम्बर-2012 में इसका लेखन कार्य पूर्ण हुआ। इस बीच 'श्री विद्याप्राप्ति विधान', 'श्री विजय पताका विधान', 'श्री सर्वसिद्धी विधान', 'श्री सर्व तीर्थंकर विधान', 'श्री श्रुत स्कंध विधान', 'श्री लघु रत्नत्रय विधान' का नव-सृजन व प्रकाशन भी हुआ। संघ के कुछ विधान ग्रन्थ जिसमें मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी के 'श्री भक्तामर विधान', 'श्री छ्यानवे क्षेत्रपाल विधान', 'श्री शांतिनाथ विधान' मुनि श्री सुयशगुप्तजी का 'श्री विषापहार विधान' व आर्यिका आस्थाश्री माताजी के 'श्री एकीभाव विधान', 'श्री सोलहकारण, दशलक्षण, पञ्चमेरु विधान' आदि के सम्पादन, संशोधन का सुयोग भी मुझे प्राप्त हुआ। इत्यादि कारणों से 3 वर्षों में यह विधान पूरा होकर अब आपके समक्ष प्रस्तुत है। मेरा विश्वास है इस विधान में सभी पूजकों, पाठकों को आत्मीय आनंद प्राप्त होगा। विधान की प्रेरणा गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी को मेरा अनेकशः आशीर्वाद।

विधान में अर्थ सौजन्य देने वाले पुण्यार्जक, प्रकाशक, मुद्रक, पाठक, इन्द्र-इन्द्राणी व प्रत्यक्ष-परोक्ष में सहयोग करने वाले सभी सहयोगियों को हमारा शुभाशीर्वाद।

13 अक्टूबर, 2013 (विजया दशमी, दिल्ली) **आचार्य गुप्तिनंदी**

महाफलदायी जिनपूजा

जिनरूपधरं बिंबं सद्द्रव्यैरर्चयंति ये।
जिनपूजाफलं तेऽत्र लभंतेऽनेकधा पुरः॥

उक्त कारिका में महर्षि वासुपूज्य स्वामी ने दान शासन ग्रंथ में जिनबिम्ब पूजा का फल बताते हुए कहा है कि जो सज्जन भक्ति से जिनेन्द्र भगवंत के रूप को धारण करने वाले जिनबिम्ब की भक्ति पूर्वक अनेक उत्तम द्रव्यों से पूजा करते हैं वे इसी जन्म में साक्षात् जिनेन्द्र की पूजा करने के सातिशय फल को प्राप्त करते हैं एवं आगे के जन्म में अनेक प्रकार से ऋद्धि सहित सुख संपत्ति आदि फल को प्राप्त करते हैं।

जिनेन्द्र भगवान के भक्तों को सातिशय पुण्य की प्राप्ति के लिए एवं समस्त शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक संताप को नष्ट करने के उद्देश्य से ही आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ने इस **'तीस चौबीसी विधान'** की रचना की है। उत्तर पुराण ग्रंथ के पर्व 73 में गुणभद्राचार्य स्वामी ने कहा है-

''किं न करोति कल्याणं, कृत पुण्य समागमः॥89॥''

अर्थात् पुण्यात्मा जीवों का समागम कौन सा कल्याण नहीं करता अर्थात् सभी कल्याण करता है। एक पुण्यात्मा के समागम से यह फल मिलता है तो एक साथ अढाई द्वीप के 720 पुण्य पुरुषों (पाँच भरत क्षेत्र एवं पाँच ऐरावत क्षेत्र में प्रत्येक क्षेत्र की त्रिकाल चौबीसी कुल 5 भरत + 5 ऐरावत=10 x 24 = 240 x 3 काल=720) तीर्थंकर भगवंतों का गुणानुवाद/भक्ति एवं उनकी पुण्य वर्गणाओं का समागम निश्चित रूप से भव्यात्माओं को अपवर्ग (मोक्ष) को प्रदान करने वाला है।

आचार्यों ने पूजा के (1) तामसी (2) राजसी और सात्विकी; ये तीन भेद बताये हैं। इन्द्रों द्वारा पूज्य जिनेन्द्र देव की सेवकों से पूजा कराना तामसी पूजा है। इस प्रकार की पूजा से मात्र 10 प्रतिशत सदोष फल मिलता है। दूसरी स्वयं न करके भाई-बंधुओं द्वारा कराई जाती है वह राजसी पूजा है और स्वयं जो भक्ति-भाव से विनयपूर्वक, विभिन्न प्रकार के उत्तमोत्तम मंगल द्रव्यों से जो जिनेन्द्र भगवान की पूजा की जाती है वह सात्विकी पूजा कहलाती है जो स्वर्ग व मोक्षलक्ष्मी का संग कराकर अनंत सौख्य को देती है। अतः शाश्वत सुख पाने के लिये स्वयं के हाथों से/स्वयं के द्वारा जिनेन्द्र आराधना करनी चाहिये।

आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ने 'श्री रत्नत्रय महामण्डल विधान', 'श्री नवग्रह शांति विधान', 'श्री पंचकल्याणक विधान' आदि अनेक महान् जनकल्याणकारी विधानों की रचना की है। इसी श्रृंखला में महाकवि आचार्यश्री ने **'तीस चौबीसी विधान'** की रचना की है।

उक्त कृति को आपने बड़े ही सरल, सर्वजन सुगम्य शब्दों का, रस-छंद-अलंकारों एवं आगम सिद्धांतों का प्रयोग करते हुए 720 तीर्थंकरों की भक्ति से सुसज्जित किया है। पंचम काल में जिन भक्ति ही मुक्ति का साधन है। सुख-शांति का साधन है।

विधान की इन लाइनों में आचार्यश्री ने अपने भाव रखते हुए विधान का सार बड़े ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है।

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज, हम सर्व सिद्धों से मिलें॥

और

सुख शांति की शुभ कामना, से शांतिधारा हम करें।
प्रभु रत्नत्रय की भावना से, दिव्य पुष्पाञ्जलि करें॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज, हम सर्व सिद्धों से मिलें॥

सर्वजन कल्याणकारी/हितकारी यह कृति भक्ति रस का रसास्वादन करने वाले भक्तों के लिये अपूर्व लाभकारी है। अतः दुःखों से मुक्ति पाने हेतु भव्यात्मा यह विधान कर सातिशय पुण्यार्जन करें।

माँ जिनवाणी की सेवा में रत आचार्य भगवन् शीघ्र अनंत सुख को प्राप्त करें। इसी भावना के साथ पूज्य गुरुदेव के चरणों में त्रय भक्तिपूर्वक कोटिशः नमन एवं इस पुस्तक के द्रव्यदाता, प्रकाशक सभी को आशीर्वाद।

-मुनि सुयशगुप्त
23 अक्टूबर, 2013 (राधेपुरी-दिल्ली)

संपादकीय

जेसु चरणेसु भव्वेहिं, भवबाहा णस्सिज्जई।
अहं ते सव्व तित्थयराण, अच्चेमि वंदमि सया॥

जिन चरणों में भव्यों के द्वारा भव बाधा नष्ट की जाती है। मैं उन सब तीर्थंकरों की सर्दा अर्चना वंदना करता हूँ।

आज मुझे ये लिखते हुए बड़ा ही हर्ष हो रहा है कि हमारे गुरुवर आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी की रचनाओं की माला में एक और फूल गुंथित हो रहा है, जिसका नाम है **'श्री तीस चौबीसी विधान'**।

आचार्यश्री द्वारा लिखित 'श्री वृहद् रत्नत्रय विधान' के समान ही यह विधान भी सिद्धांत, भक्ति एवं आगम के सार से सराबोर है, क्योंकि इस विधान के अन्तर्गत पाँच भरत एवं पाँच ऐरावत की त्रिकाल चौबीसी से संबंधित 720 तीर्थंकरों की आराधना है। जिस आराधना में आराध्य एक तीर्थंकर हो उस आराधना की महिमा ही अतिशयवान है और इस विधान/आराधना के आराध्य तो एक नहीं 720 तीर्थंकर हैं तो इस आराधना का माहात्म्य तो कल्पना से परे हैं इसमें कोई द्विमत नहीं हो सकते हैं।

जहाँ हृदय पटल को स्पर्श करने वाले, मनमोहक सुन्दर-सुन्दर तीर्थंकरों के नाम पढ़कर एवं उस नाम को अनुप्रास अलंकार द्वारा छंदबद्ध पंक्ति को पढ़कर अवश्य ही भक्त रोमांचित होंगे, क्योंकि मुझे इसका आभास विधान का संपादन करते समय हुआ है।

इसे मैं अपना सौभाग्य ही नहीं अपितु परम सौभाग्य समझता हूँ कि गुरुदेव ने मुझे विधान के संपादन के योग्य समझा। इस बहाने मेरे द्वारा तीर्थंकर रूप देव, विधान रूप शास्त्र एवं गुरु तीनों की जो सेवा हुई, वो गुरुदेव के प्रसाद से ही हुई है।

गुरुदेव हमें हर विधान में अपने भाव लिखने को कहते हैं, परन्तु हमें ये नहीं समझ में आता कि गुरुदेव के गुणानुवाद में हम हमेशा भिन्न-भिन्न शब्द कहाँ से लायें। गुरुदेव की सारी कृतियाँ इतनी सुन्दर हैं कि सारी कृतियाँ परस्पर में ईर्ष्या करने लगी हैं। ऐसा कहें तो भी कुछ अतिशयोक्ति नहीं होगी।

जैसे तीर्थंकर का नाम **'प्रतिजात'** हैं उनके लिए गुरुदेव ने अर्घ हेतु छंद बनाया है जिसमें पिण्ड शुद्धि का उल्लेख करते हुए बताया है कि-

''जात पात वा पिण्ड शुद्धि को, बतलायेंगे प्रभु प्रतिजात।
वैवाहिक संबंध करो तुम, देख परखकर उत्तम जात॥''

उसी प्रकार 'संतोष' तीर्थंकर का अर्घ भी अनुप्रास अलंकार से सुन्दर संजोया है-

''रोष दोष आक्रोश मिटाकर, ढाई कोस प्रभु ऊपर जाय।
प्रभु संतोष अदोष रीति से, दोष रहित शिवपथ दिखलाय॥

ऐसा लगता है जैसे अब तो विधानों की रचना से संबंधित गुरुदेव को कोई सिद्धि ही प्राप्त हो गई है। जिससे गुरुदेव त्वरित गति से सुन्दर विधानों आदि की रचना कर देते हैं।

उत्तरपुराण में आचार्य श्री गुणभद्र स्वामी ने कहा भी है कि-

नृप चेतो हरैः श्रव्यैः, काव्यैः शब्दार्थ सुंदरैः।
सद्भिः शौर्येण वा कार्यं, शासनस्य प्रकाशनम्॥ (उ.पु.)

अर्थात् राजा के चित्त को हरने वाले, मनोहर तथा शब्द और अर्थ से सुन्दर काव्य बनाना तथा शूरवीरता दिखाना, इन सब कार्यों से सज्जन पुरुषों को जिनशासन की प्रभावना करनी चाहिये।

आचार्यश्री भी इसी श्लोक के अनुरूप जिनशासन की महती प्रभावना करते ही हैं।

इस विधान में अर्घ, जयमाला आदि सभी अपने आप में एक अलग ही काव्य शैली को संजोये हुए हैं। अतः इस विधान के द्वारा सम्पूर्ण पूजकों को कल्पनातीत लब्धि की प्राप्ति अवश्य ही होगी।

मैं तीस चौबीसी के 720 तीर्थंकर भगवान से यही प्रार्थना करता हूँ कि गुरुदेव इस विधान को लिखने के फल से तीर्थंकर जैसे महान् पद को प्राप्त करें एवं उनका नाम भी एक दिन ऐसी ही अगली तीस चौबीसी में जुड़ जाए तथा मैं भी गुरुदेव की रचनाओं का रसास्वादन करते हुए परम पद को प्राप्त करूँ, इसी शुभाशीष की शुभकामना करते हुए..

-मुनि चन्द्रगुप्त (संघस्थ शिष्य)
9-11-2013 (राधेपुरी दिल्ली)

तीस चौबीसी व्रत विधि

व्रत की विधि–

मध्य लोक में ढाई द्वीप तक पाँच भरत एवं पाँच ऐरावत क्षेत्र हैं। जंबूद्वीप में एक भरत, एक ऐरावत ऐसे दो क्षेत्र हैं। धातकी खंड में पूर्वधातकी खंड में एक–एक भरत, ऐरावत एवं पश्चिम धातकी खंड में एक भरत, एक ऐरावत ऐसे दो भरत और दो ऐरावत क्षेत्र हैं। इसी प्रकार पूर्व पुष्करार्द्ध द्वीप में भी एक भरत, एक ऐरावत और पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीप में भी एक भरत, एक ऐरावत ऐसे दो भरत और दो ऐरावत क्षेत्र हैं। इन पाँचों भरत एवं पाँचों ऐरावत क्षेत्रों के आर्यखंडों में षट्काल परिवर्तन होता रहता है। इनमें चतुर्थ काल में चौबीस–चौबीस तीर्थंकर होते रहते हैं। इस प्रकार यद्यपि भूतकाल की अपेक्षा अनंत चौबीसी हो चुकी हैं और भविष्यत्काल में भी अनंत चौबीसी होवेंगी, फिर भी एक–एक भूतकालीन एक–एक वर्तमानकालीन और एक–एक भविष्यत्कालीन के ऐसे पाँच भरत, पाँच ऐरावत के त्रिकाल संबंधी तीस चौबीसी तीर्थंकर भगवंतों के नाम ग्रंथों में मिलते हैं।

इन चौबीसी के तीर्थंकरों के मंत्रों को जपते हुये 'तीस चौबीसी व्रत' करने की परम्परा चली आ रही है। चारित्र चक्रवर्ती प्रथमाचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज ने तथा और भी अनेक मुनि, आर्यिकाओं एवं श्रावक–श्राविकाओं ने यह व्रत किया है और कर रहे हैं। इन व्रतों में उत्कृष्ट विधि उपवास, मध्यम अल्पाहार और जघन्य एकाशन है। इसमें तिथियों का कोई नियम नहीं है। व्रत के दिन पंचामृत अभिषेक करके तीस चौबीसी की समुच्चय पूजा करें। 720 भगवंतों के नाम या मंत्र पढ़ें। उद्यापन में जिनप्रतिमा विराजमान करके तीस ग्रंथों का दान आदि करके व्रत पूर्ण करें एवं तीस चौबीसी विधान करके जहाँ तीस चौबीसी विराजमान हो ऐसे सम्मेदशिखर या अहिच्छत्र आदि तीर्थ पर जाकर तीस चौबीसी भगवंतों का दर्शन पूजन आदि सम्पन्न करें।

– साभार : व्रतविधी संग्रह

क्यों करें ये विधान ?

* **यदि आपके द्वारा जाने-अनजाने कोई व्रत भंग हुआ हो, कोई व्रत भंग हो, कोई व्रत या नियम आपसे टूट गया हो या छूट गया हो ?**
* **यदि आपको व्यापार या नौकरी में निरन्तर हानि हो रही हो ?**
* **यदि बार-बार चोरी या छापा पड़ता हो ?**
* **यदि आपके घर में पैसा नहीं रुकता हो ?**
* **यदि आपको नौकरी में सफलता नहीं मिल रही हो ?**
* **यदि आप बेरोजगारी से परेशान हो ?**
* **यदि आप कर्ज के बोझ से परेशान हो ?**
* **यदि आपकी उधारी डूब जाती हो ?**
* **इत्यादि धन व अंतराय कर्म संबंधी अनेक समस्याओं का समाधान है।**

***

पूजन की थाली में निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए स्वस्तिक बनायें व अंक लिखें–

श्लोक– रयणत्तयं च वंदे चउवीस जिणे च सव्वदा वंदे।
पञ्च गुरुणां वंदे चारण–चरणं च सव्वदा वंदे॥

3

2 卐 24

5

विनय पाठ

(दोहा)

प्रथम जिनेश्वर देव हो, वीतराग सर्वज्ञ।
हित उपदेशी नाथ तुम, ज्ञानरवि मर्मज्ञ॥1॥
केवलज्ञानी बन प्रभो, हरा जगत् अंधियार।
तीन लोक के बंधु बन, किया जगत् उपकार॥2॥
धर्म देशना से मिला, जग को दिव्य प्रकाश।
तव चरणों में नित रहे, यही करें अरदास॥3॥
कर्म बेड़ियाँ तोड़ने, भक्ति करें त्रयकाल।
तीन योग से हे प्रभो !, चरणों में नत भाल॥4॥
चतुर्गति भव भ्रमण से, तारों हमें जिनेश।
दयानिधि जिन ! कर दया, हरलो पाप विशेष॥5॥
प्रभुवर पूजा आपकी, सर्व रोग विनशाय।
विष भी अमृत हो प्रभो !, शत्रु मित्र बन जाय॥6॥
हलधर बलधर चक्रधर, अर्चा के उपहार।
परम्परा जिनभक्ति से, दे प्रभु पद उपहार॥7॥
बड़े पुण्य से जिन मिले, मिला प्रभु का द्वार।
मुक्त करो त्रय रोग से, विनती बारम्बार॥8॥
हम सेवक प्रभु आपके, हे अबोध ! अनजान।
राग–द्वेष अज्ञान हर, दे दो सच्चा ज्ञान॥9॥

मंगल उत्तम शरण है, मंगलमय जिनधर्म।
मंगलकारी सब गुरु, हरो हमारे कर्म॥10॥
चौबीसों जिनवर नमूँ, नमन पंच परमेश।
जिनवाणी गणधर गुरु, 'आस्था' नमें हमेश॥11॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पूजा आरंभ (हिन्दी)

ॐ जय–जय–जय – नमोस्तु–नमोस्तु–नमोस्तु।
णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं॥

(ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः परिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुरिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि।

णमोकार मंत्र महिमा

(चौपाई)

अपवित्र या जन पवित्र हो, सुस्थित हो या दुस्थित भी हो।
नमस्कार मंत्रों को ध्यायें, पापों से छुटकारा पायें॥1॥
सर्व अवस्था में भी ध्यायें, पापी भी पावन बन जाये।
जो सुमिरे नित परमातम को, अन्दर बाहर शुचि बने वो॥2॥
अपराजित ये मंत्र कहाता, सब विघ्नों को दूर भगाता।
सब मंगल में मंगलकारी, प्रथम सुमंगल जग उपकारी॥3॥
महामंत्र णवकार हमारा, सब पापों से दे छुटकारा।
सब मंगल में प्रथम कहाता, महामंत्र मंगल कहलाता॥4॥

परम ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, सिद्धचक्र सुन्दर बीजाक्षर।
मैं मन-वच-काया से नमता, नमस्कार मंत्रों को करता॥5॥
अष्टकर्म से मुक्त जिनेश्वर, श्रीपति जिन मंदिर परमेश्वर।
सम्यक्त्वादि गुणों के स्वामी, नमस्कार मैं करता स्वामी॥6॥
जिनवर की संस्तुति करने से, मुक्ति मिले सारे विघ्नों से।
भूतादि का भय मिट जाता, विष निर्विष निश्चित हो जाता॥7॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे कल्याणमहंयजे॥1॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनइष्टमहंयजे॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत्सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाममहंयजे॥3॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान

(शंभु छंद)

श्री मज्जिनेन्द्र हो विश्ववंद्य, तुम तीन जगत के ईश्वर हो।
तुम चऊ अनंत गुण के धारी, स्याद्वाद धर्म परमेश्वर हो॥
श्री मूल संघ की विधि से मैं, अपना बहु पुण्य बढ़ाने को।
मैं मंगल पुष्प चढ़ाता हूँ, जिन पूजा यज्ञ रचाने को॥1॥
त्रैलोक्य गुरु हे जिनपुंगव !, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
अपने स्वभाव में सुस्थित जिन, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ॥
सम्पूर्ण रत्नत्रय के धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
हे समवशरण वैभव धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ॥2॥
अविराम प्रवाहित ज्ञानामृत, सागर को पुष्प समर्पित है।
निज परभावों के भेद विज्ञ, जिनवर को पुष्प समर्पित है॥

त्रिभुवन को सारे द्रव्यों के, नायक को पुष्प समर्पित है।
त्रैकालिक सर्व पदार्थों के, ज्ञायक को पुष्प समर्पित है॥3॥
पूजा के सारे द्रव्यों को, श्रुत सम्मत शुद्ध बनाया है।
यह भाव शुद्धि के अवलम्बन, द्रव्यों को शुद्ध सजाया है॥
शुचि परमातम का अवलम्बन, आतम को शुद्ध बनाता है।
उसको पाने हे जिन ! तेरी, यह पूजा भव्य रचाता है॥4॥
अर्हत् पुराण पुरुषोत्तम जिन, उनमें न सचमुच गुरुता है।
मैं भी स्वभाव से उन सम हूँ, मुझमें न निश्चय लघुता है॥
प्रभु से हो एकाकार मेरा, मैं ऐसी भक्ति रचाता हूँ।
केवल ज्ञानाग्नि में अपना, मैं पुण्य समग्र चढ़ाता हूँ॥5॥

ॐ ह्रीं जिनप्रतिमोऽपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल पाठ

(चौपाई)

वृषभ सुमंगल करे हमारा, अजित सुमंगल करे हमारा।
संभव स्वामी मंगलकारी, अभिनंदन हैं मंगलकारी॥1॥
सुमतिनाथ हैं मंगलकारी, पद्मप्रभु हैं मंगलकारी।
श्री सुपार्श्व जिन मंगलकारी, चंद्रप्रभु हैं मंगलकारी॥2॥
पुष्पदंत हैं मंगलकारी, शीतल स्वामी मंगलकारी।
श्री श्रेयांस जिन मंगलकारी, वासुपूज्य हैं मंगलकारी॥3॥
विमलनाथ हैं मंगलकारी, श्री अनंत जिन मंगलकारी।
धर्मनाथ हैं मंगलकारी, शांतिनाथ हैं मंगलकारी॥4॥
कुंथुनाथ हैं मंगलकारी, अरहनाथ हैं मंगलकारी।
मल्लिनाथ हैं मंगलकारी, मुनिसुव्रत हैं मंगलकारी॥5॥
नमि जिनवर हैं मंगलकारी, नेमीनाथ हैं मंगलकारी।
पार्श्वनाथ हैं मंगलकारी, वीर जिनेश्वर मंगलकारी॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल विधान

(यहाँ प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिए।)

नित्य अचल क्षायिक ज्ञानधारी, विशुद्ध मनःपर्यय ज्ञानधारी।
देशावधि आदि युत ऋषि मुनिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥1॥
महाकोष्ठ बीजबुद्धि पदानुसारि, संभिन्न संश्रोतृ स्वयं बुद्धिधारी।
प्रत्येकबुद्ध-बोधिबुद्ध ऋषिवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥2॥
अभिन्नदशपूर्व-चतुर्दश पूर्वी, दिव्य मतिज्ञान महाबलधारी।
अष्टांगनिमित्त ज्ञाता ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥3॥
स्पर्श-चक्षु-कर्ण-घ्राण-रसना, आदि प्रबल इन्द्रिय के धारी।
महाशक्तिवन्त जिनमुनि-यति-ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥4॥
फल-तन्तु-नीर-जंघा-श्रेणी, पुष्प-बीज-अंकुर-रवि-अग्नि-गामी।
नभ-जल-वायुचारण ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥5॥
अणु-महालघु-गुरुऋद्धिधारी, सकामरूपित्व-वशित्वधारी।
वर्द्धमान बल के धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥6॥
मन औ वचनबल-कायबल ऋद्धि, प्राकाम्य-अप्रतिघात गुणधारी।
विक्रिया-क्रियाऋद्धि धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥7॥
उग्रोग्रतप-दीप्त-तप-तप्ततपसी, अवस्थित-उग्रतप-महातपऋद्धि।
तपो-लब्धि आदि से युक्त ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥8॥
आमर्ष-सर्वौषध ऋद्धिधारी, आशीर्विष-दृष्टिविष बल धारी।
सखिल्ल-विडजल्ल-मल्लौषधियुक्त, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥9॥
क्षीरास्रवी-घृतस्रावी मुनीश्वर, अमृत-मधु-महारस के धारी।
अक्षीणआलय-महानस आदि, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥10॥

इति परमर्षि स्वस्ति मंगल विधानं

(9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

श्री नित्यमह पूजा

रचियित्री : ग. आर्यिका राजश्री माताजी

शंभु छन्द *(तर्ज- हे वीर तुम्हारे...)*

अरिहंत, सिद्ध, सूरी, पाठक, साधु और जिनवर चौबीसों।
गणधर जिन पंच बालयतिवर, जिन आगम गुरु प्रभुवर बीसों॥
माँ जिनवाणी, निर्वाणभूमि, रत्नत्रय, दशलक्षण प्यारा।
नंदीश्वर पंचमेरू जिनवर, जिनचैत्य चैत्यालय मनहारा॥
जिनधर्म जिनागम बाहुबली, सोलहकारण पूजन करता।
इनका आह्वानन करके मैं, श्री मोक्ष महल का सुख वरता॥1॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नरेन्द्र छन्द *(तर्ज : माइन-माइन...)*

धीर वीर गंभीर प्रभु की अर्चा मैं नित करता हूँ।
निर्मल जल की त्रय धारा दे जन्म-जरा-मृत हरता हूँ॥
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा॥
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा॥1॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन चरण चढ़ाता शीतलता मुझको देना।
भव का बन्धन हरने वाले भव की ज्वाला हर लेना॥ देव शास्त्र..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षत लाया अक्षयपद पाने हेतू।
अक्षयपद को देने वाली पूजन है सबका सेतू॥ देव शास्त्र..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जल भूमिज बहु पुष्प चढ़ाऊँ श्रद्धा से जिन गुण गाऊँ।
कामबाण को वश में करके मन ही मन मैं हर्षाऊँ ॥
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा॥
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा॥4॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुआ पकौडी रबड़ी घेवर आदिक व्यंजन मैं लाया।
क्षुधावेदनी के भेदन को प्रभु सन्मुख दौड़ा आया॥ देव शास्त्र..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीपों की थाली ले आरती प्रभु की गाऊँगा।
मोहकर्म का नाश मेरा हो सम्यक्भाव बनाऊँगा॥ देव शास्त्र..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप धूपायन में खेकर मैं अष्टकर्म का हनन करूँ।
प्रभु प्रतिमा के दर्शन करके निज स्वभाव का वरण करूँ॥ देव शास्त्र..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे मीठे फल से अर्चा मनवांछित फल देती है।
प्रभु की अर्चा मेरे जीवन के संकट हर लेती है॥ देव शास्त्र..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक आठों द्रव्यों का सुन्दर थाल सजाया है।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से भक्तिभाव जगाया है॥ देव शास्त्र..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : वीतराग भगवान की, पूजा सब सुख खान।
त्रयधारा जल की करूँ, छोड़ूँ सब अभिमान॥

शांतये शांतिधारा।

दोहा- काम सृष्टि का नाश हो, पुष्पवृष्टि के साथ।
पुष्पांजलि क्षेपण करूँ, पूर्ण विनय के साथ॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : जयमाला की माल से, गूंजे जय-जयकार।
जयमाला हम पढ़ रहे, मिलकर सब नर-नार॥

शंभु छन्द *(तर्ज : ये देश है वीर...)*

श्री वीतराग सर्वज्ञ हितैषी अरिहंतों को नमन करूँ।
श्री सिद्ध सूरी पाठक साधु जिनचैत्य जिनालय नमन करूँ॥
सब द्वीपों के प्रभुवर न्यारे सीमंधर आदिक को ध्याऊँ।
श्री पंचमेरू अरू नंदीश्वर के चैत्यालय के गुण गाऊँ॥1॥

दशलक्षणधर्म हृदय धारूँ सोलहकारण भावन भाऊँ।
रत्नत्रय धारण करने के सम्यक् साधन को अपनाऊँ॥
चौदह सौ बावन गणधर जी सब ऋद्धि-सिद्धि देने वाले।
प्रभु के पाँचों कल्याणक भी सबका संकट हरने वाले॥2॥

जिनवर के सब जन्मस्थल को करता हूँ मैं शत-शत वंदन।
श्रावस्ती कौशाम्बी काशी अयोध्या चंद्रपुरी वंदन॥
काकंदी राजगृही मिथिला चंपापुर कुंडलपुर वंदन।
वैशाली सिंहपुरी कम्पिल हस्तिनापुर आदि वंदन॥3॥

अतिशय औ सिद्धक्षेत्र जी का सुमरण सब पाप तिमिर हरता।
मैं चंपा पावा ऊर्जयंत सम्मेदशिखर वंदन करता॥

पावा द्रोणा सोना तुंगी कैलाश चूलगिरी ध्याऊँगा।
रेसंदी मुक्ता उदयरत्न कुंथलगिरी को मैं जाऊँगा।।4।।

विपुलाचल पोदनपुर मथुरा तारंगा गजपंथा वंदन।
श्री सिद्धवरकूट कमलदहजी गुणावा शत्रुंजय वंदन।।
अहिक्षेत्र अणिंदा णमोकार जटवाडा पैठण चंवलेश्वर।
कचनेर चाँदखेड़ी पाटन जिन्तूर तिजारा गोमटेश्वर।।5।।

कुन्थुगिरी नवग्रह धर्मतीर्थ मांडल केशरिया को वंदन।
श्री महावीरजी पदमपुरा ऋषितीर्थ आदि को भी वंदन।।
जय ऊर्ध्व मध्य और अधोलोक के सब चैत्यालय मनहारी।
निर्वाण सिधारे पूज्य पुरुष की पूजा सब संकटहारी।।6।।

श्री राम हनु सुग्रीव नील महानील कुम्भ शम्बु ज्ञानी।
लवमदनांकुश सागर वरदत्त श्री बाहुबली स्वामी ध्यानी।
गौतम जम्बू सुधर्मा श्री त्रय पांडवसुत अनिरूद्ध नमन।
इस ढाईद्वीप से मोक्ष पधारे उन गुरुओं को है वंदन।।7।।

श्री पँचबालयति को ध्यायें नवदेवों की शरणा पायें।
सातिशय पुण्य कमाने को मंगलमय पूजा हम गायें।।
जिनगुण के अनुरागी बनकर संसार भ्रमण का नाश करें।
शिवपुर के राजतिलक हेतु यह 'राज' प्रभुगुण आश करे।।8।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : श्री जिन के आशीष से, प्रगटाऊँ निज ज्ञान।
पूजन-कीर्तन-भजन से 'राज' वरे शिव थान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

श्री तीस चौबीसी विधान समुच्चय पूजन

स्थापना (नरेन्द्र छंद)

ढाई द्वीप में पाँच भरत वा, ऐरावत भी पाँच कहे।
उनके कृतयुग[1] में तीर्थंकर, सर्वश्रेष्ठ चौबीस रहे।।
तीस चौबीसी तीन काल की, उनका हम नित ध्यान करें।
बीस सात सौ तीर्थंकर का, पुष्प लिए आह्वान करें।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्त शतक विंशोत्तर तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री.....अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री.....अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक (नरेन्द्र छंद)

पत्र पुष्प मणिमाला शोभित, जल के कलश सजाये हैं।
तीन धार दे प्रभु के पद में, तीन रोग विनशाये हैं।।
त्रिंशत[2] चौबीसी विधान ये, सर्व सौख्य दातारी है।
श्री जिनवर की मंगल अर्चा, सबको मंगलकारी है।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्त शतक विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री तीर्थंकर के पदाग्र में, सुरभित चंदन अर्पित है।
भव क्रन्दन हरते वे पद जो, सुर नर मुनि से अर्चित हैं।। त्रिंशत..।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ..... संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुरंगी मुक्ता अक्षत ले, अक्षत पुञ्ज चढ़ायें हम।
जिनवर जैसा अक्षय वैभव, जिन जैसे बन पायें हम।। त्रिंशत..।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री .....अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

ढाई द्वीप के सर्व वर्ण की, सुमनावली सजायी है।
सर्वश्रेष्ठ सुन्दर जिनवर की, हमने भक्ति रचायी है।। त्रिंशत..।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ..... कामबाणविनाशनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

1. दुखमा सुखमा काल, 2. तीस।

लाये हम नैवेद्य निराले, नये स्वाद नवरंगों के।
प्रभु को अर्पित आज भक्ति से, भर उत्साह तरंगों से॥
त्रिंशत चौबीसी विधान ये, सर्व सौख्य दातारी है।
श्री जिनवर की मंगल अर्चा, सबको मंगलकारी है॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ..... क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योत जलायी जो जिनवर ने, वैसी ही हम भी पायें।
इसी भाव से श्री जिन सम्मुख, लक्ष-लक्ष[1] दीपक लाये॥ त्रिंशत..॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ..... मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

रूप अनूप आपका भगवन्, त्रिभुवन भूप बनाता है।
इस कारण यह भक्तवर्ग[2] भी, तुमको धूप चढ़ाता है॥ त्रिंशत..॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ..... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवफल दाता प्रभु भक्तों का, जीवन सफल बनाते हैं।
इस कारण हम भक्त आपको, फल की थाल चढ़ाते हैं॥ त्रिंशत..॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ..... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ चढ़ायें जो जिन तुमको, वे अनर्घ पद पाते हैं।
हम भी आज महापूजा में, उत्तम अर्घ चढ़ाते हैं॥ त्रिंशत..॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ..... अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छंद)

सुख-शांति की शुभ कामना से, शांतिधारा हम करें।
प्रभु रत्नत्रय की भावना से, दिव्य पुष्पाञ्जलि करें॥
यह तीस चौबीसी महामह[3], हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।
(9, 27 या 108 बार जाप करें)

1. लाख-लाख, 2. भक्तों का समूह, 3. महापूजा।

जयमाला

दोहा- तीर्थंकर सर्वज्ञ जिन, होते हैं त्रयकाल।
उनकी जयमाला पढ़ें, पाने प्रभु गुणमाल॥

(चौपाई)

जय-जय सब तीर्थेश हमारे, सात शतक बीसोत्तर न्यारे।
उनकी जयमाला हम गायें, त्रय योगों से उनको ध्यायें॥1॥
मध्यलोक में द्वीप अढ़ाई, यही धरम का दीपक भाई।
पैंतालिस लख योजन मानो, इसे धर्म का सूरज जानो॥2॥
जम्बूद्वीप बीच में आये, तीन लोक का केन्द्र कहाये।
रचना से लगता यह थाली, इसकी शान जगत में आली॥3॥
इसको लवणोदधि ने घेरा, जैसे हो खाई का पहरा।
आगे भी द्वीपोदधि[1] जानो, सबको दूनी चूड़ी मानो॥4॥
जम्बूद्वीप के द्वार कहाये, भरतैरावत क्षेत्र बताये।
यहाँ क्षेत्र ये इक-इक होवे, धर्मबीज भव्यों में बोवे॥5॥
आगे खण्ड धातकी आया, यह ही दूजा द्वीप कहाया।
आठ लाख योजन विस्तारा, इसमें चमके धर्म सितारा॥6॥
तीजा पुष्कर द्वीप कहाये, सोलह लख योजन श्रुत गाये।
मध्य मानुषोत्तर गिरि आये, इससे पुष्कर अर्द्ध कहाये॥7॥
इससे आगे मनुज[2] न जाये, सुरगण ही आगे जा पायें।
द्वय द्वीपो में भारत[3] दो-दो, ऐरावत भी उसमें दो-दो॥8॥
पाँच भरत है ढ़ाई द्वीप में, ऐरावत भी उतने ही हैं।
उसमें जब-जब कृतयुग[4] आये, तीर्थंकर के दर्श कराये॥9॥
कृतयुग में तीर्थंकर आये, वे भी कुल चौबीस बताये।
ढाई द्वीप में सब चौबीसी, एक काल में दस चौबीसी॥10॥

1. द्वीपसागर, 2. मनुष्य, 3. भरत क्षेत्र, 4. कर्मभूमि में दुःखमा सुखमा काल।

तीन काल की दस चौबीसी, होती कुल त्रिंशत चौबीसी।
बीस सात सौ जिनवर होते, भव्यों में धर्मांकुर बोते॥11॥
ये त्रिंशत[1] चौबीसी पूजा, है सब तीर्थंकर की पूजा।
यह विधान जो भव्य रचाये, सर्व सौख्य बिन माँगे पाये॥12॥
यह विधान है सबसे आला, निर्धन को धन देने वाला।
वंशहीन का वंश बढ़ाये, पुत्रहीन को पुत्र दिलाये॥13॥
विद्यार्थी को विद्या देता, या बनवाये ज्योतिर्वेत्ता।
कर्जदार का कर्ज छुड़ाये, डूबे धन को पुनः दिलाये॥14॥
रोगी के सब रोग भगावे, योगी को वृषयोग[2] दिलावे।
भाग्यहीन का भाग्य जगाये, उत्तम यश जग में दिलवाये॥15॥
नवग्रह का दुर्योग भगावे, सब ग्रह को अनुकूल बनावे।
सर्वविघ्न को दूर भगावे, सर्वकार्य को सिद्ध करावे॥16॥
वैरागी के विघ्न भगायें, सर्वक्षेत्र में विजय दिलाये।
सच्चे मन से जो भी ध्याये, उसको आतम सिद्धि दिलाये॥17॥
हम भी सब जिनवर को ध्यायें, महाध्वजा युत अर्घ चढ़ायें।
विधिवत इस व्रत को अपनायें, व्रत का अतिशय फल हम पायें॥18॥
तीर्थंकर सम व्रत हम पायें, अपने सारे कर्म नशायें।
'गुप्तिनंदी' भी भक्ति रचाये, उत्तम जिनगुण सम्पत पाये॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ढ़ाई द्वीपवर्ती दश भरतैरावत कर्मभूमिस्थ भूत-वर्तमान-भविष्यकालीन त्रिंशत् चतुर्विंशति सम्बन्धी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य तीनों काल में, श्री तीस चौबीसी भजे।
वो भव भ्रमण को नाशकर, सर्वोच्च शाश्वत सुख भजे॥
अति श्रेष्ठ उत्तम पुण्य पा, तीर्थेश पद भागी बने।
फिर अंत में त्रय 'गुप्ति' वर, निज आत्म गुण रागी बने॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

1. तीस, 2. धर्म का संयोग।

(1) जम्बूद्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ भूतकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(नरेन्द्र छंद)

तीर्थंकर 'निर्वाण' नाथ ने, सच्चा मार्ग दिखाया था।
सर्व श्रेष्ठ निर्वाण धाम पा, भव का भ्रमण मिटाया था॥
जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र की, गत चौबीसी हम पूजें।
अर्चा कर हम शिव सुख पायें, अब ना कर्मों से जूझें॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'निर्वाण' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर 'सागर' जिनवर ने, भव से पार लगाया है।
सागर से सुखसागर पाने, हमने पाठ रचाया है॥ जम्बूद्वीप..॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सागर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महासाधु' तीर्थंकर जिनने, महासाधना को साधा।
महासाधना उन सम करने, हमने प्रभु को आराधा॥ जम्बूद्वीप..॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'महासाधु' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'विमलप्रभ' विमल बनायें, यही भावना भायी है।
विमल भाव से हम भक्तों ने, अर्चा भव्य रचायी है॥ जम्बूद्वीप..॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विमलप्रभ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री का वैरी[1] नाश नाथ ने, अंतरश्री[2] को प्रगटाया।
श्रीवंशी 'श्रीधर' प्रभुवर ने, मुक्तिराजश्री को पाया॥ जम्बूद्वीप..॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'श्रीधर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'सुदत्त' ने दत्तविधि[3] का, अतिशय जग में फैलाया।
श्रावक वा मुनि के सुयोग को, शिवपुर का पथ बतलाया॥ जम्बूद्वीप..॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुदत्त' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. श्री का वैरी अंतराय कर्म, 2. अनंत चतुष्टय रूपी लक्ष्मी, 3. दान विधि।

देव 'अमलप्रभ' अमलप्रभा से, सबका मिथ्या मल हरते।
ज्ञान सुजल से भव्य जनों के, गाढ़ कर्म कलि मल हरते॥
जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र की, गत चौबीसी हम पूजें।
अर्चाकर हम शिव सुख पायें, अब ना कर्मों से जूझें॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अमलप्रभ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'उद्धर' ने उद्धत रिपु को, क्षणभर में ही क्षीण किया।
जग उद्धारक उद्धर प्रभु के, पद युग में तल्लीन जिया[1] ॥ जम्बूद्वीप.. ॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'उद्धर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगारक आदिक नवग्रह भी, 'अंगिर' प्रभु के सेवक हैं।
सबको भव से तारा इस हित, भगवन् सच्चे खेवक हैं॥ जम्बूद्वीप.. ॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अंगिर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सन्मति' प्रभु ने दुर्मतियों को, दुर्मति हर सन्मति दे दी।
ऐसे सन्मति प्रभु की अर्चा, हम सबने सन्मति से की॥ जम्बूद्वीप.. ॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सन्मति' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सिंधु' नाथ के चरण सिंधु में, भव्य नदी बन मिल जायें।
उसी सिंधु में सब भव्यों के, पाप कर्म मल धुल जायें॥ जम्बूद्वीप.. ॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सिंधु' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कुसुमांजलि' पर सुर बालायें, कुसुमांजलि नित करती हैं।
पुष्पांजलि से पुण्यांजलि भर, मुक्ति मंजरी वरती हैं॥ जम्बूद्वीप.. ॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'कुसुमांजलि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शिवगण' ने सुरगण-मुनिगण को, शिवपुर का गढ़[2] बतलाया।
मनगढ़ंत मिथ्यातम हर कर, सुदृढ़ जिनमत बतलाया॥ जम्बूद्वीप.. ॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'शिवगण' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. जीव, हृदय, 2. किला।

श्री 'उत्साह' नाथ की वाणी, सुनकर सब उत्साहित हैं।
यम-संयम व्रत पालन करने, सब-नर-पशु लालायित हैं॥
जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र की, गत चौबीसी हम पूजें।
अर्चाकर हम शिव सुख पायें, अब ना कर्मों से जूझें॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'उत्साह' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानी के ईश्वर 'ज्ञानेश्वर', केवलज्ञान जगाते हैं।
उत्तम केवलज्ञान जगाने, भक्त शरण में आते हैं॥ जम्बूद्वीप.. ॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ज्ञानेश्वर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्त परम क्षेत्रों को पाया, 'परमेश्वर' परमातम ने।
ऐसे परम पिता परमेश्वर, बस जाओ मम आतम में॥ जम्बूद्वीप.. ॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'परमेश्वर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विमलेश्वर' ने विमलज्ञान पा, विमल देशना फैलाई।
विमलज्ञान पाने श्रद्धा से, भक्तों की टोली आई॥ जम्बूद्वीप.. ॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विमलेश्वर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव 'यशोधर' यश के धारी, यशकीर्ति से ऊपर हैं।
सबका अपयश धोने वाले, प्रभु के चरण सरोवर हैं॥ जम्बूद्वीप.. ॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'यशोधर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णादिक षट् लेश्या हरके, परम शुक्ल लेश्या पाई।
लेश्यातीत बने क्षण भर में, बने 'कृष्णमति' शिवराई॥ जम्बूद्वीप.. ॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'कृष्णमति' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानमति' के समोशरण में, केवलज्ञानमति मिलती।
केवलज्ञानी ज्ञानमति को, लखकर हृदय कली खिलती॥ जम्बूद्वीप.. ॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ज्ञानमति' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शुद्धमति' ने हो प्रबुद्ध जब, क्रुद्ध कर्म से युद्ध किया।
निज भव आवागमन मिटाकर, कर्म पिण्ड अवरुद्ध किया॥ जम्बूद्वीप.. ॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'शुद्धमति' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भद्रवचन 'श्रीभद्र' नाथ के, चरण सुभद्र मनोहारी।
भद्रादिक[1] दुर्योग हरें नित, परम शरण मंगलकारी॥
जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र की, गत चौबीसी हम पूजें।
अर्चाकर हम शिव सुख पायें, अब ना कर्मों से जूझें॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'श्रीभद्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों से आक्रांत जगत को, 'अतिक्रांत' ने जीता है।
उनका दिया दिव्य ज्ञानामृत, भक्त पपीहा पीता है॥ जम्बूद्वीप.. ॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अतिक्रांत' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्माकुलित भव्य जीवों को, तीर्थंकर जिन शांत करें।
ऐसे 'शांत' प्रभु को हम भी, अर्घ चढ़ा अघ शांत करें॥ जम्बूद्वीप.. ॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'शांत' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जम्बूद्वीपवर्ती भरतक्षेत्रस्थ निर्वाणादि शांतपर्यंत भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छंद)

सुख-शांति की शुभ कामना से, शांतिधारा हम करें।
प्रभु रत्नत्रय की भावना से, दिव्य पुष्पाञ्जलि करें॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

1. ज्योतिष के दुर्योग।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।
(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- चौबीसी गतकाल की, अतिशयवान महान।
उनके सुंदर नाम की, गायें हम जयमाल॥

(कुसुमलता छंद)

जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में, जन्मे चौबीसों भगवान।
भूतकाल की चौबीसी को, नमते भक्त यहाँ नित आन॥
गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-मोक्ष ये, कहलाते पाँचों कल्याण।
प्रभु के पाँचों कल्याणक ही, करते भव्यों का कल्याण॥1॥

गर्भ पूर्व ही जिन जननी माँ, स्वप्नों की देखे शुभ माल।
तीन लोक की जग जननी को, झुका रहे हम अपना भाल॥
प्रभु निर्वाण करम क्षय करते, सागर हो भव सागर पार।
महासाधु मन विमल बनायें, श्रीधर के आओ नित द्वार॥2॥

प्रभु सुदत्त को चित्त बिठायें, करें अमलप्रभ जिन उद्धार।
अंगिर सन्मति सिंधु जिनेश्वर, कुसुमांजलि की जय जयकार॥
धर्म मिले उत्साह नाथ से, ज्ञानेश्वर दो केवलज्ञान।
हे परमेश्वर ! हे विमलेश्वर !, ईश यशोधर ! यश की खान॥3॥

कृष्ण ज्ञानमति शुद्ध बनाते, भद्रनाथ अतिक्रांत जिनेश।
शांत प्रभु हैं अंतिम स्वामी, इनको पूजें सर्व गणेश॥
शत् इन्द्रों से पूजे जाते, जो तीर्थंकर जिन अविकार।
कर्म काटकर शिवपद पाते, उनकी महिमा अपरम्पार॥4॥

मध्य लोक का कण-कण पावन, प्रभु की पग रज से हर बार।
धरती भी पूजित हो जाती, पूज्य पुरुष का पा अवतार॥
भूतकाल की चौबीसी को, भक्ति सहित पूजें त्रय बार।
तीन 'गुप्तिधर' शिव सुख पाने, पाठ रचाते हम दुःखहार॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जम्बूद्वीपवर्ती भरतक्षेत्रस्थ श्री निर्वाणादि शांतपर्यंत भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य तीनों काल में, श्री तीस चौबीसी भजे।
वो भव भ्रमण को नाशकर, सर्वोच्च शाश्वत सुख भजे॥
अति श्रेष्ठ उत्तम पुण्य पा, तीर्थेश पद भागी बने।
फिर अंत में त्रय 'गुप्ति' वर, निज आत्म गुण रागी बने॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(2) जम्बूद्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(गीता छंद)

इस द्वीप जंबू में भरत, जिसमें अयोध्या श्रेष्ठ है।
जिसके 'ऋषभ' राजा सभी, तीर्थंकरों में ज्येष्ठ हैं॥
जिनवर वृषभ से वीर तक, चौबीस प्रभु की वंदना।
मस्तक झुका हम कर रहे, अभिवंदना-अभिवंदना॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ऋषभदेव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसको कठिन हो जीतना, ये ही अजित का अर्थ है।
जिनवर 'अजित' के सामने, वसुकर्म की गति व्यर्थ है॥ जिनवर..॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अजितनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'संभव' प्रभो समभाव से, भव दुःख व्यथा सबकी सुनें।
संभव प्रभो सम भव हरें, संभव प्रभो की जो सुने॥
जिनवर वृषभ से वीर तक, चौबीस प्रभु की वंदना।
मस्तक झुका हम कर रहे, अभिवंदना-अभिवंदना॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'संभवनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदन वनों की गंध से, हैं पूज्य 'अभिनंदन' प्रभो।
अभिवंदना के गीत से, छूटे करम बंधन विभो॥ जिनवर..॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अभिनंदननाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभुवर 'सुमति' को गर्भ से, मतिश्रुत अवधि त्रय ज्ञान थे।
कैवल्यज्ञान प्रकाश से, प्रभु आप ही श्रीमान् थे॥ जिनवर..॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुमतिनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणि पद्मराग समान ही, प्रभु 'पद्म' का शुभ वर्ण है।
जिनवर जहाँ चलते वहाँ, खिलते सुपद्म सुवर्ण हैं॥ जिनवर..॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पद्मप्रभ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपसर्गजेता नाथ हैं, जिनवर 'सुपारसनाथजी'।
मुनि पर नहीं उपसर्ग हो, विनती सुनो जिननाथजी॥ जिनवर..॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुपार्श्वनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'चंद्र' चंद्र समान हैं, कैसे भला हम ये कहें।
प्रभु चंद्र तो अकलंक पर, चंदा कलंकित सा रहे॥ जिनवर..॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'चंद्रप्रभ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रवि चंद्र से भी तेज थी, जिन 'पुष्प' की दंतावली।
ऐसे 'सुविधि'[1] को विधि सहित, अर्पण करें पुष्पाञ्जलि॥ जिनवर..॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुविधिनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शीतलप्रभो' के चरण तल, वात्सल्य जल से शीत हैं।
देते शरण प्रभुवर उन्हें, जो पाप से भयभीत हैं॥ जिनवर..॥10॥

1. पुष्पदंतनाथ

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'शीतलनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रेयांस' प्रभुवरजी हमें, निज श्रेय का इक अंश दो।
तीर्थंकरों का वंश जो, ऐसा अटल श्रीवंश दो॥
जिनवर वृषभ से वीर तक, चौबीस प्रभु की वंदना।
मस्तक झुका हम कर रहे, अभिवंदना-अभिवंदना॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'श्रेयांसनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'वासुपूज्य' जिनेश का, सहवास जिन-जिन को मिला।
उनके लिए शिववास हित, शिवलोक का द्वारा खुला॥ जिनवर..॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'वासुपूज्य' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'विमल' की देह से, मल-मूत्र स्वेद नहीं बहें।
प्रभु श्रेष्ठ शुक्ल सुध्यान से, वसु कर्म कलिमल को दहें॥ जिनवर..॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विमलनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस ज्ञान का ना अंत हो, वह ज्ञान केवलज्ञान है।
ऐसे अनंत सुज्ञान से, प्रभुवर 'अनंत' महान हैं॥ जिनवर..॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अनंतनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिधर्म पंचमकाल तक, होगा कहें श्री 'धर्म जिन'।
मुनि भक्ति से मुनि भक्त के, सुख से कटेंगें रात-दिन॥ जिनवर..॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'धर्मनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'शांतिनाथ' पुराण में, प्रभु शांति की सुन्दर कथा।
जिनके समय से आज तक, वृष व्युच्छित्ति[1] न हुई कदा॥जिनवर..॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'शांतिनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'कुंथु' तप का कुंत[2] ले, संसार बीज विदारते।
ले साधना का बाहुबल, शठ अष्ट कर्म पछाड़ते॥ जिनवर..॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'कुंथुनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. धर्म तीर्थ की परम्परा का टूटना, 2. भाला।

किस पुण्य से त्रयपद वरा, 'अरनाथ' प्रभु समझाइये।
पुण्यानुबंधी पुण्य की, क्या है विधि बतलाइये॥
जिनवर वृषभ से वीर तक, चौबीस प्रभु की वंदना।
मस्तक झुका हम कर रहे, अभिवंदना-अभिवंदना॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अरहनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'मल्लि' प्रभु से युद्ध कर, वसु कर्म मल्ल परास्त हैं।
इस हेतु भगवन आपका, यह मल्लि सार्थक नाम है॥ जिनवर..॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मल्लिनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिनाथ 'सुव्रतनाथ' से, व्रत की नदी नित बह रही।
'संयम धरो-संयम धरो', मानो हमें यह कह रही॥ जिनवर..॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मुनिसुव्रतनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नमिनाथ' को करके नमन, मन में जगे सद्भावना।
जिस भावना से पाप हो, मिट जाय वो दुर्भावना॥ जिनवर..॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'नमिनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छलने चला हरि आपको, कहीं 'नेमि' राजा ना बनें।
पर आप उस छल से परे, त्रय लोक के राजा बनें॥ जिनवर..॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'नेमिनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुनकर अयोध्या की दशा, वैराग्य 'पारस' को हुआ।
पा बालयति पारस प्रभो, गौरव बनारस को हुआ॥ जिनवर..॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पारसनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे वर्द्धमान ! महान् तुम, गुणवान करुणावान हो।
यशवान महिमावान तुम, हर भक्त के भगवान हो॥ जिनवर..॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'वर्द्धमान' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥

यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जम्बूद्वीपवर्ती भरतक्षेत्रस्थ श्री ऋषभदेवादि वर्द्धमानपर्यंत वर्तमानकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छंद)

सुख-शांति की शुभ कामना से, शांतिधारा हम करें।
प्रभु रत्नत्रय की भावना से, दिव्य पुष्पाञ्जलि करें॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।
(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- **आदिनाथ से वीर तक, चौबीसों भगवान।**
उनकी हम जयमाल पढ़, पायें मोक्ष महान॥

(अडिल्ल छंद)

भरत क्षेत्र के वर्तमान चौबीस जिन।
उनकी जयमाला पढ़ते हम रात-दिन॥
वृषभ धर्म बतलाया वृषभ जिनेश ने।
कर्म विजय का सूत्र दिया अजितेश ने॥1॥
संभव जिन ने भव का भ्रमण मिटा दिया।
अभिनन्दन जिनवर ने मोह हटा दिया॥
सुमतिनाथ ने मिथ्या मति को हर लिया।
पद्मनाथ ने चित्त पद्म निर्मल किया॥2॥
श्री सुपार्श्व का सदा हृदय में वास हो।
चन्द्रनाथ के चरणों में मम वास हो॥

पुष्पदंत जिन अंत करें मम पाप का।
श्री शीतल जिन नाश करें संताप का॥3॥
श्री श्रेयांस जिनेश्वर शाश्वत श्रेय दें।
वासुपूज्य कर्मों से पूर्ण अजेय हैं॥
विमल जिनेश्वर विमल करें चारित्र को।
श्री अनंत जिन दें अनंत गुण इत्र को॥4॥
धर्म तीर्थ के नायक धर्म जिनेश हैं।
शांति प्रदाता शांतिनाथ परमेश हैं॥
कुंथु जिनेश्वर हम सबके प्रतिपाल हैं।
अरहनाथ को पूजें हम करताल ले॥5॥
कर्म मल्ल भी हारे मल्लि जिनेश से।
व्रत साधें हम मुनिसुव्रत तीर्थेश से॥
नमि जिनवर को नमें सदा सौ इन्द्र गण।
राजुल को तज नेमि हुए आतम मगन॥6॥
पारस के गुणरस मम आतम में बहे।
वीर सहित चौबीसों जिन मम उर रहें॥
अर्घ माल ले करते हम आराधना।
तीन 'गुप्ति' युत सिद्ध होय मम साधना॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जम्बूद्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ श्री ऋषभदेवादि वर्द्धमानपर्यंत वर्तमानकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य तीनों काल में, श्री तीस चौबीसी भजे।
वो भव भ्रमण को नाशकर, सर्वोच्च शाश्वत सुख भजे॥
अति श्रेष्ठ उत्तम पुण्य पा, तीर्थेश पद भागी बने।
फिर अंत में त्रय 'गुप्ति' वर, निज आत्म गुण रागी बने॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(3) जम्बूद्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ भविष्यत्कालीन 24 तीर्थंकर पूजा

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(शेर छंद)

श्रेणिक महान राज 'महापद्म' बनेंगे।
जिन चरण सरोवर में भव्य पद्म खिलेंगे॥
यह भरतक्षेत्र फिर से धर्मक्षेत्र बनेगा।
तीर्थंकरों का जब यहाँ सान्निध्य मिलेगा॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'महापद्म' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुरदेव' को सुर और असुर आदि भजेंगे।
नाना करोड़ वाद्य एक सुर में बजेंगे॥ यह भरत..॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुरदेव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव 'सुपारस' का ज्ञान रस मधुर अहा।
पी-पी के जिसे प्राणियों का पाप धुल रहा॥ यह भरत..॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुपार्श्व' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'स्वयंप्रभो' स्वयंभू वेष धरेंगे।
पर-क्लेश[1] संग वे स्वयं के क्लेश हरेंगे।॥ यह भरत..॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'स्वयंप्रभ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वात्मभूत' सर्व आत्मभूत[2] हितैषी।
वे आत्मद्रव्य आदि छहों द्रव्य गवेषी॥ यह भरत..॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सर्वात्मभूत' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव 'देवपुत्र' के सुपुत्र हम बनें।
प्रभु देवपुत्र सम परम पिता मिले हमें॥ यह भरत..॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'देवपुत्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. दूसरों के क्लेश, 2. आत्म तत्त्व।

'कुलपुत्र' नाथ क्षात्रकुल के दीप बनेंगे।
उस उच्चकुल में सबके आत्म दीप जलेंगे॥
यह भरतक्षेत्र फिर से धर्मक्षेत्र बनेगा।
तीर्थंकरों का जब यहाँ सान्निध्य मिलेगा॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'कुलपुत्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकादि[1] अष्ट द्रव्य से भजें 'उदंक' को।
हम झूम-झूम नाचते बजा मृदंग को॥ यह भरत..॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'उदंक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रौष्ठिल' प्रभु के पृष्ठ जो भी भव्य चलेंगे।
प्रौष्ठिल प्रभु के संग कर्मकीच दलेंगे॥ यह भरत..॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रोष्ठिल' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जयकीर्ति' कर्मजय से कीर्तिवान बनेंगे।
यशकीर्ति कर्म हरके भी यशवान बनेंगे॥ यह भरत..॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'जयकीर्ति' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मुनिसुव्रतेश' मुनिव्रतों को सिद्ध करेंगे।
साधक से साध्य बनके सिद्ध वेष धरेंगे।॥ यह भरत..॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मुनिसुव्रतनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरनाशी 'अर' प्रभु के कर सुधर्म अर[2] रहे।
जिसकी धुरी की छाँव में सब कर्म हर रहे॥ यह भरत..॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अर' (अमम) जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निष्पाप हृदय से प्रभु 'निष्पाप' को भजो।
पापानुबंधी पुण्य छोड़ पाप को तजो॥ यह भरत..॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'निष्पाप' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. जल आदि, 2. चक्र।

पच्चीस कषायों के 'निष्कषाय' विजेता।
सर्वज्ञ वीतरागी मोक्षमार्ग के नेता।।
यह भरतक्षेत्र फिर से धर्मक्षेत्र बनेगा।
तीर्थंकरों का जब यहाँ सान्निध्य मिलेगा।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'निष्कषाय' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीमान् विपुल को विपुलमति सदा नमें।
हे नाथ ! विपुल विपुलमति ज्ञान दो हमें।। यह भरत..।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विपुल' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निर्मल' प्रभु के मुख से जो निर्मल नदी बहे।
वो नय प्रमाण द्वादशांग भंगमय रहे।। यह भरत..।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'निर्मल' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय गुप्तिमय चरित्र-चित्र 'चित्रगुप्त' का।
जो पाठ कहे मन वचन व काय गुप्ति का।। यह भरत..।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'चित्रगुप्त' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव-भव में गुप्तिधार की समाधि साधना।
ऐसे 'समाधिगुप्त' की करें शुभार्चना।। यह भरत..।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'समाधिगुप्त' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव 'स्वयंभू' स्वयंभू वेष धरेंगे।
निज कर से पंचमुष्ठि केशलोंच करेंगे।। यह भरत..।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'स्वयंभू' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनिवर्तकेश' की निवर्तना[1] सुरम्य है।
प्रत्येक अंग-अंग शब्द के अगम्य हैं।। यह भरत..।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अनिवर्तक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. रचना।

जयवंत 'जय' प्रभु को जयरमा निहारती।
जयकार के गुंजन से श्रीचरण पखारती।।
यह भरतक्षेत्र फिर से धर्मक्षेत्र बनेगा।
तीर्थंकरों का जब यहाँ सान्निध्य मिलेगा।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'जय' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीमंत 'विमलनाथ' की विमल ध्वनि सुनो।
भवकीच में गिरने से पूर्व मोक्षपथ चुनो।। यह भरत..।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विमल' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव 'देवपाल' की सजा के पालकी।
हम राह देखते प्रभु के तीर्थकाल की।। यह भरत..।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'देवपाल' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभुवर 'अनंतवीर्य' में अनंत वीर्य है।
उनकी शुभार्चना से हम वरें सुवीर्य हैं।। यह भरत..।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अनंतवीर्य' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें, यह थाल सुन्दर सी सजी।।
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जम्बूद्वीपवर्ती भरतक्षेत्रस्थ श्री महापद्म आदि अनंतवीर्यपर्यंत भविष्यत्कालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छंद)

सुख-शांति की शुभ कामना से, शांतिधारा हम करें।
प्रभु रत्नत्रय की भावना से, दिव्य पुष्पाञ्जलि करें।।
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।
(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

सोरठा- चौबीसों भगवान, तीर्थ प्रवर्तक श्रेष्ठ हैं।
पाने पद निर्वाण, उनकी जयमाला करूँ॥

(काव्य छंद)

जम्बूद्वीप विशेष, उसमें भरत मनोहर।
आगत सब तीर्थेश, जिसमें होंगे सुखकर॥
महापद्मजिन आदि, अंतिम अनंत वीरज।
उनकी पढ़ जयमाल, हमें मिले जिन पग रज॥1॥

तीर्थंकर भगवान, जय हो सदा तुम्हारी।
आप गुणों की खान, महिमा जग में भारी॥
आगत चौबीस नाथ, निश्चय से आयेंगे।
उनकी हम सब आज, जयमाला गायेंगे॥2॥

पंचकल्याणक श्रेष्ठ, जिनके जग हितकारी।
करके कर्म विनाश, होंगे शिव अधिकारी॥
प्रभु ने विधी अनुसार, चार ध्यान बतलाये।
आर्त्त रौद्र दुर्ध्यान, दुर्गति में ले जाये॥3॥

धर्म शुक्ल शुचि ध्यान, भवदधि से तिरवाये।
सबके चार प्रकार, आगम विशद बताये॥
हिंसा मृषा व चौर्य, परिग्रह विषयानंदी।
क्रूर पाप सिरमोर, बने करम के बन्दी॥4॥

इष्ट वियोगज ध्यान, राग-द्वेष उपजाये।
वा अनिष्ट संयोग, आकुलता मचवाये॥
तन में हो बहु रोग, पीड़ा चिंतन आवे।
पाने को भव भोग, कर निदान दुःख पावे॥5॥

देव गुरु वा शास्त्र, उनकी आज्ञा माने।
धर्म ध्यान स्वीकार, दृढ़ता उर श्रद्धानें॥
शुक्ल ध्यान को धार, सर्व कर्म विनशायें।
'गुप्तिनंदी' अतिशीघ्र, मोक्ष शिखर को पाये॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जम्बूद्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ श्री महापद्मादि अनन्तवीर्यपर्यंत भविष्यत्कालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य तीनों काल में, श्री तीस चौबीसी भजे।
वो भव भ्रमण को नाशकर, सर्वोच्च शाश्वत सुख भजे॥
अति श्रेष्ठ उत्तम पुण्य पा, तीर्थेश पद भागी बने।
फिर अंत में त्रय 'गुप्ति' वर, निज आत्म गुण रागी बने॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(4) जम्बूद्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(नरेन्द्र छंद)

'पंचरुप' तीर्थंकर प्रभु हो, पंच पाप हरने वाले।
पंचकल्याणक से भूषित हो, पंचमगति देने वाले॥
ऐरावत में भूतकाल में, तीर्थंकर चौबीस हुए।
उन्हें यहाँ से अर्घ चढ़ा हम, प्रभु पद में नत शीश हुए॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पंचरुप' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'जिनधर' जिन दिव्यध्वनि से, भव्यों का कल्याण करें।
श्री जिनधर का रूप निरखने, सुरपति नयन हजार करे॥
ऐरावत में भूतकाल में, तीर्थंकर चौबीस हुए।
उन्हें यहाँ से अर्घ चढ़ा हम, प्रभु पद में नत शीश हुए॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'जिनधर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्याद्वाद नय सप्तभंग का, सम्यक् रूप बताया है।
नाथ 'सांप्रतिक' ने सब जग को, जैनागम सिखलाया है॥ ऐरावत..॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सांप्रतिक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म शैल को जर्जर करके, 'ऊर्जयंत' ऊर्जा देते।
प्रभु की ऊर्जा पाने हेतू, हम प्रभु की शरणा लेते॥ ऐरावत..॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ऊर्जयंत' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसने क्षायिक सम्यक् पाया, निश्चय क्षायिक पद पावे।
'आधि क्षायिक' तीर्थंकर ये, आधि-व्याधि सब विनशावें॥ ऐरावत..॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'आधि क्षायिक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो भजते 'अभिनंदन' प्रभु को, अभिनंदन उसका होता।
सुन्दर रूप विपुल धन मिलता, शांतिपूर्ण जीवन होता॥ ऐरावत..॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अभिनंदन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चम-चम करते रत्न बरसते, जब प्रभु वसुधा पे आते।
जो पूजें श्री 'रत्नसेन' को, वो रत्नत्रय निधि पाते॥ ऐरावत..॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'रत्नसेन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राम नाम हो हर क्षण मन में, भक्ति बिना हो काम नहीं।
'रामेश्वर' प्रभुवर को पूजो, मिल जायेंगे राम यहीं॥ ऐरावत..॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'रामेश्वर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंग-अंग हैं सुन्दर जिनके, 'अनंग उज्झित' नाम सही।
प्रभु को उपमा दे हम किसकी, प्रभु सम सुन्दर और नहीं॥ ऐरावत..॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अनंगोज्झित' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन में भक्ति तरंग उठी हो, कर में पूजा थाल सजा।
वचनों से 'विन्यास' प्रभु का, कीर्त्तन गाओ ताल बजा॥
ऐरावत में भूतकाल में, तीर्थंकर चौबीस हुए।
उन्हें यहाँ से अर्घ चढ़ा हम, प्रभु पद में नत शीश हुए॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विन्यास' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग नहीं है द्वेष नहीं है, लोभ नहीं है मान नहीं।
दोष अठारह जीत लिये हैं, प्रभु 'अरोष' के रोष नहीं॥ ऐरावत..॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अरोष' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधि विधान का ज्ञान कराया, श्री 'सुविधान' जिनेश्वर ने।
ये विधान विधि को बदलेगा, मुक्ति का सोपान बने॥ ऐरावत..॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुविधान' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'प्रदत्त' ने सब कुछ त्यागा, फिर भी दानी कहलाते।
जो इनके चरणों में आते, सुख वैभव सम्पत पाते॥ ऐरावत..॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रदत्त' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'कुमार' है नाम तुम्हारा, तन मन से सुकुमार रहे।
ऐसे तीर्थंकर कुमार से, वृद्ध अवस्था दूर रहे॥ ऐरावत..॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'कुमार' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व शैल में कर्म शैल ही, सबको नाच नचाते हैं।
'सर्वशैल' तीर्थंकर अपने, सर्व कर्म विनशाते हैं॥ ऐरावत..॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सर्वशैल' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'प्रभंजन' जन मन रंजन, परमत का खंडन करते।
भव भय भंजन पाप निकंदन, जिनमत का मंडन करते॥ ऐरावत..॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रभंजन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रबल पुण्य उदयागत हो जब, प्रभु दर्शन का भाग्य जगे।
पा 'सौभाग्य' नाथ के दर्शन, प्रभु चरणों से लगन लगे॥ ऐरावत..॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सौभाग्य' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाणी सुन 'व्रतविंदु' नाथ की, हर प्राणी व्रत को पाले।
श्रावक अणुव्रत को अपनाये, श्रमण महाव्रत को पाले॥
ऐरावत में भूतकाल में, तीर्थंकर चौबीस हुए।
उन्हें यहाँ से अर्घ चढ़ा हम, प्रभु पद में नत शीश हुए॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'व्रतविंदु' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वकार्य में सिद्धी मिलती, सब सिद्धों की अर्चा से।
नाथ 'सिद्धकर' यही बताते, सिद्ध बनोगे अर्चा से॥ ऐरावत..॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सिद्धकर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वज्ञेय के ज्ञाता दृष्टा, जिनवर केवलज्ञानी हैं।
'ज्ञानशरीर' जिनेश्वर उत्तम, त्रय जग अन्तर्यामी हैं॥ ऐरावत..॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ज्ञानशरीर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वश्रेष्ठ है सब विधान में, श्रेष्ठ कल्पद्रुम को यज लो।
पुण्यकोष को पूरा भरने, नाथ 'कल्पद्रुम' को भज लो॥ ऐरावत..॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'कल्पद्रुम' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के श्री विहार से, तीर्थ प्रवर्तन चलता है।
'तीर्थफलेश' जिनेश्वर को भज, तीर्थों का फल मिलता है॥ ऐरावत..॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'तीर्थफलेश' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिनकर तो दिन में ही रहता, रात्रि में छिप जाता है।
'दिनकर' प्रभु ऐसे दिनकर हैं, जहाँ नहीं तम आता है॥ ऐरावत..॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'दिनकर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूतकाल के अंतिम प्रभु श्री, 'वीर' नाथ की जय बोलो।
झूमो नाचो पुण्य कमाओ, अपने अंतर्पट खोलो॥ ऐरावत..॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'वीरप्रभ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें, यह थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जम्बूद्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री पंचरूपादि वीरप्रभपर्यंत भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छंद)

सुख-शांति की शुभ कामना से, शांतिधारा हम करें।
प्रभु रत्नत्रय की भावना से, दिव्य पुष्पाञ्जलि करें॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।
(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- श्री ऐरावत क्षेत्र के, चौबीसों भगवान।
जयमाला के साथ हम, करते उनका ध्यान॥

(शंभु छंद)

पांचों कल्याणक से पूजित, प्रभु सब जग का कल्याण करें।
मंगलकारी प्रभु के उत्सव, हम उनका ही गुणगान करें॥
प्रभु के गर्भागम से पहले, नगरी की रचना होती है।
तब से ही पन्द्रह महीनों तक, बहु रत्न वृष्टियाँ होती हैं॥1॥
सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से, सुर ललनायें भू पर आती।
श्री आदिक आठों कन्यायें, माँ की सेवा में लग जाती॥

अति पुण्य उदय उस नारी का, जो जिनवर की बनती माता।
त्रय जग से पूजित जगजननी, उनको भजने सुरपति आता॥2॥
धनपति रत्नों से त्रय संध्या, जिन मात-पिता को पूज रहा।
सोलह स्वप्ने माता देखे, जिनका फल सबसे श्रेष्ठ अहा॥
तीर्थोदक का जल ले धनपति, जिन मात-पिता का न्हवन करे।
धनपति पुनि धन्य-धन्य माने, उनकी रत्नों से भक्ति करें॥3॥
माता को पीड़ा ना होवे, यह भाव देवियाँ करती हैं।
सेवा में हर क्षण लगी रहे, तन-मन को हर्षित करती हैं॥
चउ देवी पंखा करती हैं, चउ देवी पहरा देती हैं।
कोई देवी शृंगार करे, कोई माला पहनाती हैं॥4॥
जिन माता को रुचिकर उत्तम, भोजन भी देवी लाती है।
जिन जननी प्रति अनुराग भरी, देवी ही उन्हें खिलाती है॥
कोमल शैया पर शयन करा, माता के पैर दबाती है।
इन्द्राणी भी अति भक्तिसहित, माता की गोद भराती है॥5॥
हम भी प्रभु के कल्याणक की, भक्ति से पूजा करते हैं।
मंगलकारी शुभ वाद्य बजा, मंगल कीर्त्तन हम करते हैं॥
प्रभु के पाँचों कल्याणक ही, सब विघ्न शोक विनशाते हैं।
त्रय 'गुप्ति' सहित जो मनन करें, वे गर्भवास ना पाते हैं॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जम्बूद्वीपवर्ती ऐरावतक्षेत्रस्थ श्री पंचरुपादि वीरप्रभपर्यंत भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य तीनों काल में, श्री तीस चौबीसी भजे।
वो भव भ्रमण को नाशकर, सर्वोच्च शाश्वत सुख भजे॥
अति श्रेष्ठ उत्तम पुण्य पा, तीर्थेश पद भागी बने।
फिर अंत में त्रय 'गुप्ति' वर, निज आत्म गुण रागी बने॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(5) जम्बूद्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(नरेन्द्र छंद)

'बालचंद्र' की सौम्य छवि का, हर्षित हो नित ध्यान करें।
बालकवत् हो जिन अर्चा कर, हम निज का उत्थान करें॥
जम्बूद्वीप के ऐरावत की, शोभा बड़ी निराली है।
वर्तमान चौबीसी पूजन, संकट हरने वाली है॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'बालचन्द्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य अलौकिक जिनवर वाणी, उसका जो रसपान करे।
'सुव्रत' प्रभु सम असिव्रत लेकर, कर्मों से संग्राम करे॥ जम्बूद्वीप.. ॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुव्रत' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि की ज्वाला में तप ज्यों, सोना कुंदन बनता है।
हृदय बसा त्यों 'अग्निसेन' को, आतम कुंदन बनता है॥ जम्बूद्वीप.. ॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अग्निसेन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदी आदिक जीव जगत में, भव वर्तन दुःख सहते हैं।
'नंदिसेन' की शरणा में आ, उनके भव दुःख मिटते हैं॥ जम्बूद्वीप.. ॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'नन्दिसेन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दाता आप अनंत दान के, प्रभु 'श्रीदत्त' कहाते हैं।
मुक्ति की नुक्ति[1] को हे जिन !, भर-भर हाथ लुटाते हैं॥ जम्बूद्वीप.. ॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'श्रीदत्त' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'व्रतधर' प्रभु ने व्रत धारण कर, मुक्ति रमा का वरण किया।
ॐकार मय दिव्य ध्वनि में, हित-मित-प्रिय उपदेश दिया॥ जम्बूद्वीप.. ॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'व्रतधर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. बूंदी।

हीनाधिक हो चन्द्र लग्न में, जग को दुःख पहुँचाता है।
नाम मात्र ही 'सोमचंद्र' का, सब दुःख दूर भगाता है॥
जम्बूद्वीप के ऐरावत की, शोभा बड़ी निराली है।
वर्तमान चौबीसी पूजन, संकट हरने वाली है॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सोमचंद्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धृतिदीर्घ' ने दीर्घ तपों से, दीर्घ धृति[1] को पाया है।
दीर्घ धृति को पाने हेतु, भक्त शरण में आया है॥ जम्बूद्वीप..॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'धृतिदीर्घ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शतायुष्य' ने नर आयु पा, निज आतम का शोध किया।
नरतन रतन अमूल्य जगत में, जन-जन को यह बोध दिया॥ जम्बूद्वीप..॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'शतायुष्य' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐरावत की पावन भू पर, प्रभु 'विवसित' ने भ्रमण किया।
जिनवर की पावन वाणी का, जिन भक्तों ने श्रवण किया॥ जम्बूद्वीप..॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विवसित' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेयस पथ पर चल 'श्रेयो' जिन, श्रेयस मार्ग बताते हैं।
करपात्री पदयात्री बनने, आत्मार्थी ललचाते हैं॥ जम्बूद्वीप..॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'श्रेयो' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विश्रुत जल की श्रुत गंगा में, गोता श्रमण लगाते हैं।
विश्रुत जल सम ज्ञानी बनने, 'विश्रुत जल' को ध्याते हैं॥ जम्बूद्वीप..॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विश्रुतजल' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह सिंह ही आतम रिपु है, जग में नाच नचाता है।
जिनवर कथित धरम का कर्ता, 'सिंहसेन' बन जाता है॥ जम्बूद्वीप..॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सिंहसेन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. धैर्य।

वसु कर्मों को शांत किया, और निज में निज को पाया है।
प्रभु 'उपशांत' नाथ ने निश्चय, निज शांति को पाया है॥
जम्बूद्वीप के ऐरावत की, शोभा बड़ी निराली है।
वर्तमान चौबीसी पूजन, संकट हरने वाली है॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'उपशांत' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनशासन की गुप्त बात को, नाथ 'गुप्तशासन' कहते।
त्रय गुप्ति ही मुक्ति मंत्र है, भव्यों को प्रतिपल कहते॥ जम्बूद्वीप..॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'गुप्तशासन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्य अहिंसामय चर्या को, निज जीवन में व्याप्त करें।
नाथ 'अनंतवीर्य' से हम सब, शक्ति अनंती प्राप्त करें॥ जम्बूद्वीप..॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अनंतवीर्य' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पार्श्व' प्रभु के पार्श्व बैठ हम, पार्श्व प्रभु का ध्यान करें।
पाँच महाव्रत समिति पाँच धर, शिवपुर को प्रस्थान करें॥ जम्बूद्वीप..॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पार्श्व' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर 'अभिधान' जहाँ हो, वहाँ सभी धन-धान्य फलें।
धान्य चढ़ायें हम भी प्रभु को, हमको भी निजथान मिले॥ जम्बूद्वीप..॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अभिधान' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मरुदेव' जिनवर की सेवा, देव सदा ही करते हैं।
प्रभु की अर्चा करके हम भी, पुण्य कोष को भरते हैं॥ जम्बूद्वीप..॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मरुदेव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनेकांत मत ही जिनमत है, 'श्रीधर' हमें बताते हैं।
श्रीधर के सम श्री पाने हम, अनेकांत अपनाते हैं॥ जम्बूद्वीप..॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'श्रीधर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शामकण्ठ' ने मधुर कण्ठ से, सुन्दर तान लगाई है।
जिनवाणी की मधुर तान सुन, भव्य राशि हर्षाई है॥ जम्बूद्वीप..॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'शामकण्ठ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'अग्निप्रभ' निज प्रभाव से, कर्म शक्ति को क्षीण करें।
अर्चाकर जिनमत युक्ति से, हम कर्मों को क्षीण करें॥
जम्बूद्वीप के ऐरावत की, शोभा बड़ी निराली है।
वर्तमान चौबीसी पूजन, संकट हरने वाली है॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अग्निप्रभ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अग्निदत्त' ने ध्यान अग्नि से, कर्म समूह नशाया है।
अग्नि कुण्ड में हवन कराना, यज्ञ कर्म बतलाया है॥ जम्बूद्वीप.. ॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अग्निदत्त' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वीरसेन' को वंदन कर हम, वीरोचित कर्त्तव्य करें।
पंचशील का पालन कर हम, मोक्ष मार्ग अभिनव्य वरें॥ जम्बूद्वीप.. ॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'वीरसेन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जम्बूद्वीपवर्ती ऐरावतक्षेत्रस्थ श्री बालचंद्रादि वीरसेनपर्यंत वर्तमानकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छंद)

सुख-शांति की शुभ कामना से, शांतिधारा हम करें।
प्रभु रत्नत्रय की भावना से, दिव्य पुष्पाञ्जलि करें॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।
(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- **उत्तम जम्बूद्वीप में, ऐरावत इक देश।**
वर्तमान चौबीस जिन, देय धर्म संदेश॥

(गीता छंद)

जय-जय सभी तीर्थेश की, जय जम्बुद्वीप विशेष की।
जय क्षेत्र ऐरावत नगर, उसके सभी तीर्थेश की॥
हम वर्तमान सुकाल के, चौबीस तीर्थंकर भजें।
उनके महाचारित्र मय, श्री पञ्चकल्याणक जजें॥1॥
श्री गर्भकल्याणक प्रथम, श्री आद्य कल्याणक कहा।
जिसमें अखिल सुर लोक मिल, जिन मात-पितु पूजे अहा॥
धनराज पन्द्रह माह तक, बहु रत्न की वर्षा करे।
जिन जन्म नगरी का नवल[1], निर्माण सुर हर्षा करें॥2॥
प्रभु के जनम कल्याण में, तीनों जगत में हर्ष हो।
कुछ क्षण नरक में शांति हो, भूलोक में उत्कर्ष हो॥
सौधर्म इन्द्र जिनेन्द्र का, करते महाअभिषेक जब।
प्रभु का प्रथम श्रृंगार कर, होता शची को हर्ष तब॥3॥
वैराग्य जब हो नाथ को, वे तत्त्व का चिन्तन करें।
तब श्रेष्ठ लौकान्तिक दिविज, वैराग्य अनुमोदन करें॥
तीर्थेश ज्यों मुनिव्रत धरें, सब ऋद्धियाँ उनको वरें।
दाता व घर को भी प्रभो, आहार ले मंगल करें॥4॥
चउ घाति कर्म विनाशकर, जिन संत ज्यों अरिहंत हों।
वह ज्ञानकल्याणक मना, सबके दुःखों का अंत हो॥

1. नया।

शत सात अठदस भाष में, खिरती प्रभु की देशना।
तीनों गति के जीव आ, पाते सुमंगल देशना॥5॥
निज शेष कर्म विनाशकर, तीर्थेश ज्यों शिवपुर बसे।
त्यों सुर मनुज अग्नीन्द्र संग, प्रभु को भजें निज अघ नशें॥
हम भी उसी कृत कार्य की, अर्चा करें नित चाव से।
श्री 'गुप्तिनंदी' सूर्य भी, उत्सव भजे नित भाव से॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जम्बूद्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री बालचन्द्रादि वीरसेनपर्यंत वर्तमानकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य तीनों काल में, श्री तीस चौबीसी भजे।
वो भव भ्रमण को नाशकर, सर्वोच्च शाश्वत सुख भजे॥
अति श्रेष्ठ उत्तम पुण्य पा, तीर्थेश पद भागी बने।
फिर अंत में त्रय 'गुप्ति' वर, निज आत्म गुण रागी बने॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(6) जम्बूद्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ भविष्यत्कालीन 24 तीर्थंकर पूजा

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(सखी छंद)

'सिद्धार्थ' सिद्ध पद पावें, तीर्थंकर प्रथम कहावे।
सिद्धार्थ शरण जो आवे, वो सब सुख सिद्धी पावे॥
ऐरावत क्षेत्र सुहाये, भावी चौबीसी ध्यायें।
वसु द्रव्य सजा हम लायें, प्रभुवर की भक्ति रचायें॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सिद्धार्थ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विमल' करम दल नाशे, सत केवलज्ञान प्रकाशे।
मुनि आर्या गणधर ध्यावें, नतमस्तक सुर हो जावें॥
ऐरावत क्षेत्र सुहाये, भावी चौबीसी ध्यायें।
वसु द्रव्य सजा हम लायें, प्रभुवर की भक्ति रचायें॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विमल' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय-जय जिनराज तुम्हारी, 'जयघोष' नाथ उपकारी।
प्रभु कर्मों पे जय पावे, हम सब जयघोष लगावे॥ ऐरावत..॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'जयघोष' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नदियों का जल भर लाये, प्रभु का अभिषेक करायें।
प्रभु 'नंदिसेन' मन भाये, हम उनकी भक्ति रचायें॥ ऐरावत..॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'नंदिसेन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव 'स्वर्गमंगल' की, वाणी जग के मंगल की।
हरने पीड़ा मंगल[1] की, जय होय स्वर्गमंगल की॥ ऐरावत..॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'स्वर्गमंगल' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतिम संहनन उपकारी, वो मोक्ष सिद्धी दातारी।
तीर्थंकर 'वज्राधारी', हम पूजा करें तिहारी॥ ऐरावत..॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'वज्राधारी' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण लाडू हम लाये, 'निर्वाण' नाथ को ध्यायें।
निर्वाण कल्याण मनाये, निर्वाण धाम को पाये॥ ऐरावत..॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'निर्वाण' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव 'धर्मध्वज' स्वामी, जिनधर्म ध्वजा के स्वामी।
जिनधर्म ध्वजा लहरायें, जो दिगदिगंत फहराये॥ ऐरावत..॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'धर्मध्वज' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'सिद्धसेन' प्रभु आये, सबको सन्मार्ग दिखायें।
प्रभु नाम सिद्धी दिलवाये, अघ नाशें सिद्ध बनायें॥ ऐरावत..॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सिद्धसेन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. मंगल ग्रह।

प्रभु 'महासेन' की सेना, उसकी महिमा क्या कहना।
नर सुर मुनियों की सेना, दर्शन कर हर्षित नैना॥
ऐरावत क्षेत्र सुहाये, भावी चौबीसी ध्यायें।
वसु द्रव्य सजा हम लायें, प्रभुवर की भक्ति रचायें॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'महासेन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिनकर दिन में ही आता, औ रात्रि में छुप जाता।
'रविमित्र' जहाँ पर जायें, वहाँ रात कभी न आये॥ ऐरावत..॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'रविमित्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'सत्यसेन' की वाणी, सर्वोत्तम जग कल्याणी।
सच बोलो रे हर प्राणी, बन जाओ केवलज्ञानी॥ ऐरावत..॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सत्यसेन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शशी को भी दाग लगा है, राहू ने उसे ग्रसा है।
पर दाग रहित जिनचंदा, जिन को पूजे रविचंदा॥ ऐरावत..॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'चंद्रनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदा से रजनी शोभे, 'महीचंद्र' प्रभु मन लोभे।
प्रभु की महिमा को जानो, प्रभु वाणी को श्रद्धानो॥ ऐरावत..॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'महीचंद्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिननाथ 'श्रुतांजन' आये, ज्ञानामृत भोज करायें।
श्रुतगंगा में नहलाते, श्रद्धांजन नयन लगाते॥ ऐरावत..॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'श्रुतांजन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवों के देव कहायें, शत इन्द्र जहाँ झुक जायें।
स्वर्गों से सुरगण आये, प्रभु 'देवसेन' को ध्यायें॥ ऐरावत..॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'देवसेन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत नियम त्याग अपनाओ, व्रत पालन कर सुख पाओ।
प्रभु 'सुव्रत' ने बतलाया, व्रतियों ने शिवसुख पाया॥ ऐरावत..॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुव्रत' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय-जय जिनेन्द्र सब बोलो, वाणी में मिश्री घोलो।
सब प्रिय वच बोलो प्राणी, कहती 'जिनेन्द्र' की वाणी॥
ऐरावत क्षेत्र सुहाये, भावी चौबीसी ध्यायें।
वसु द्रव्य सजा हम लायें, प्रभुवर की भक्ति रचायें॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'जिनेन्द्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो पार्श्व पार्श्व के आये, उसके संकट मिट जाये।
जिसका पुण्योदय आये, उसको 'सुपार्श्व' बुलवाये॥ ऐरावत..॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुपार्श्व' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव 'सुकौशल' आये, बुद्धि कौशल्य जगायें।
ले जैनधर्म की वीणा, ज्ञानामृत देय नवीना॥ ऐरावत..॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुकौशल' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु हैं अनंत गुणधारी, जग के उत्तम उपकारी।
जिनवर 'अनंत' सुखदानी, गुण गा ना पाये ज्ञानी॥ ऐरावत..॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अनंत' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम विमल नाथ को ध्यायें, निज मन को विमल बनायें।
श्री 'विमल' विमल गुणदाता, भव्यों के भाग्य विधाता॥ ऐरावत..॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विमल' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अमृत सुधा पिलायें, प्रभु 'अमृतसेन' कहाये।
हम अमृत शरणा आये, शाश्वत अमृत पद पायें॥ ऐरावत..॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अमृतसेन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अग्निदत्त' बुलावें, ध्याग्नि प्रगट करावें।
कर्मेन्धन दहन सिखावें, आतम को शुद्ध करावें॥ ऐरावत..॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अग्निदत्त' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥

यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जम्बूद्वीपवर्ती ऐरावतक्षेत्रस्थ श्री सिद्धार्थादि अग्निदत्तपर्यन्त भविष्यत्कालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छंद)

सुख-शांति की शुभ कामना से, शांतिधारा हम करें।
प्रभु रत्नत्रय की भावना से, दिव्य पुष्पाञ्जलि करें॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।
(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- श्री ऐरावत क्षेत्र के, चौबीसों भगवान।
भावि तीर्थंकर सभी, कर दें मम कल्याण॥

(चौपाई)

जय-जय श्री चौबीस जिनंदा, पूजें प्रभु को सर्व मुनींद्रा।
जय ऐरावत क्षेत्र विशाला, जय भावी चौबीस कृपाला॥1॥
उनकी हम जयमाला गायें, जयमाला की माला लायें।
प्रभु के पञ्च कल्याण मनायें, निज आतम कल्याण रचायें॥2॥
प्रभु का गर्भ कल्याणक प्यारा, जन्म कल्याणक भी मनहारा।
जब वैराग्य प्रभु को आये, वे द्वादश अनुप्रेक्षा भायें॥3॥
लौकान्तिक सुरगण तब आयें, तप अनुमोदन कर हर्षायें।
सुरगण तप अभिषेक रचायें, जिनवर का जयकार लगायें॥4॥
इन्द्र पालकी लेकर आये, उसमें प्रभुवर को बैठाये।
कुछ डग शिविका मनुज उठाये, कुछ डग विद्याधर ले जाये॥5॥

फिर नभ में सुरगण ले जायें, प्रभुवर को वन में ले आये।
नाथ शिलातल आन विराजे, सुर गन्धर्व बजाते बाजे॥6॥
सब जिनवर की करते अर्चा, त्रिभुवन में होती तप चर्चा।
पंचमुष्टि से लोंच करे वे, परमेष्ठी पद प्राप्त करें वे॥7॥
केश उखाड़े तप अनुरागे, प्रभुवर वस्त्राभूषण त्यागे।
प्रभु के केश इन्द्र तब झेले, रत्न पिटारे में वो लेले॥8॥
फिर उन केशों को ले जाये, क्षीरोदधि में क्षपण कराये।
दीक्षा ले प्रभु ध्यान लगाये, चौथा ज्ञान प्रगट हो जाये॥9॥
तत्क्षण प्रगटे सर्व ऋद्धियाँ, सेवा करती सर्व सिद्धियाँ।
प्रभुवर जब चर्या को जाये, भक्ति से श्रावक पड़गाये॥10॥
भक्ति से आहार कराये, पंचाश्चर्य वहाँ हो जाये।
रत्नवृष्टि पुष्पों की वर्षा, जय-जय घोष गंध की वर्षा॥11॥
देव दुंदुभि बजे सुहानी, भक्ति से पूजे सब प्राणी।
श्रेष्ठ दान यह ही कहलाये, तीन लोक में यश फैलाये॥12॥
प्रथम पारणा जो करवाये, निश्चय तद्भव मोक्ष उपाये।
तप कल्याणक भव्य मनाये, श्रमण तीर्थकर के गुण गाये॥13॥
क्रम से होते केवलज्ञानी, जन-जन को देत जिनवाणी।
उनके साथ कई श्रद्धानी, वर लेंगे शिवपुर की रानी॥14॥
त्रिंशत् चौबीसी हम ध्यायें, उनका भव्य विधान रचायें।
प्रभु सम तीन 'गुप्ति' अपनायें, शाश्वत मोक्ष महा सुख पायें॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जंबूद्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री सिद्धार्थादि अग्निदत्तपर्यन्त भविष्यत्कालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य तीनों काल में, श्री तीस चौबीसी भजे।
वो भव भ्रमण को नाशकर, सर्वोच्च शाश्वत सुख भजे॥
अति श्रेष्ठ उत्तम पुण्य पा, तीर्थेश पद भागी बने।
फिर अंत में त्रय 'गुप्ति' वर, निज आत्म गुण रागी बने॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(7) पूर्वधातकी खंड द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ भूतकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(अडिल्ल छंद)

श्री 'रत्नप्रभ' प्रथम जिनेश्वर अवतरे।।
धनपति पन्द्रह मास रत्न वर्षा करे।
पूर्वधातकी खंड भरत पावन धरा।
चौबीसों प्रभु ने इसको पावन करा।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'रत्नप्रभ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमितनाथ' की वाणी ये हमसे कहे।
जीव मात्र में मैत्री भाव सदा रहे।। पूर्वधातकी... ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अमितनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व असंभव संभव प्रभु संभव करे।
श्री 'संभव' जिनवर की हम पूजा करें।। पूर्वधातकी... ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सम्भवनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म कलंक मिटालो प्रभु 'अकलंक' से।
बनो वीर अकलंक और निकलंक से।। पूर्वधातकी... ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अकलंक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'चंद्रस्वामि' के पद में चंदा शीश धर।
मुक्ति वल्लभा का पाये आशीष वर।। पूर्वधातकी... ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'चंद्रस्वामि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'शुभंकर' सम शुभ कार्य सदा करो।
पाप तजो और पुण्य कोष सुखदा भरो।। पूर्वधातकी... ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'शुभंकर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सात तत्त्व पे जो सच्ची श्रद्धा करे।
'तत्त्वनाथ' प्रभु कहे वही सम्यक् वरे।।
पूर्वधातकी खंड भरत पावन धरा।
चौबीसों प्रभु ने इसको पावन करा।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'तत्त्वनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुन्दर स्वामी' जैसा सुन्दर और ना।
प्रभु अर्चा बिन सुन्दर रूप मिले कहाँ।। पूर्वधातकी... ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुन्दरस्वामि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव 'पुरन्धर' को शत इन्द्र सदा भजें।
शची इन्द्रादिक परिकर युत प्रभु को जजें।। पूर्वधातकी... ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पुरन्धर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक के स्वामी जिनवर आप हो।
'स्वामीदेव' जिनेश्वर, तुम निष्पाप हो।। पूर्वधातकी... ।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'स्वामि देव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'देवदत्त' को देव देवियाँ पूजती।
देवदत्त के द्वारे दुंदुभि गूंजती।। पूर्वधातकी... ।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'देवदत्त' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वासवदत्त' जिनेश्वर वासववंद्य[1] हैं।
जिनकी वाणी से जगमग चउ-संध्य[2] हैं।। पूर्वधातकी... ।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'वासवदत्त' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेय मिलेगा भगवन् 'श्रेयोनाथ' से।
श्रेयस्कर पद मिले आपके साथ से।। पूर्वधातकी... ।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'श्रेयोनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विश्व पूजता 'विश्वरूप' जिन आपको।
विश्वविलोकी हरो हमारे पाप को।। पूर्वधातकी... ।।14।।

1. देव, 2. चारों संध्यायें।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विश्वरूप' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तपस्तेज' प्रभु तप का तेज धरें महा।
तप से कटते कर्मों के बंधन यहाँ॥
पूर्वधातकी खंड भरत पावन धरा।
चौबीसों प्रभु ने इसको पावन करा॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'तपस्तेजो' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब 'प्रतिबोध' जिनेश्वर प्रतिबोधित हुए।
लौकान्तिक देवों से अनुमोदित हुए॥ पूर्वधातकी...॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'श्रीप्रतिबोध' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'सिद्धार्थ देव' को जब सिद्धि मिली।
उनके संग श्रमणों को नव लब्धी मिली॥ पूर्वधातकी...॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सिद्धार्थदेव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संयम बिन यह जीवन पशु के तुल्य है।
'संयमजिन' कहते व्रत श्रेष्ठ अमूल्य है॥ पूर्वधातकी...॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'संयमजिन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विमलनाथ' की करते जो आराधना।
पुण्य कोष के संग बढ़े व्रत साधना॥ पूर्वधातकी...॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विमलनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवों के भी देव नाथ 'देवेन्द्र' हैं।
जिनके सेवक इन्द्र नरेन्द्र शतेन्द्र हैं॥ पूर्वधातकी...॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'देवेन्द्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम श्रेष्ठ वाणी होती भगवान की।
जय बोलो श्री 'प्रवरनाथ' भगवान की॥ पूर्वधातकी...॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रवरनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वसेन' विश्वेश विश्व विख्यात हो।
विश्व पूजता तुमको प्रभु नत माथ हो॥
पूर्वधातकी खंड भरत पावन धरा।
चौबीसों प्रभु ने इसको पावन करा॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विश्वसेन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेघ बरस ज्यों वसुधा को शीतल करे।
'मेघनंदि' त्यों आतम को निर्मल करें॥ पूर्वधातकी...॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मेघनंदि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'त्रिजेतृक' को हम सब वंदन करें।
उनको पूजें कर्मों का क्रंदन हरें॥ पूर्वधातकी...॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'त्रिजेतृक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्वधातकी खण्ड द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ श्री रत्नप्रभादि त्रिजेतृकनाथपर्यंत भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छंद)

सुख-शांति की शुभ कामना से, शांतिधारा हम करें।
प्रभु रत्नत्रय की भावना से, दिव्य पुष्पाञ्जलि करें॥
यह तीस चौबीसी महामह[1], हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज, हम सर्व सिद्धों से मिलें॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

1. महापूजा।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।
(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- पूर्व धातकी भरत में, बीत गया जो काल।
उनके सब तीर्थेश की, गायें हम जयमाल॥

(जोगीरासा छंद)

पूर्वधातकी खंड भरत में, भूतकाल अति प्यारा।
उसके सारे तीर्थंकर को, शत्-शत् नमन हमारा॥
गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-मोक्ष जिन, पंच कल्याणक पाते।
सर्व जिनेश्वर की गुण महिमा, हम सब मिलकर गाते॥1॥

चार घातिया नाशें जिनवर, केवलज्ञान उपाये।
सुरपति की आज्ञा से धनपति, समवशरण बनवाये॥
समवशरण में शरणा पाकर, सुर नर तिर्यक प्राणी।
अपने-अपने कोठे में जा, सुने सभी जिनवाणी॥2॥

आठ भूमियाँ समवशरण की, भक्तों को आकर्षें।
प्रभु भक्ति में लगी देवियाँ, नृत्य रचा अति हर्षें॥
तबला ढ़ोल मृदंग बासुरी, झांझ नगाड़े बाजे।
कहीं अप्सरा कहीं देवियाँ, ताथई थैया नाचे॥3॥

चैत्यभूमि के चैत्य वृक्ष की, जिन प्रतिमा हम वन्दे।
लता भूमि वा ध्वज भूमि के, श्री जिनवर को वन्दे॥
जल वापी का अतिशय देखो, सातों भव दिखलाये।
ध्वज भूमि में ध्वजा लगी जो, प्रभु का यश फैलाये॥4॥

चारों दिश की सर्व ध्वजायें, दश-दश चिन्हित मानो।
चार कोटि अड़सठ लक्षोत्तर, सहस्र छत्तिस जानो॥
नौ स्तूप लगे अति सुंदर, मुनि सभागृह सुंदर।
चित्र विचित्र पुराण कथायें, कहते ज्ञानी गुरुवर॥5॥

महाउदयमंडप श्रुत आलय, जहाँ रहें श्रुत देवी।
ऋद्धिधर मुनि उसको ध्यायें, वे सच्चे श्रुत सेवी॥
चारों दिश में श्री जिनवर के, दर्शन भविजन करते।
चार दिशा के धर्म चक्र ये, भव्यों का मन हरते॥6॥

वहाँ नहीं ईर्ष्या उत्कण्ठा, निद्रा भूख न आवे।
क्लेश मोह वा प्यास लगे ना, दुर्गुण सब मिट जावें॥
पाप छोड़ सब पुण्य कमाते, अक्षय वैभव पाते।
प्रभु के ऐसे समवशरण को, 'गुप्तिनंदि' नित ध्याते॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्वधातकीखंड द्वीपवर्ती भरतक्षेत्रस्थ श्री रत्नप्रभादि त्रिजेतृकनाथपर्यंत भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य तीनों काल में, श्री तीस चौबीसी भजे।
वो भव भ्रमण को नाशकर, सर्वोच्च शाश्वत सुख भजे॥
अति श्रेष्ठ उत्तम पुण्य पा, तीर्थेश पद भागी बने।
फिर अंत में त्रय 'गुप्ति' वर, निज आत्म गुण रागी बने॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(8) पूर्वधातकीखंड द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

युगारंभ में जो हुए, श्री 'युगादि' जिनदेव।
उनके पद युग में लगे, मेरा चित्त सदैव॥
पूर्वधातकी खंड में, भरत क्षेत्र सुविशाल।
चौबीसी तत्काल की, पूजूँ मैं त्रयकाल॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'युगादिदेव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'सिद्धांत' जिनेन्द्र ने, बतलाया सिद्धान्त।
रत्नत्रय ले जायेगा, भव्यों को लोकान्त ॥ पूर्वधातकी..॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सिद्धांत' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नर पशु देव मुनीश के, अधिपति नाथ 'महेश'।
आप रूप के लाभ हित, अर्पित अर्घ विशेष॥ पूर्वधातकी..॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'महेशनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'परमार्थ जिनेश' ने, साध लिया परमार्थ।
स्वार्थ तजूँ परमार्थ का, सिद्ध होय पुरुषार्थ॥ पूर्वधातकी..॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'परमार्थनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव 'समुद्धर' आपने, किया जगत उद्धार।
मैं भी ध्याऊँ आपको, करो नाथ उद्धार॥ पूर्वधातकी..॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'समुद्धर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भूधर' भू से हो अधर, करते जहाँ विहार।
स्वर्ण कमल खिलते वहाँ, देव करें जयकार॥ पूर्वधातकी..॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'भूधरनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री उद्योत जिनेश ने, किया आत्म उद्योत।
आप भक्त की जागती, निश्चित आतम ज्योत॥
पूर्वधातकी खंड में, भरत क्षेत्र सुविशाल।
चौबीसी तत्काल की, पूजूँ मैं त्रयकाल॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'उद्योत' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सार्थक आर्जव नाम कर, आर्जव धर्म प्रचार।
'आर्जव' को उर में बिठा, करूँ भवार्णव पार॥ पूर्वधातकी..॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'आर्जव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभयादिक चउ दान दो, 'अभयनाथ' भगवान।
सप्त भयों को दूर कर, बन जाऊँ भगवान॥ पूर्वधातकी..॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अभयनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अप्रकंप' जिन सिद्ध बन, हुए परम निष्कम्प।
नहीं डिगा पाये तुम्हें, कर्मों के भूकम्प॥ पूर्वधातकी..॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अप्रकंप' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पद्मनाथ' जग कीच तज, विकसायें भवि पद्म।
तुम पद अर्पित भक्ति से, विविध वर्ण के पद्म॥ पूर्वधातकी..॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पद्मनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पद्मनंदी' जिनराज ने, पाया परमानंद।
तव पद में तल्लीन हो, पाऊँ चित आनंद॥ पूर्वधातकी..॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पद्मनंदि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंकर क्षेमंकर परम, देव 'प्रियंकर' आप।
जिसको प्रियकर आप हो, होता वो निष्पाप॥ पूर्वधातकी..॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रियंकर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुकृत से शिवपथ मिले, कहते 'सुकृत' नाथ।
दुष्कृत दुष्कर हो सभी, हे जिन ! सुकृतनाथ॥ पूर्वधातकी..॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुकृतनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भद्रनाथ' जिन भद्रकर, करो सुभद्र प्रदान।
राह चले सब भद्रकर[1], करें आत्म कल्याण॥
पूर्वधातकी खंड में, भरत क्षेत्र सुविशाल।
चौबीसी तत्काल की, पूजूँ मैं त्रयकाल॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'भद्रनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रवि दिन में शशि रात में, क्रम से करे प्रकाश।
श्री 'मुनिचन्द्र' त्रिकाल में, करते ज्ञान प्रकाश॥ पूर्वधातकी..॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मुनिचन्द्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केशों का लोचन करें, पंचमुष्ठि से आप।
सार्थक नाम जिनेश का, 'पंचमुष्टि' निष्पाप॥ पूर्वधातकी..॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पंचमुष्टि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योग त्रिमुष्टि से किया, कर्म शत्रु संहार।
नाम 'त्रिमुष्टि' सिद्ध है, देव करें जयकार॥ पूर्वधातकी..॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'त्रिमुष्टि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'गांगिक' जिन से खिरी, श्रुत गंगा की धार।
जिसको पा पावन हुआ, त्रिभुवन बारम्बार॥ पूर्वधातकी..॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'गांगिकनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरगण मुनिगण से बड़े, कहलाये गणनाथ।
उनके भी तुम नाथ हो, तीर्थंकर 'गणनाथ'॥ पूर्वधातकी..॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'गणनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्यध्वनि सर्वांग से, प्रकट करें 'सर्वांग'।
उनके चरण सरोज में, अवनत मम सर्वांग॥ पूर्वधातकी..॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सर्वांगदेव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. कल्याणकारी।

शत इन्द्रों के नाथ तुम, जिन 'ब्रह्मेन्द्र' सुनाथ।
मैं भी ध्याऊँ आपको, अब ना रहूँ अनाथ॥
पूर्वधातकी खंड में, भरत क्षेत्र सुविशाल।
चौबीसी तत्काल की, पूजूँ मैं त्रयकाल॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ब्रह्मेन्द्रनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधि प्रदत्त पद इन्द्र का, क्षणभंगुर निस्सार।
इन्द्र चला यह सोचकर, 'इन्द्रदत्त' दरबार॥ पूर्वधातकी..॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'इन्द्रदत्त' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञायक नायक विश्व के, श्री 'नायक' जिनराज।
अक्षय सुखदायक तुम्हें, पूजे भव्य समाज॥ पूर्वधातकी..॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'नायकनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्वधातकीखंड द्वीपवर्ती भरतक्षेत्रस्थ श्री युगादिदेवादि नायकनाथपर्यंत भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छंद)

सुख-शांति की शुभ कामना से, शांतिधारा हम करें।
प्रभु रत्नत्रय की भावना से, दिव्य पुष्पाञ्जलि करें॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र–(1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।
(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा– पूर्व धातकी भरत की, चौबीसी तत्काल।
उनके सुंदर नाम की, गायें हम जयमाल॥

(सखी छंद)

शुभ पूर्व धातकी आला, जिसमें है भरत निराला।
जहाँ वर्तमान चौबीसी, भजते हैं जिन्हें मनीषी॥

प्रभु कर्म घातिया नाशें, फिर केवलज्ञान प्रकाशे।
तत्क्षण सुरेन्द्र सब आये, वे ज्ञान कल्याण मनायें॥2॥

फिर समोशरण सुखकारी, रचता कुबेर मनहारी।
सौधर्म सहित सुर सारे, मुनियों संग मानव न्यारे॥3॥

तीनों गतियों के प्राणी, सुनने आये प्रभु वाणी।
सब प्रभु की शरणा आये, भवतारक भक्ति रचायें॥4॥

वसु मंगल द्रव्य चढ़ायें, अपने वसु कर्म नशायें।
सिंहासन पे प्रभु शोभे, सब भव्यों का मन लोभे॥5॥

सुर प्रभु पर चँवर ढुराते, प्रभु का अतिशय दर्शाते।
जो शशि सम कांति धारें, त्रय छत्र लगे मनहारे॥6॥

भामण्डल भव दिखलावे, अंधियारा दूर भगावे।
जो सबका शोक मिटाता, तरुवर अशोक कहलाता॥7॥

सुर सुरभित पुष्प चढ़ाते, पुष्पों से भक्ति रचाते।
जिन दिव्यध्वनि हितकारी, भक्तों को मंगलकारी॥8॥

प्रभु का जयघोष लगायें, मंगलमय वाद्य बजायें।
ये प्रातिहार्य कहलाते, प्रभु के परिकर कहलाते॥9॥

दर्शन सुख ज्ञान अनंता, हम पूजें श्री भगवंता।
प्रभु मुद्रा मुक्ति दिलावे, मुनियों में श्रेष्ठ बनावे॥10॥

जिन समवशरण के स्वामी, मुक्ति पथ के अनुगामी।
ये तीर्थंकर कहलावें, शुभ धर्म तीर्थ दर्शावें॥11॥

हम इनकी भक्ति रचावें, निज का भव भ्रमण मिटावें।
है उनको नमन हमारा, बोले उनका जयकारा॥12॥

अर्घों की थाल चढ़ावें, जयमाल माल संग गावें।
'गुप्तिनंदी' गुण गावें, शाश्वत मुक्तिश्री पावें॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्वधातकीखंड द्वीपवर्ती भरतक्षेत्रस्थ श्री युगादिदेवादि नायकनाथपर्यंत भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य तीनों काल में, श्री तीस चौबीसी भजे।
वो भव भ्रमण को नाशकर, सर्वोच्च शाश्वत सुख भजे॥
अति श्रेष्ठ उत्तम पुण्य पा, तीर्थेश पद भागी बने।
फिर अंत में त्रय 'गुप्ति' वर, निज आत्म गुण रागी बने॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(9) पूर्वधातकीखंड द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ भविष्यत्कालीन 24 तीर्थंकर पूजा

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(चौपाई)

श्री 'सिद्धार्थ' सिद्धी के दाता, चौबीसी में प्रथम विधाता।
हे जिन ! हम तुमको नित ध्यायें, मोक्ष सिद्धि हमको मिल जाये॥
पूर्वधातकी खंड हमारा, भरत क्षेत्र उसमें मनहारा।
आगत चौबीसी हम ध्यायें, अर्घ चढ़ायें भक्ति रचायें॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सिद्धार्थ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सम्यग्गुण' सम्यग्गुणधारी, अवगुण हरण सुगुण भंडारी।
हम भी सम्यग्गगुण को ध्यायें, अवगुण हरें सुगुण को पायें॥ पूर्व..॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सम्यगुण' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो इन्द्रिय मन पर जय पावे, वो भव्यात्मा जिन कहलावे।
'श्री जिनेन्द्र' उन सबके देवा, इन्द्र करें चरणों की सेवा॥ पूर्व..॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'श्रीजिनेन्द्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'संपन्ननाथ' जब आये, त्रिभुवन को सम्पन्न बनायें।
कोई सुकृत कोष बढ़ाये, कोई मुक्तिरमा को पाये॥ पूर्व..॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'संपन्ननाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्व स्वामि' जिन सबके स्वामी, भावि तीर्थंकर जगनामी।
हे प्रभु ! हम तव पथ अनुगामी, बन जायें तुम सम निष्कामी॥ पूर्व..॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सर्वस्वामि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'मुनिनाथ' नाथ मुनियों के, ऋद्धिधर गणधर गुरुओं के।
मुनिव्रत धर मुनि मार्ग बतायें, हम सब उनको अर्घ चढ़ायें॥ पूर्व..॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मुनिनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'देव विशिष्ट' विशिष्ट कहाये, भव अवशिष्ट विनष्ट कराये।
तुम सम आत्म निष्ठ हम होवें, सुप्रतिष्ठ शिवपुर में होवें॥
पूर्वधातकी खंड हमारा, भरत क्षेत्र उसमें मनहारा।
आगत चौबीसी हम ध्यायें, अर्घ चढ़ायें भक्ति रचायें॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विशिष्टदेव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमरावती धरती पर आये, 'अमरनाथ' के दर्शन पाये।
जिनवर अमृत सूत्र बतायें, मर्त्यलोक में अमर बनाये॥ पूर्व..॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अमरनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ब्रह्मशांति' जिनवर आयेंगे, ब्रह्मशांति विधि सिखलायेंगे।
उनसे जो भवि जुड़ जायेंगे, आत्म ब्रह्म को प्रगटायेंगे॥ पूर्व..॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ब्रह्मशांति' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पर्वनाथ' जिन जहाँ रहेंगे, पर्वोत्सव नित वहाँ मनेंगे।
गर्व छोड़ हम पर्व भजेंगे, मोक्ष सिद्धी का पर्व वरेंगे॥ पूर्व..॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पर्वनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव 'अकामुक' काम नशायें, हमको मुक्ति धाम बसायें।
यही कामना हम सब भायें, इस हेतु यह अर्घ चढ़ायें॥ पूर्व..॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अकामुकदेव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ध्याननाथ' जब ध्यान धरेंगे, अक्षय केवलज्ञान वरेंगे।
हम सब उनका ध्यान धरेंगे, निज आतम उत्थान करेंगे॥ पूर्व..॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ध्याननाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्री 'कल्प' हमारें, अक्षय कल्प वृक्ष मनहारे।
बिन मांगे जो सबकुछ देते, हम सब उनकी शरणा लेते॥ पूर्व..॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'कल्प' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संवर 'संवरनाथ' करायें, जग को संवर विधि बतलायें।
संवर दर हम भाग्य संवारें, सत्वर[1] चले मोक्ष के द्वारे॥ पूर्व..॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'संवरनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. शीघ्र।

सुरगण 'स्वास्थ्यनाथ' को ध्यायें, निज आतम को स्वस्थ करायें।
स्वस्थ करो हे नाथ ! हमें भी, नहीं सताये कर्म फरेबी[1] ॥
पूर्वधातकी खंड हमारा, भरत क्षेत्र उसमें मनहारा।
आगत चौबीसी हम ध्यायें, अर्घ चढ़ायें भक्ति रचायें॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'स्वास्थ्यनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'आनंद' परम आनंदी, अंतर्द्वंद जयी निर्द्वन्दी।
तुम सम हम आनंद वरेंगे, कर्मों का सब फंद हरेंगे॥ पूर्व..॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'आनंदनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रविप्रभ' वे तीर्थेश हमारे, कोटि सूर्य निष्प्रभ जिस द्वारे।
हम सब उनकी भक्ति रचायें, अपना प्रज्ञा दीप जलाये ॥ पूर्व..॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'रविप्रभ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्र इन्द्र जिनको जजते हैं, मंगल द्रव्यों से भजते हैं।
हम उन 'चन्दाप्रभु' को ध्यायें, चंद क्षणों में विघ्न नशायें॥ पूर्व..॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'चंद्रप्रभ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुनंद के छंद बनायें, करें अर्चना अर्घ सजायें।
श्री 'सुनंद' भव फंद छुड़ायें, हम सबका भवभ्रमण मिटायें॥ पूर्व..॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुनंद' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मुनि का उपदेश सुनेंगे, उनके कर्ण सुकर्ण बनेंगे।
यह 'सुकर्ण' जिनवर की वाणी, उनको पूज बने सद्ज्ञानी॥ पूर्व..॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुकर्णदेव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'देव सुकर्म' कुकर्म नशेंगे, शुभ कर्मी के चित्त बसेंगे।
हम सुकर्म की भक्ति करेंगे, उन जैसे बन कर्म नशेंगे ॥ पूर्व..॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुकर्मदेव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अममदेव' ममता को छोड़ें, निर्मम कर्म बंध को तोड़ें।
चित्त तीर्थ में उनको ध्याये, आत्म शर्म हम उन सम पायें॥ पूर्व..॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अममदेव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. झूठा धोखेबाज।

'पार्श्वनाथ' भव पाश हरेंगे, कर्म रिपू का नाश करेंगे।
जो जन उनके पास रहेंगे, मोक्ष महल में वास करेंगे ॥
पूर्वधातकी खंड हमारा, भरत क्षेत्र उसमें मनहारा।
आगत चौबीसी हम ध्यायें, अर्घ चढ़ायें भक्ति रचायें॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पार्श्वनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शाश्वतनाथ' सिद्धपद पायें, शाश्वत शिववधु में रम जाये।
शाश्वत प्रभु के गुण हम पायें, शाश्वत मुक्ति रमा को पायें ॥ पूर्व..॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'शाश्वतनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्वधातकीखंड द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ श्री सिद्धार्थादि शाश्वतनाथपर्यंत भविष्यत्कालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छंद)

सुख-शांति की शुभ कामना से, शांतिधारा हम करें।
प्रभु रत्नत्रय की भावना से, दिव्य पुष्पाञ्जलि करें॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।

(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- पूर्व धातकी भरत के, भावि चौबीस नाथ।
जयमाला ले हाथ हम, उन्हें नमायें माथ॥

(पद्धरि छंद)

जय पूर्वधातकी खंड क्षेत्र, दर्शन से पुलकित हृदय नेत्र।
जय-जय जिन चौबीसों महान, जयमाला गा हम धरें ध्यान॥1॥

संकेतों से जिन जन्म जान, सुरगण करते उत्सव महान।
क्रम से तपधर कैवल्यज्ञान, पायें सब तीर्थंकर महान॥2॥

जब हुआ प्रभु को विशद ज्ञान, प्रभु वाणी सुनते भव्य आन।
तब समोशरण सुन्दर महान, तत्क्षण रचता है धनद[1] आन॥3॥

बारह कोठे सुन्दर विशाल, सुर-नर पूजें ले अर्घ थाल।
ता थइ-थइ-थइ-थइ बजत ताल, घुंघरु छम-छम बाजे त्रिकाल॥4॥

पहले कोठे में मुनि गणेश, फिर कल्पवासी देवी विशेष।
तीजे आर्या नारी महान्, चौथे में ज्योतिष देवी जान॥5॥

पंचम में व्यंतरणी समाय, छट्ठे भवनों की देवी आय।
सप्तम में भवन कुमार देव, अष्ठम कोठे व्यन्तर सुदेव॥6॥

नवमे में ज्योतिष देव जान, दसमें विमानवासी महान।
ग्यारहवें कोठे मनुज होय, बारहवें में तिर्यंच होय॥7॥

कोई प्रभु की पूजा रचाय, कोई प्रभु की भक्ति रचाय।
नर-खग-पशु प्रभु भक्ति रचाय, निज समकित की पुष्टि कराय॥8॥

प्रभु वाणी सुन-सुन हर्ष होय, जिन चरणों में उत्कर्ष होय।
जिन सन्मुख जो भवि जीव आय, वो भव्य सुखों को शीघ्र पाय॥9॥

लेकिन अभव्य ना बने भव्य, ना गंधकुटी देखे सुनव्य।
वो प्रभुवर को नहीं देख पाय, जिनवर सन्मुख भी नहीं जाय॥10॥

1. कुबेर।

तिर्यंच भव्य उनसे विशेष, दर्शन वन्दन करते विशेष।
मुझ 'गुप्तिनंदी' की सुनो टेर, हे नाथ ! करो ना तनिक देर॥11॥

(धत्ता छंद)

जय-जय भगवंता, जय गुणवंता, श्रेष्ठ महंता सुखकारी।
जय संकटहंता, स्नातक संता, दान अनंता दातारी॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्वधातकीखण्ड द्वीपवर्ती भरतक्षेत्रस्थ श्री सिद्धार्थादि शाश्वतनाथपर्यंत भविष्यत्कालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य तीनों काल में, श्री तीस चौबीसी भजे।
वो भव भ्रमण को नाशकर, सर्वोच्च शाश्वत सुख भजे॥
अति श्रेष्ठ उत्तम पुण्य पा, तीर्थेश पद भागी बने।
फिर अंत में त्रय 'गुप्ति' वर, निज आत्म गुण रागी बने॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(10) पूर्वधातकीखंड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(रोला छंद)

'वज्रस्वामि' तीर्थेश, धर्म प्रवर्तन करते।
कर्म काट भगवान, मुक्ति वल्लभा वरते॥
पूर्वधातकी खंड, ऐरावत मन भाये।
भूतकाल के सर्व, चौबीस जिन हम ध्यायें॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'वज्रस्वामि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर लो भाव उदात्त, श्री 'उदत्त' कहते हैं।
जो करते पुरुषार्थ, वो प्रभु संग रहते हैं॥ पूर्वधातकी..॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'उदत्त' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

'सूर्यस्वामि' भगवान, ज्ञान सूर्य प्रगटाते।
हरें कर्म संताप, मोक्ष महल पहुँचाते ॥
पूर्वधातकी खंड, ऐरावत मन भाये।
भूतकाल के सर्व, चौबीस जिन हम ध्यायें॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सूर्यस्वामि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुषों में जो श्रेष्ठ, 'पुरुषोत्तम' कहलाते।
करके सत् पुरुषार्थ, वो पंचम गति पाते ॥ पूर्वधातकी..॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पुरुषोत्तम' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में भव्य, सुर नर तिर्यक आते।
'शरणस्वामि' जिनराज, सद्गुण वरण सिखाते॥ पूर्वधातकी..॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'शरणस्वामि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्याऊँ जिन 'अवबोध', आत्म बोधि मिल जाये।
हटे करम अवरोध, ज्ञान पद्म खिल जाये॥ पूर्वधातकी..॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अवबोध' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मन भेद-प्रभेद, जिन 'विक्रम' बतलाये।
ध्यान पराक्रम श्रेष्ठ, विक्रम जिनवर पायें॥ पूर्वधातकी..॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विक्रम' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयु घटती जाय, कुछ तो करलो प्राणी।
'निर्घटिक' समझाय, अपनाओ जिनवाणी॥ पूर्वधातकी..॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'निर्घटिक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरियाली हो जाय, जहँ 'हरीन्द्र' जिन जायें।
हो सुभिक्ष चहुँ ओर, सौ योजन श्रुत गाये॥ पूर्वधातकी..॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'हरीन्द्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परित्रेरित' प्रभु आप, धर्म प्रेरणा देते।
हरते उनके पाप, जो जिन शरणा लेते॥ पूर्वधातकी..॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'परित्रेरित' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पायें पद निर्वाण, श्री निर्वाण जिनेश्वर।
पाने हम निर्वाण, उनको भजें निरंतर ॥
पूर्वधातकी खंड, ऐरावत मन भाये।
भूतकाल के सर्व, चौबीस जिन हम ध्यायें॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'निर्वाणसूरि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म सुखों की खान, धारो धर्म अहिंसा।
'धर्महेतु' भगवान, कहें ना करना हिंसा॥ पूर्वधातकी..॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'धर्महेतु' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'चतुर्मुख' आप, चारों दिश मुख दिखता।
समवशरण के नाथ, चउ दिश दर्शन मिलता॥ पूर्वधातकी..॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'चतुर्मुख' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुकृत करलो आज, दुष्कृत छोड़ो प्राणी।
'सुकृतेंद्र' को ध्याय, कृत्य-कृत्य हो प्राणी॥ पूर्वधातकी..॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुकृतेंद्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'श्रुताम्बु' आप, श्रुत जल हमें पिलाओ।
दो हमको प्रभु ज्ञान, आवागमन मिटाओ॥ पूर्वधातकी..॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'श्रुताम्बु' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान सूर्य 'विमलार्क', ज्ञान सूर्य विकसाते।
जो आये प्रभु पास, उसके कर्म नशाते॥ पूर्वधातकी..॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विमलार्क' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के पंच कल्याण, सुरपति देव मनाते।
ऋद्धिधर मुनिराज, 'देव-प्रभु' को ध्याते॥ पूर्वधातकी..॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'देवप्रभ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर 'धरणेन्द्र', धर्म ध्वजा फहरावे।
देव करें जयघोष, दश दिश में गुंजावे ॥ पूर्वधातकी..॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'धरणेन्द्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जहाँ गये तीर्थेश, तीर्थ वहाँ बन जाते।
श्री 'सुतीर्थ' जिननाथ, आतम तीर्थ बनाते॥
पूर्वधातकी खंड, ऐरावत मन भाये।
भूतकाल के सर्व, चौबीस जिन हम ध्यायें॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुतीर्थनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूर्य उदय के पूर्व, पुष्प स्वयं खिल जाते।
त्यों 'उदयानंद' पास, भाग्य कमल खिल जाते॥ पूर्वधातकी..॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'उदयानंद' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथदेव 'सर्वार्थ', सर्व देव गण भजते।
मिले हमें परमार्थ, इस विध प्रभु को भजते॥ पूर्वधातकी..॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सर्वार्थदेव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धार्मिक' प्रभु के द्वार, धर्म धार बहती है।
धर्म निजात्म स्वभाव, जिनवाणी कहती है॥ पूर्वधातकी..॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'धार्मिक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक के नाथ, 'क्षेत्रस्वामि' सुखकारी।
प्रभु का क्षेत्र विशाल, सुख-समृद्धि भारी॥ पूर्वधातकी..॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'क्षेत्रस्वामि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'हरिचंद्र' जिनेश, सूर्य-चंद्र से आगे।
उन्हें झुकाकर माथ, भाग्य हमारा जागे॥ पूर्वधातकी..॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'हरिचंद्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ

(हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥

यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्वधातकी खंड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री वज्रस्वामीआदि हरिचंद्रपर्यंत भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छंद)

सुख-शांति की शुभ कामना से, शांतिधारा हम करें।
प्रभु रत्नत्रय की भावना से, दिव्य पुष्पाञ्जलि करें॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।
(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- **पूर्व धातकी खण्ड में, ऐरावत मनहार।**
उसके भूत जिनेश की, करते हम जयकार॥

(शेरछंद)

श्री खंड पूर्व धातकी विशाल बताया।
चौबीस नाथ का जहाँ सान्निध्य बताया॥
जिनके जनम से क्षेत्र ऐरावत पवित्र है।
जहाँ पूर्वधातकी में तीर्थरूप इत्र है॥1॥

जिनके हुए हैं पांच ही कल्याण महोत्सव।
तप-गर्भ-जन्म-ज्ञान वा निर्वाण महोत्सव॥

निज घाति कर्म नाशके, तीर्थेश जिन बने।
फिर शेष कर्म नाश के, सिद्धेश जिन बने॥2॥

पुरुषार्थ चार शास्त्र में आचार्य बतायें।
ये धर्म अर्थ काम मोक्ष चार कहाये॥
पुरुषार्थ धर्म का विशेष जीव जो करे।
वो चार ही पुरुषार्थ साध सिद्धी को वरे॥3॥

इस धर्म से ही सर्व रोग-शोक दुःख गले।
इससे ही लोक की समस्त सम्पदा मिले॥
इस धर्म से ही जीव सर्वलोक से तिरे।
इससे ही भव्य जीव मुक्ति अंगना वरे॥4॥

तीर्थंकरादि श्रेष्ठ पद भी धर्म दिलाये।
श्री सिद्ध का अनन्त सौख्य धर्म दिलाये॥
हम भी धरें ये धर्म श्रेष्ठ साधना करें।
धारे त्रिगुप्ति 'गुप्तिनंदी' मोक्ष सुख वरे॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्वधातकी खंड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री वज्रस्वामीआदि हरिचंद्रपर्यंत भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य तीनों काल में, श्री तीस चौबीसी भजे।
वो भव भ्रमण को नाशकर, सर्वोच्च शाश्वत सुख भजे॥
अति श्रेष्ठ उत्तम पुण्य पा, तीर्थेश पद भागी बने।
फिर अंत में त्रय 'गुप्ति' वर, निज आत्म गुण रागी बने॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(11) पूर्वधातकीखंड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(शंभु छंद)

जिननाथ 'अपश्चिम' दश दिश के, घन अंधकार को हरते हैं।
जो प्रभु के पश्चिम[1] रहते हैं, वे ज्ञान सूर्य को वरते हैं॥
श्री पूर्वधातकी खंड द्वीप, जिसमें ऐरावत मनहारी।
उसकी चौबीसी वर्तमान, हम पूजें पायें शिवनारी॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अपश्चिम' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे मन मोहक खिले हुये, जल थल के पुष्प सजाते हैं।
श्री 'पुष्पदंत' को बहुवर्णी, पुष्पों की माल चढ़ाते हैं॥ श्री..॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पुष्पदंत' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो घाति कर्म का नाश करें, अरिहंत वही बन जाते हैं।
प्रभु 'अर्हदेव' के चरणों में, सुर चौंसठ चँवर ढुराते हैं॥ श्री..॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अर्हदेव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्-दग्-ज्ञान-चरित्र मिले, वह मोक्ष मार्ग कहलाता है।
'चारित्रनाथ' की अर्चा से, सम्यक् चरित्र मिल जाता है॥ श्री..॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'चरित्रनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सिद्ध परम पद पाते हैं, वो 'सिद्धानंद' कहाते हैं।
निज सिद्धानंद जगाने को, हम उनको अर्घ चढ़ाते हैं॥ श्री..॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सिद्धानंद' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभुवर 'नंदग' के आते ही, धरती पे संयम फूल खिले।
भूले भटके हर प्राणी को, सन्मार्ग दिवाकर नाथ मिले॥ श्री..॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'नंदग' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. पीछे।

हम पद्म सरोवर से लाये, बहु पद्म कुसुम ये खिले-खिले।
इन पद्मों का सौभाग्य बड़ा, प्रभु 'पद्मकूप' के चरण मिले॥
श्री पूर्वधातकी खंड द्वीप, जिसमें ऐरावत मनहारी।
उसकी चौबीसी वर्तमान, हम पूजें पायें शिवनारी॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पद्मकूप' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'उदयनाभि' माँ के उर में, ज्यों मोती सीपी मध्य रहे।
वे माँ के उर में रहकर भी, उस उर से पूर्ण अलिप्त रहे॥ श्री..॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'उदयनाभि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मत राग करो, मत द्वेष करो, 'रुकमेंदु' नाथ सिखलाते हैं।
जो रागद्वेष मदमोह तजे, वो ही अक्षय सुख पाते हैं॥ श्री..॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'रूकमेंदु' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके मन में करुणा होती, वो ही तीर्थंकर बनते हैं।
जिनदेव 'कृपालु' कृपा करो, इस आशा से हम नमते हैं॥ श्री..॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'कृपालु' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब तुष्टि-पुष्टियाँ रहे वहाँ, जहँ 'प्रौष्ठिल' देव विहार करें।
जीवों में मैत्री भाव बढ़े, प्रभु वैरभाव परिहार करें॥ श्री..॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रौष्ठिल' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सिद्धेश्वर' सिद्ध स्वयम्भू हैं, सिद्धीदायक हैं सिद्ध प्रभो!।
सब कार्य सिद्ध करने हेतू, हम भी भजते दिनरात विभो!॥ श्री..॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सिद्धेश्वर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'अमृतेंदु' प्रभुवर हमको, ज्ञानामृत भोज कराते हैं।
जो समवशरण का वरण करे, वो चार दान पा जाते हैं॥ श्री..॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अमृतेंदु' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो स्वामी तुम हम सेवक हैं, सेवक की अर्जी सुन लेना।
हे 'स्वामीनाथ' अनाथों के, सेवक को चरणों में लेना॥ श्री..॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'स्वामिनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'भुवनलिंग' प्रभुवर कहते, मुनिलिंग मुक्ति का कारण है।
मुनि बने बिना ना मोक्ष मिले, मुनि पद ही सुख का कारण है॥
श्री पूर्वधातकी खंड द्वीप, जिसमें ऐरावत मनहारी।
उसकी चौबीसी वर्तमान, हम पूजें पायें शिवनारी॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'भुवनलिंग' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थेश 'सर्वरथ' अर्थपूर्ण, सिद्धार्थ देशना देते हैं।
हम उनकी सार्थक भक्ति करें, जो महासिद्धी वर देते हैं॥ श्री..॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सर्वरथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मेघनंद आनंद कंद, हर प्राणी के भव फंद हरें।
प्रभु 'मेघनंद' के चरणों में, हम निज आतम आनंद वरें॥ श्री..॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मेघनंद' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'नंदकेश' धारे सुवेश, आनंद देशना देते हैं।
हम भी ऐसा अमृत पाने, जिनवर की शरणा लेते हैं॥ श्री..॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'नंदकेश' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हरिनाथ' आपके सम्मुख आ, हरि हर ब्रह्मादिक हार गये।
जिनके उर में हरिनाथ बसे, वे निश्चय भव के पार गये॥ श्री..॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'हरिनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभुवर 'अधिष्ठ' को इष्ट मान, जो प्रातः शीश झुकाते हैं।
वो सब अनिष्ट दुःख शोक नशा, निज जीवन सफल बनाते हैं॥ श्री..॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अधिष्ठ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'शांतिकदेव' अशांति हरें, जो मन से उनको ध्यातें हैं।
वो प्रभु को हृदय बिठाकर ही, अनुपम अमृत सुख पाते हैं॥ श्री..॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'शांतिकदेव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नंदीस्वामी' का नाद सुनो, जिनवाणी पर श्रद्धान करो।
भवसागर से तिर जाओगे, आओ भव्यों कल्याण करो॥ श्री..॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'नंदीस्वामि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'कुंद पार्श्व' के पार्श्व बैठ, क्रोधी कुंदन बन जायेंगे।
कुंदन बनने प्रभु चरणों में, हम कुंद प्रसून चढ़ायेंगे॥
श्री पूर्वधातकी खंड द्वीप, जिसमें ऐरावत मनहारी।
उसकी चौबीसी वर्तमान, हम पूजें पायें शिवनारी॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'कुंदपार्श्व' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थेश 'विरोचन' के लोचन, भव पाप विमोचन करते हैं।
भवि तुम सम्मुख आलोचन कर, अघ का संकोचन करते हैं॥ श्री..॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विरोचन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्वधातकी खण्ड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री अपश्चिमादि विरोचनपर्यन्त वर्तमानकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छंद)

सुख-शांति की शुभ कामना से, शांतिधारा हम करें।
प्रभु रत्नत्रय की भावना से, दिव्य पुष्पाञ्जलि करें॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।
(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

सोरठा- पूर्वधातकी खंड, ऐरावत उसमें सुगम।
उसमें धर्म करण्ड[1], चौबीसों तीर्थेश का॥

1. पिटारा।

(चामर छंद)

धातकी सुपूर्व खण्ड क्षेत्र मोहता महा।
वर्तमान के जिनेश को जजें सभी यहाँ॥
तीन ज्ञान धारते जिनेन्द्र देव गर्भ से।
सर्व लोक को प्रकाश देय ज्ञान पर्व से॥1॥

जन्म से जिनेश के विशेष हर्ष छा गया।
स्वर्ग नर्क मध्य[1] में सुशांति भाव आ गया॥
नाथ आप जन्म से गिरीश[2] पूज्य हो गये।
आपका सुनाम ले सुरेन्द्र धन्य हो गये॥2॥

देव देवियों सुसंग नाचते सुरेन्द्र भी।
भक्ति गीत गान संग झूमते नरेन्द्र भी॥
इन्द्र के समस्त अंग-अंग देवियाँ नचे।
बाल तीर्थ नाथ को रिझाय पाप से बचे॥3॥

आपके पुराण को कहें मुनीश भी यहाँ।
नाथ आप नाम की महा कथा सुनी अहा॥
हे जिनेश ! दान दो विशेष पूर्ण ज्ञान दो।
'गुप्तिनंदि' को जिनेश मुक्ति राज दान दो॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्वधातकीखंड द्वीपवर्ती ऐरावतक्षेत्रस्थ श्री अपश्चिमादि विरोचनपर्यंत वर्तमानकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य तीनों काल में, श्री तीस चौबीसी भजे।
वो भव भ्रमण को नाशकर, सर्वोच्च शाश्वत सुख भजे॥
अति श्रेष्ठ उत्तम पुण्य पा, तीर्थेश पद भागी बने।
फिर अंत में त्रय 'गुप्ति' वर, निज आत्म गुण रागी बने॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

1. मध्य लोक, 2. सुमेरु पर्वत।

(12) पूर्वधातकीखंड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ भविष्यत्कालीन 24 तीर्थंकर पूजा

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(चौपाई-आँचलीबद्ध)

'प्रवरवीर' के वचन विशाल, प्रभु चरणों में नत मम भाल।
दरश मिल जाय, सब जिनवर की भक्ति रचाय।।
पूर्वधातकी चौबीस नाथ, ऐरावत को करे सनाथ।
दरश मिल जाय, सब जिनवर की भक्ति रचाय ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रवरवीर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म शत्रु का कर परिहार, 'विजय' नाथ वरते शिवनार। दरश..
पूर्व धातकी.....।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विजयप्रभ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंथ वहाँ पर नहीं अनेक, 'सत्पद' नाथ कहें सत् एक। दरश..
पूर्व धातकी.....।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सत्पद' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महामृगेंद्र' जिन मन बस जाय, मन प्रभु पूजा में रम जाय। दरश..
पूर्व धातकी.....।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'महामृगेंद्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'चिंतामणि' का ध्यान लगाय, चिन्तन से चिंता मिट जाय। दरश..
पूर्व धातकी.....।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'चिंतामणि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरते शोक 'अशोकि' नाथ, उन चरणों में नत मम माथ। दरश..
पूर्व धातकी.....।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अशोकि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मृग आदिक जिन शरणा आय, 'द्विमृगेंद्र' की भक्ति रचाय।
दरश मिल जाय, सब जिनवर की भक्ति रचाय।।
पूर्वधातकी चौबीस नाथ, ऐरावत को करे सनाथ।
दरश मिल जाय, सब जिनवर की भक्ति रचाय ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'द्विमृगेंद्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'उपवासिक' प्रभु के पास, उसे मिलेगा मोक्ष निवास। दरश मिल..
पूर्व धातकी.....।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'उपवासिक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पद्मचंद्र' के पाद सरोज, पद्म चढ़ाऊँ उनको रोज। दरश मिल..
पूर्व धातकी.....।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पद्मचंद्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बोधकेन्दु' दो बोधि निधान, हर लो मिथ्यातम अज्ञान। दरश मिल..
पूर्व धातकी.....।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'बोधकेन्दु' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिंता हिम जैसी गल जाय, जो 'चिंताहिम' प्रभु को ध्याय। दरश मिल..
पूर्व धातकी.....।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'चिंताहिम' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर उत्साह भजूँ जिननाथ, 'उत्साहिक' प्रभु देना साथ। दरश मिल..
पूर्व धातकी.....।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'उत्साहिक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव 'अपाशिव' निज में लीन, भक्त हुये उनमें तल्लीन। दरश मिल..
पूर्व धातकी.....।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अपाशिव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानामृत जल हमें पिलाय, नाथ 'देवजल' को हम ध्याय। दरश मिल..
पूर्व धातकी.....।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'देवजल' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरकों में कुछ पल सुख छाय, जब 'नारिक' प्रभु भू पर आय।
दरश मिल जाय, सब जिनवर की भक्ति रचाय।।
पूर्वधातकी चौबीस नाथ, ऐरावत को करे सनाथ।
दरश मिल जाय, सब जिनवर की भक्ति रचाय ।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'नारिक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनघनाथ' को अर्घ चढ़ाय, पद अनर्घ मुझको मिल जाय। दरश मिल..
पूर्व धातकी..... ।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अनघनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमें प्रभु को इन्द्र-नरेन्द्र, तीन भुवन के प्रभु 'नागेंद्र'। दरश मिल..
पूर्व धातकी..... ।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'नागेन्द्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नीले-नीले उत्पल लाय, 'नीलोत्पल' के चरण चढ़ाय। दरश मिल..
पूर्व धातकी..... ।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'नीलोत्पल' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अप्रकंप' जब माँ उर आय, सुरपति का आसन कंपाय। दरश मिल..
पूर्व धातकी..... ।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अप्रकंप' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव 'पुरोहित' मार्ग बताय, परहित करो दया दर्शाय। दरश मिल..
पूर्व धातकी..... ।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पुरोहित' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भिंदकनाथ' परम पद पाय, भेद ज्ञान की ज्योति जगाय। दरश मिल..
पूर्व धातकी..... ।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'भिंदकनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पार्श्वनाथ' नाथों के नाथ, आप चरण में नत मम माथ।
दरश मिल जाय, सब जिनवर की भक्ति रचाय।।
पूर्वधातकी चौबीस नाथ, ऐरावत को करे सनाथ।
दरश मिल जाय, सब जिनवर की भक्ति रचाय ।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पार्श्वनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'निर्वाच' हमें समझाय, श्री निर्वाण मार्ग दिखलाय। दरश मिल..
पूर्व धातकी..... ।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'निर्वाच' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'विरोषिक' रोष मिटाय, पुण्य कोष निर्दोष बढ़ाय। दरश मिल..
पूर्व धातकी..... ।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विरोषिक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी।।
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्वधातकीखण्ड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री वीरनाथादि विरोषिकनाथपर्यंत भविष्यत्कालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छंद)

सुख-शांति की शुभ कामना से, शांतिधारा हम करें।
प्रभु रत्नत्रय की भावना से, दिव्य पुष्पाञ्जलि करें।।
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।
(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- पूर्व धातकी खण्ड में, ऐरावत इक वर्ष[1]।
उसके चौबीस नाथ भज, करूँ आत्म उत्कर्ष॥

(चौपाई)

पूर्वधातकी खण्ड कहाता, उसमें ऐरावत विख्याता।
उसमें चौबीस नाथ विधाता, तीन लोक के भाग्य विधाता॥1॥

उनका गर्भागम मनहारी, जन्म कल्याणक अतिशयकारी।
तपकल्याणक भी सुखकारी, वीतराग शिवसुख दातारी॥2॥

जब जिनवर तप करने जाते, द्वादश अनुप्रेक्षायें भाते।
प्रथम अनित्य भावना भायें, चंचल वैभव को तज जायें॥3॥

जग में कोई शरण नहीं है, निज आतम ही शरण सही है।
अंत समय जब जिसका आवे, मंत्र-तंत्र भी काम न आवे॥4॥

निर्धन धन को पाने रोता, भोगी भोगों में रत होता।
जग में सच्चा सौख्य नहीं है, भोग संपदा अथिर कही है॥5॥

जीव अकेला जग में आता, कोई उसके साथ न जाता।
कर्मों का फल सहे अकेला, करे सदा पुरुषार्थ अकेला॥6॥

अशुचि अपावन नश्वर काया, क्यों मैंने तन व्यर्थ सजाया।
तन के कारण पाप कमाया, अपना जीवन व्यर्थ गंवाया॥7॥

1. क्षेत्र।

मन-वच-तन त्रय योग कहाते, ये आश्रव के द्वार कहाते।
कर्माश्रव को संवर रोके, करें निर्जरा आत्म विलोके॥8॥

तपकर अपने कर्म नशावें, शाश्वत लोक शिखर को पावे।
तीन लोक ये शाश्वत न्यारा, भटके जीव यहाँ बेचारा॥9॥

दुर्लभ बोधि ज्ञान जो पावे, वो प्राणी भव से तर जावे।
धन सुत वैभव सुलभ कहावे, धर्म सभी को ना मिल पावे॥10॥

धर्म जीव को पार लगावे, धर्म जीव को मोक्ष दिलावे।
इस विध वे अनुप्रेक्षा भावें, महाश्रमण बन व्रत अपनावें॥11॥

शुक्ल ध्यान जब नाथ लगावें, चार घातिया कर्म नशावें।
यही ज्ञान का पर्व कहाये, समोशरण सुन्दर बन जाये॥12॥

प्रभु का ज्ञान पर्व मनहारी, मोक्ष महोत्सव शिव सुखकारी।
'गुप्तिनंदी' उनको नित ध्यायें, प्रभु सम मोक्ष धाम को पाये॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्वधातकीखण्ड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री वीरनाथादि विरोषिकनाथपर्यंत भविष्यत्कालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य तीनों काल में, श्री तीस चौबीसी भजे।
वो भव भ्रमण को नाशकर, सर्वोच्च शाश्वत सुख भजे॥
अति श्रेष्ठ उत्तम पुण्य पा, तीर्थेश पद भागी बने।
फिर अंत में त्रय 'गुप्ति' वर, निज आत्म गुण रागी बने॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(13) पश्चिमधातकीखंड द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ भूतकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(शेर छंद)

शुभ नाम 'वृषभनाथ' का, सब गीत गाइये।
भव-भव के संकटों से, शीघ्र मुक्ति पाइये॥
पश्चिम सुधातकी में, भरत क्षेत्र सुहाना।
तीर्थेश भूतकाल के, दे पुण्य खजाना॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'वृषभनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रियमित्र' के सुमित्र बनें, ये ललक लगी।
प्रियमित्र बने हम भी मन में भावना जगी॥ पश्चिम...॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रियमित्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'शांतिनाथ' कल्पतरु लोक के लिये।
प्रभु शांति की शरण में भव्य शांति से जिये॥ पश्चिम...॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'शांतिनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुमति' जिनेश हमको मुक्ति सूत्र दीजिये।
हे नाथ ! हमारी मति पवित्र कीजिये॥ पश्चिम...॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुमतिनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थेश 'आदिनाथ' से हम प्रार्थना करें।
उनके समान हम भी श्रेष्ठ साधना करें॥ पश्चिम...॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'आदिनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अतिव्यक्त' के स्वरूप से ये व्यक्त हो रहा।
जो साधना करे वो पाप मुक्त हो रहा॥ पश्चिम...॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अतिव्यक्त' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की कला से न पार पाना सरल है।
जिनराज 'कलासेन' हरें कर्म गरल[1] है॥
पश्चिम सुधातकी में, भरत क्षेत्र सुहाना।
तीर्थेश भूतकाल के, दे पुण्य खजाना॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'कलासेन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'कर्मजीत' कर्मजीत मुक्ति पा गये।
मुक्ति के मीत कर्मजीत हमको भा गये॥ पश्चिम...॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'कर्मजित्' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'प्रबुद्ध' की प्रबुद्ध देशना मिली।
निष्काम कर्म की विशेष प्रेरणा मिली॥ पश्चिम...॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रबुद्ध' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुचि ध्यान वज्र से प्रभु ने पाप नशाया।
तीर्थेश 'प्रव्रजित' ने प्रवृज्या[2] को जगाया॥ पश्चिम...॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रव्रजित' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनधर्म ही जगत में प्राणियों का सहारा।
जिनवर 'सुधर्म' से मिले सुधर्म सहारा॥ पश्चिम...॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुधर्म' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विज्ञान वीतरागता को पाने हम चले।
अर्चा से 'तमोदीप' की सुज्ञानश्री मिले॥ पश्चिम...॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'तमोदीप' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों को खण्ड-खण्ड 'वज्रनाथ' ने किया।
ले ध्यान-वज्र कर्मपिण्ड चूर कर दिया॥ पश्चिम...॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'वज्रनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे तीर्थनाथ ! 'बुद्धनाथ' बोधि दीजिये।
भक्तों की भक्ति भावना पे ध्यान दीजिये॥ पश्चिम...॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'बुद्धनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. जहर, 2. वैराग्य।

जिनवर 'प्रबंध' देव कर्म बंध से परे।
भव्यों के लिये मोक्ष का प्रबंध वे करें॥
पश्चिम सुधातकी में, भरत क्षेत्र सुहाना।
तीर्थेश भूतकाल के, दे पुण्य खजाना॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रबंधदेव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'अतीतनाथ' कर्म से अतीत हैं।
प्रभु भक्ति में धुनीत[1] काल ही पुनीत[2] है॥ पश्चिम...॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अतीतनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभुवर 'प्रमुख' प्रमुख-प्रमुख गुणों को पा गये।
हम भी प्रमुख गुणों को पाने आज आ गये॥ पश्चिम...॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रमुख' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थेश 'पल्योपम' ने वरा मुक्ति देश है।
अवसाद वा विवाद का जहाँ न लेश है॥ पश्चिम...॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पल्योपम' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'अकोप' ने समस्त कोप को हरा।
प्रभु आप भक्त ने भी कर्म कोप को हरा॥ पश्चिम...॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अकोप' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निष्ठित' जिनेन्द्र धर्म प्रतिष्ठा को जगायें।
हम उनको पूज आत्म प्रतिष्ठा को बढ़ायें॥ पश्चिम...॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'निष्ठित' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मृगनाभि' जिन हमारी आस पूरी कीजिये।
हो मुक्ति गंध जिसमें वो कस्तूरी दीजिये॥ पश्चिम...॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मृगनाभि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवाधिदेव जिन प्रभु 'देवेन्द्र' हमारे।
सौ इन्द्र पूज्य आप हमें भव से उबारें॥ पश्चिम...॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'देवेन्द्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. लगा, 2. पवित्र।

जिनवर 'पदस्थ' का पदस्थ ध्यान कर रहे।
अस्वस्थ मन को ध्यान से हम स्वस्थ कर रहे॥
पश्चिम सुधातकी में, भरत क्षेत्र सुहाना।
तीर्थेश भूतकाल के, दे पुण्य खजाना॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पदस्थ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शिवनाथ' अनाथों के एक आप नाथ हो।
मुक्ति डगर पर हे जिनेन्द्र ! आप साथ दो॥ पश्चिम...॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'शिवनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अपरधातकीखण्ड द्वीपवर्ती भरतक्षेत्रस्थ श्री वृषभदेवादि शिवनाथपर्यंत भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छंद)

सुख-शांति की शुभ कामना से, शांतिधारा हम करें।
प्रभु रत्नत्रय की भावना से, दिव्य पुष्पाञ्जलि करें॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।

(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

(धत्ता)

श्री प्रभु की वाणी, वीणा पाणि, हम उसका रसपान करें।
जो जग कल्याणी, मोक्ष प्रदानी, प्रभु संग उसका ध्यान धरें॥

(शंभु छंद)

श्री अपर धातकी खण्ड महा, हम उसकी गाथा गाते हैं।
श्री भरत क्षेत्र का भूतकाल, उसकी चौबीसी ध्याते हैं॥
तीर्थंकर के उपदेशों को, हम जीवन में अपनायेंगे।
जो मंत्र नाथ ने हमें दिये, उनको हम जपते जायेंगे॥1॥

त्रिभुवन पूजित श्रमणेश्वर[1] भी, नित णमोकार को जपते हैं।
इस णमोकार को ध्याकर ही, वे भवसागर से तिरते हैं॥
जब-जब जिसने यह मंत्र जपा, उस प्राणी का उद्धार हुआ।
इस महामंत्र के साधक का, त्रिभुवन में जय-जयकार हुआ॥2॥

पहला पद है अरहंतों का, अरहंत देव को है वन्दन।
दूजा पद है श्री सिद्धों का, उन सब सिद्धों को है वन्दन॥
तीजे पद में आचार्य श्रेष्ठ, रत्नत्रय गुणनिधी के दानी।
चौथे पद धारी ऋषि शिक्षक, उनको पूजें बनने ज्ञानी॥3॥

पंचम पद में अनगार कहें, उन सर्व साधु को नमन करें।
इनका सुमिरण हर क्षण करके, हम निज पापों का हनन करें॥
अंजन[2] ने जब यह मंत्र जपा, वह संत बने शिवकंत बने।
मुनिराजों ने जब जपा मंत्र, वे संतों से अरहंत बने॥4॥

पापक ने मंत्र जपा ज्यों ही, पद उच्चकोटि का प्राप्त किया।
फिर धन्य कुंवर मुनिवर बनकर, सर्वार्थसिद्धी सुख प्राप्त किया॥

1. आचार्य, 1. अंजनचोर।

मृगसेन नाम धीवर ने भी, नवकार मंत्र का गान किया।
परभव में धनकीर्ति मुनि बन, सर्वार्थ सिद्धि प्रस्थान किया॥5॥

नवकार सुना इक कुत्ते ने, दुर्गति तज स्वर्ग प्रयाण किया।
दे नाग युगल को श्रेष्ठ मंत्र, पारस प्रभु ने कल्याण किया॥
सब सतियों का संकट मोचक, यह महामंत्र णवकार बना।
सोमा सति ने जब जपा मंत्र, तब नाग गले का हार बना॥6॥

सीता की अग्नि परीक्षा में, इससे ही अग्नि नीर हुई।
इस महामंत्र की महिमा से, द्रोपदी भी ना निष्चीर[1] हुई॥
जब सेठ सुदर्शन मंत्र जपे, शूली सिंहासन बन जाये।
श्रीपाल भूप इसके कारण, हर इक संकट पर जय पाये॥7॥

चलते-फिरते, खाते-पीते, इस महामंत्र को सब ध्याओ।
श्रद्धा से नित यह मंत्र जपो, मुनि बन शाश्वत सुख पा जाओ॥
शिव सुख साधन हित हम निशदिन, इस महामंत्र का मनन करें।
'गुप्तिनंदी' त्रय योग सहित, इस णमोकार को नमन करें॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पश्चिमधातकीखण्ड द्वीपवर्ती भरतक्षेत्रस्थ श्री वृषभदेवादि शिवनाथपर्यंत भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य तीनों काल में, श्री तीस चौबीसी भजे।
वो भव भ्रमण को नाशकर, सर्वोच्च शाश्वत सुख भजे॥
अति श्रेष्ठ उत्तम पुण्य पा, तीर्थेश पद भागी बने।
फिर अंत में त्रय 'गुप्ति' वर, निज आत्म गुण रागी बने॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

1. वस्त्ररहित।

(14) पश्चिम धातकीखंड द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(तर्ज- चौपाई-आंचलीबद्ध)

'विश्वचंद्र' प्रभु चंद्र समान, विश्व व्याप्त जिनका यशगान।
उन्हें नत भाल, अर्घ समर्पित भर-भर थाल।।
अपर धातकी भरत विशाल, तीर्थंकर जन्मे इस काल।
उन्हें नत भाल, अर्घ समर्पित भर-भर थाल।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विश्वचंद्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कपि सम चंचल मन को जीत, 'कपिल' करें शिवपथ से प्रीत।
उन्हें नत भाल.... अपर धातकी....।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'कपिल' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वृषभादिक पशु अणुव्रत पाल, 'वृषभदेव' की जपते माल।
उन्हें नत भाल.... अपर धातकी....।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'वृषभदेव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिववधु के प्रियतम 'प्रियतेज', पायें मोक्ष महल की सेज।
उन्हें नत भाल.... अपर धातकी....।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रियतेजो' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रशम' नाम भव तारक नाव, जिसमें प्रशमादिक चउ भाव।
उन्हें नत भाल.... अपर धातकी....।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रशम' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अमृत से प्रभु 'विषमांग', शिवरानी की भरते माँग।
उन्हें नत भाल.... अपर धातकी....।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विषमांग' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'चरित्र' का चरित महान्, करता सम्यक् चारित दान।
उन्हें नत भाल.... अपर धातकी....।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'चारित्रनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रभादित्य' की प्रभा अभेद, हरती रात दिवस का भेद।
उन्हें नत भाल, अर्घ समर्पित भर-भर थाल।।
अपर धातकी भरत विशाल, तीर्थंकर जन्मे इस काल।
उन्हें नत भाल, अर्घ समर्पित भर-भर थाल।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रभादित्य' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मुंजकेश' को हो नत भाल, मौजी बंधन करते बाल।
उन्हें नत भाल.... अपर धातकी....।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मुंजकेश' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वीतवास' प्रभुवर के पास, बैठूँ हरक्षण ये ही आस।
उन्हें नत भाल.... अपर धातकी....।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'वीतवास' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'सुराधिप' के पद आन, वरें सुरासुर सुर का ज्ञान।
उन्हें नत भाल.... अपर धातकी....।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुराधिप' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दयानाथ' प्रभु दीनदयाल, दया करें सब पर हर काल।
उन्हें नत भाल.... अपर धातकी....।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'दयानाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र सहस्रों नाम रचाय, प्रभु 'सहस्रभुज' के गुण गाय।
उन्हें नत भाल.... अपर धातकी....।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सहस्रभुज' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'जिनसिंह' सिंहवृत्ति पाल, तोड़े अष्ट करम के जाल।
उन्हें नत भाल.... अपर धातकी....।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'जिनसिंह' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब जन्मे प्रभु 'रैवतनाथ', ऐरावत लाये सुरनाथ।
उन्हें नत भाल.... अपर धातकी....।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'रैवतनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बाहुस्वामि' बाहुबल धार, कर्म शत्रु पर करते वार।
उन्हें नत भाल, अर्घ समर्पित भर-भर थाल।।
अपर धातकी भरत विशाल, तीर्थंकर जन्मे इस काल।
उन्हें नत भाल, अर्घ समर्पित भर-भर थाल।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'बाहुस्वामि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'श्रीमालि' प्रभु की माल, करती श्री से मालामाल।
उन्हें नत भाल.... अपर धातकी....।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'श्रीमालि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदहवाँ गुणथान 'अयोग', वरें योग हर नाथ अयोग।
उन्हें नत भाल.... अपर धातकी....।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अयोगदेव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योगीराज 'अयोगीनाथ' धरकर योग खड़े गिरिमाथ।
उन्हें नत भाल.... अपर धातकी....।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अयोगिनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कामरिपु' प्रभु का ले नाम, सिद्ध होय भक्तों के काम।
उन्हें नत भाल.... अपर धातकी....।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'कामरिपु' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब शुभ क्रिया करो आरंभ, तब बोलो जय जिन 'आरंभ'।
उन्हें नत भाल.... अपर धातकी....।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'आरम्भ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नेमिनाथ' को शीश नमाय, भक्त पाप तज पुण्य कमाय।
उन्हें नत भाल.... अपर धातकी....।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'नेमिनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गर्भज्ञाति' जिन के कल्याण, करते जन-जन का कल्याण।
उन्हें नत भाल.... अपर धातकी....।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'गर्भज्ञाति' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'एकार्जित' से अरजी एक, अब ना हो प्रभु जन्म अनेक।
उन्हें नत भाल, अर्घ समर्पित भर-भर थाल।।
अपर धातकी भरत विशाल, तीर्थंकर जन्मे इस काल।
उन्हें नत भाल, अर्घ समर्पित भर-भर थाल।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'एकार्जित' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी।।
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अपरधातकी खण्ड द्वीपवर्ती भरतक्षेत्रस्थ श्री विश्वचंद्रादि एकार्जितपर्यंत वर्तमानकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छंद)

सुख-शांति की शुभ कामना से, शांतिधारा हम करें।
प्रभु रत्नत्रय की भावना से, दिव्य पुष्पाञ्जलि करें।।
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।

(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- अपर धातकी भरत में, तीर्थंकर चौबीस।
वर्तमान युग में हुए, उन्हें झुकायें शीश।।

(चौपाई छंद)

जयश्री अपर धातकी न्यारा, उसमें भरत क्षेत्र मनहारा।
उसका पूज्यकाल यह प्यारा, प्रगटा जहाँ धर्म उजियारा।।1।।

उसके वर्तमान जिनराजा, चौबीसों जिन धर्म जहाजा।
उनने मोक्ष मार्ग दर्शाया, मुनि व श्रावक धर्म दिखाया॥2॥
षट् आवश्यक कर्म बतायें, दान व पूजा मुख्य कहाये।
पूजा के छह अंग रहे हैं, तीर्थंकर जिनदेव कहे हैं॥3॥
जिन अभिषेक प्रथम कहलाया, आह्वानन दूजा कहलाया।
तीजा संस्थापन कहलाया, चौथा सन्निधिकरण कहाया॥4॥
पंचम अष्ट द्रव्य से अर्चा, छठा विसर्जन अंतिम अर्चा।
इस विध जो जिन भक्ति रचाये, वो सब संकट कष्ट मिटाये॥5॥
मंत्र सहित जो नीर चढ़ाये, जन्म-जरा-मृत रोग नशाये।
जो जिन पद में गंध लगाये, वो निज भव संताप नशाये॥6॥
जो मुक्ताक्षत श्रेष्ठ चढ़ाता, वो ही अक्षय पद को पाता।
जिनपद में जो पुष्प चढ़ाये, काम नशे सुन्दर तन पाये॥7॥
जो षट्रस नैवेद्य चढ़ायें, सर्व क्षुधादिक रोग मिटायें।
जो जलते घृत दीप चढ़ाये, मोह नशे वो जिनपद पाये॥8॥
पावक में जो धूप चढ़ाये, वो निज आठों कर्म नशाये।
जो सुरभित फल गुच्छ चढ़ाये, वो ही मोक्ष महाफल पाये॥9॥
जो जिन सम्मुख अर्घ चढ़ाये, वो अनर्घपद निश्चय पाये।
ये सब तीर्थंकर की वाणी, मोक्ष प्रदानी जग कल्याणी॥10॥
हम सब तीर्थंकर को ध्यायें, अर्घ लिये जिनभक्ति रचायें।
'गुप्तिनंदी' भी जिनगुण गाये, क्रम से इक दिन जिनपद पाये॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पश्चिमधातकीखण्ड द्वीपवर्ती भरतक्षेत्रस्थ श्री विश्वचंद्रादि एकार्जितपर्यंत वर्तमानकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य तीनों काल में, श्री तीस चौबीसी भजे।
वो भव भ्रमण को नाशकर, सर्वोच्च शाश्वत सुख भजे॥
अति श्रेष्ठ उत्तम पुण्य पा, तीर्थेश पद भागी बने।
फिर अंत में त्रय 'गुप्ति' वर, निज आत्म गुण रागी बने॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(15) पश्चिम धातकीखंड द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ भविष्यत्कालीन 24 तीर्थंकर पूजा

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(गीता छंद)

प्रभु 'रक्तकेश' जिनेश के, तन का लहू है क्षीर सम।
वात्सल्य धारी नाथ को, ले द्रव्य पूजें आज हम॥
श्री अपर धातकी खण्ड में, श्री भरत क्षेत्र विशाल है।
उसके सभी तीर्थेश को, हम पूजते करताल ले॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'रक्तकेश' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चलते धरम का चक्र लख, वसु कर्म चक्कर खा गये।
श्री 'चक्रहस्त' जिनेश के, चक्रेश चरणन् आ गये॥ श्री...॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'चक्रहस्त' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते रहे 'कृतनाथ' की, त्रयकाल में आराधना।
कृतकृत्य होने के लिये, हम भी करें तप साधना॥ श्री...॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'कृतनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! 'परमेश्वर' प्रभो, तीनों जगत् के ईश हो।
सुर-नर तुम्हें कहते विभो, सर्वज्ञ हो जगदीश हो॥ श्री...॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'परमेश्वर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे सौम्य ! छवि प्रभु आपकी, शुभ सौम्यता दर्शा रही।
जिनवर 'सुमूर्ति' की प्रभा, सन्मार्ग पथ दिखला रही॥ श्री...॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुमूर्ति' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवपुर रमा को ब्याहने, श्री 'मुक्तिकांत' प्रभो चले।
शिवपुर रमा वरमाल ले, प्रभू आपका स्वागत करें॥ श्री...॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मुक्तिकांत' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'निकेशि' कर्म नश, पा जायेंगे शिवपुर वधू।
उनकी महाअर्चा रचा, हम भी वरें शिवपुर वधू॥
श्री अपर धातकी खण्ड में, श्री भरत क्षेत्र विशाल है।
उसके सभी तीर्थेश को, हम पूजते करताल ले॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'निकेशि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनका प्रशस्त प्रभावलय, करता प्रशस्त प्रभावना।
ऐसे 'प्रशस्त' जिनेश से, हमको मिले सद्भावना॥ श्री...॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रशस्त' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छद्मस्थ मुनि आहार ले, सर्वज्ञ निःआहार[1] हैं।
जिनवर 'निराहारेश' के, चैतन्य ज्ञानाहार है॥ श्री...॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'निराहार' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निश्चय अमूर्तिक आत्मा, शाश्वत अरूप अभिन्न है।
जिनवर 'अमूर्त' कहें सदा, यह जीव तन से भिन्न है॥ श्री...॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अमूर्त' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'द्विजनाथ' जिन दो जन्म[2] को, सार्थक करेंगे त्याग से।
संदेश सबको तब मिले, प्रभु आपके वैराग्य से॥ श्री...॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'द्विजनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में उसी का श्रेय है, जो श्रेय जिन भक्ति करे।
जिनदेव 'श्रेयोगत' सदा, भवि में अतुल शक्ति भरें॥ श्री...॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'श्रेयोगत' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'अरुज' से अर्ज है, मम प्रार्थना पर ध्यान दो।
हम पूजते वसुद्रव्य ले, सब भक्त का उत्थान हो॥ श्री...॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अरुजनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. कवलाहार रहित, 2. दूसरा जन्म अर्थात् दीक्षा।

श्री 'देवनाथ' जिनेश की, शत इन्द्र नित पूजा करें।
प्रभु के चरण में जो रहे, वो श्रेष्ठ सुख निश्चय वरे॥
श्री अपर धातकी खण्ड में, श्री भरत क्षेत्र विशाल है।
उसके सभी तीर्थेश को, हम पूजते करताल ले॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'देवनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का 'दयाधिक' नाम है, सब जीव पे करते दया।
हम पे दया करना विभो, मन तुम शरण में आ गया॥ श्री...॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'दयाधिक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'पुष्प जिन' के पाद में, हम पुष्प माला ले चले।
जो पुष्प से प्रभु को भजें, वो फूल सम फूले-फले॥ श्री...॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पुष्पनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरनाथ वा सुरनाथ से, 'नरनाथ' जिन पूजित हुए।
नरनाथ से नरनार सब, नरकादि से रक्षित हुए॥ श्री...॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'नरनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिकार कर्मों का करें, प्रीति करें हम आप से।
'प्रतिभूत' प्रभु कहते सदा, प्राणी डरो तुम पाप से॥ श्री...॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रतिभूत' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नागेन्द्र आदिक नागसुर, 'नागेन्द्र' प्रभु को पूजते।
आकर शरण नागेन्द्र की, वो भक्ति रस में झूमते॥ श्री...॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'नागेन्द्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'तपोधिक' नाथ ने, हमको बताया तप करो।
द्वादश तपों को धारकर, प्राणी परम पद को वरो॥ श्री...॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'तपोधिक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश धर्म ही इस जीव की, निज आत्म शुद्धि करे सदा।
प्रभुवर 'दशानन' की शरण, सुख-शांति वृद्धि करे सदा॥
श्री अपर धातकी खण्ड में, श्री भरत क्षेत्र विशाल है।
उसके सभी तीर्थेश को, हम पूजते करताल ले॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'दशानन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वसुकर्म बंधन काटने, जिनदेव 'आरण्यक' चले।
अरि भी पराजित हो गये, इस लोक में दीपक जले॥ श्री...॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'आरण्यक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'दशानीक' ही हमें, भव दुर्दशा से तारते।
देकर दशा शिवलोक की, सबको जिनेश सुधारते॥ श्री...॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'दशानीक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सात्विक' सदा कहते हमें, सत् धर्म पथ अपनाइये।
सत् आचरण को पालकर, सात्विक स्वयं हो जाइए॥ श्री...॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सात्विक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पश्चिमधातकीखण्ड द्वीपवर्ती भरतक्षेत्रस्थ श्री रक्तकेशादि सात्विकपर्यन्त भविष्यत्कालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छंद)

सुख-शांति की शुभ कामना से, शांतिधारा हम करें।
प्रभु रत्नत्रय की भावना से, दिव्य पुष्पाञ्जलि करें॥

यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।
(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

(धत्ता छंद)

प्रभु की जयमाला, गा गुणमाला, आनंदामृत हम पायें।
हम खोलें ताला, शिवपुर वाला, मुक्तिपुरी में बस जायें॥

(दोहा)

पश्चिम धातकीखण्ड का, भारत वर्ष महान्।
वर्तमान चौबीस जिन, करें लोक कल्याण॥1॥

होते प्रभुवर आपके, श्रेष्ठ पञ्चकल्याण।
हम पूजें नित आपको, करने निज कल्याण॥2॥

हे जिन ! तुम उपदेश बिन, जीव महा दुःख पाय।
चौरासी लख योनि में, घूमें कष्ट उठाय॥3॥

चारों गति में ना मिले, सौख्य शांति सम्मान।
सच्चा सुख है मोक्ष में, पाते हैं भगवान॥4॥

रागद्वेष मद मोहवश, प्राणी पाप कमाय।
तीव्र कषायें जीव को, नरकों में ले जाय॥5॥

तीव्र वेदना हो वहाँ, क्षुधा तृषा तड़पाय।
मार काट दुःख भोगकर, मूरख पाप कमाय॥6॥

पशुगति में निशदिन मिले, छेदन भेदन मार।
वध बन्धन संत्रास नित, कष्टों का नहिं पार॥7॥

मानव गति में धर्म बिन, प्राणी पाप कमाय।
चार कषायों से सदा, जीव भ्रमें भरमाय॥8॥

देवगति में जन्म पा, सर्व सम्पदा पाय।
आयुकर्म के अंत में, कुछ भी साथ न जाय॥9॥

व्यथा सुनाई आपको, हे प्रभु ! दीनानाथ।
मुझ अनाथ पर हो दया, तीन लोक के नाथ॥10॥

चहुँगति के दुःख से बचा, करो नाथ ! उत्थान।
सम्यग्दर्शन ज्ञान संग, दो चरित्र का दान॥11॥

व्रत संयम धारण करें, शक्ति दो प्रभु आज।
'गुप्तिनंदि' को दो प्रभु, मोक्षपुरी का राज॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पश्चिम धातकीखण्ड द्वीपवर्ती भरतक्षेत्रस्थ श्री रक्तकेशादि सात्विकपर्यन्त भविष्यत्कालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य तीनों काल में, श्री तीस चौबीसी भजे।
वो भव भ्रमण को नाशकर, सर्वोच्च शाश्वत सुख भजे॥
अति श्रेष्ठ उत्तम पुण्य पा, तीर्थेश पद भागी बने।
फिर अंत में त्रय 'गुप्ति' वर, निज आत्म गुण रागी बने॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(16) पश्चिम धातकीखंड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

श्री 'सुमेरु' तीर्थेश को, इन्द्र सुमेरु लाय।
सहस अठोत्तर कुंभ से, महाभिषेक रचाय॥
अपर धातकी खण्ड में, ऐरावत मनहार।
उसके गत[1] चौबीस जिन, हम पूजें त्रयबार॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुमेरु' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जिनकृत' ने उपकृत किया, बतलाकर जिनधर्म।
उनकी अर्चा नित रचा, पायें हम शिवशर्म[2]॥ अपर...॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'जिनकृत' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कैटभनाथ' जिनेश ने, कर्म किट्टिका[3] नाश।
जग को ज्ञान प्रकाश दे, पाया मोक्ष निवास॥ अपर...॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'कैटभनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रशस्तदायक' नाथ ने, करके मार्ग प्रशस्त।
भव्यों को देकर अभय, किया पूर्ण आश्वस्त॥ अपर...॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रशस्तदायक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय दमन सिखा गये, श्री 'निर्दमन' जिनेश।
तुम सम ही बन जायें हम, करिये कृपा विशेष॥ अपर...॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'निर्दमन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्यागी कुलकर एक हैं, श्री 'कुलकर' तीर्थेश।
तीर्थंकर कुल के रहस्य, देते आप विशेष॥ अपर...॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'कुलकर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. भूतकालीन, 2. मोक्ष सुख, 3. कालिमा।

'वर्धमान' जिनराज से, यही मिले वरदान।
वर्धमान सम हम बने, करें आत्म उत्थान॥
अपर धातकी खण्ड में, ऐरावत मनहार।
उसके गत चौबीस जिन, हम पूजें त्रयबार॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'वर्धमान' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमृतेन्दु' तीर्थेश के, अमृत वचन अमोल।
अमृत है तप साधना, अर्चा है अनमोल॥ अपर... ॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अमृतेंदु' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

असंख्यात सुर वृन्द से, मंडित 'संख्यानंद'।
लेकिन तीनों काल में, उनके भक्त अनंत॥ अपर... ॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'संख्यानंद' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कामधेनु चिन्तामणी, देव 'कल्पकृत' आप।
मोक्ष सुफल दाता तुम्ही, कल्पवृक्ष हो आप॥ अपर... ॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'कल्पकृत' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोष हरें 'हरिनाथ' सब, हरते सब संताप।
पल में भक्तों के हरें, सारे पाप प्रलाप॥ अपर... ॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'हरिनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुतों का करके भला, 'बहुस्वामी' जिन आप।
मोक्ष महाफल पा लिया, फैला धर्म प्रताप॥ अपर... ॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'बहुस्वामि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'भार्गव' भगवान ने, जगा दिया सौभाग्य।
उनके पूजन ध्यान से, मिटता है दुर्भाग्य॥ अपर... ॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'भार्गव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'सुभद्र स्वामी' सदा, करें भद्र[1] कल्याण।
उनका धरले ध्यान जो, पाये वो निर्वाण॥
अपर धातकी खण्ड में, ऐरावत मनहार।
उसके गत चौबीस जिन, हम पूजें त्रयबार॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुभद्रस्वामि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पविपाणि' जिनदेव ने, प्राणी का कल्याण।
धर्मदेशना से किया, फिर पाया निर्वाण॥ अपर... ॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पविपाणि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पोषक हो जिनधर्म के, अघ शोषक भी आप।
नाम 'विपोषित' धन्य है, वृष उद्घोषक आप॥ अपर... ॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विपोषित' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म ब्रह्म में नित रमे, 'ब्रह्मचारि' जिनराज।
गणधर-नर-पशु-देव सब, द्वार खड़े नत आज॥ अपर... ॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ब्रह्मचारि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'असांक्षिक' से मिले, आत्म साक्षी का मार्ग।
हम भी तुम सम बन प्रभो !, पायें शिव सन्मार्ग॥ अपर... ॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'असांक्षिक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'चारित्रेश' जिनेश ने, धरा श्रेष्ठ चारित्र।
हम सब भी जिन ! आप सम, वरें श्रेष्ठ चारित्र !॥ अपर... ॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'चारित्रेश' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पारिणामिक' नाथ का, धन्य-धन्य है नाम।
दृढ़ रत्नत्रय साधकर, पाया तप परिणाम॥ अपर... ॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पारिणामिक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शाश्वतनाथ' जिनेश ने, पाया शाश्वत रूप।
हम शाश्वत उनको भजें, पाने मोक्ष अनूप॥ अपर... ॥21॥

1. सरल।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'शाश्वतनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम निधि शिवपुर विधि, देते हैं 'निधिनाथ'।
तुम सम निधि हम भी वरें, देना जिनवर साथ॥
अपर धातकी खण्ड में, ऐरावत मनहार।
उसके गत चौबीस जिन, हम पूजें त्रयबार॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'निधिनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप गुणों के कोष हो, जिनमत पोषक आप।
शोषक मिथ्या मार्ग के, श्री जिन 'कौशिक' आप॥ अपर...॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'कौशिक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'धर्मेश' जिनेश ने, बतलाया जिनधर्म।
जग में धर्म प्रचार कर, अन्त वरा शिवशर्म॥ अपर...॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'धर्मेश' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पश्चिम धातकीखंड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री सुमेरुआदि धर्मेशपर्यंत भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छंद)

सुख-शांति की शुभ कामना से, शांतिधारा हम करें।
प्रभु रत्नत्रय की भावना से, दिव्य पुष्पाञ्जलि करें॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।
(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- ढाई द्वीप के मध्य में, अपर धातकी खण्ड।
जिनवर के उपदेश से, मिटता मोह प्रचण्ड॥

(शेर छंद)

हम अपर धातकी के, सर्व तीर्थ को ध्यायें।
ऐरावती[1] नगर के तीर्थ नाथ को ध्यायें॥
उसके अतीत काल[2] की चौबीसी का यहाँ।
पूजा विधान भक्ति गीत गान है महा॥1॥

जिन अष्ट कर्म नाश सर्व श्रेष्ठ बने थे।
चौबीस नाथ तीन लोक पूज्य बने थे॥
हम अष्ट द्रव्य लेय आज भक्ति रचायें।
फिर आपके समान अष्ट कर्म नशायें॥2॥

वसु द्रव्य अर्चना का फल विशेष मिलेगा।
प्रभु ! भक्त आपका त्रिलोक पूज्य बनेगा॥
परमेष्ठी[3] पाँच को जो शुद्ध नीर चढ़ाये।
त्रय रोग नाश सर्व सौख्य शीघ्र ही पायें॥3॥

संसार ताप नाशने जो गंध चढ़ाते।
वो गंधवान लोकपूज्य देह उपाते[4]॥
मुक्ता अखण्ड शालिपुञ्ज जो भी चढ़ाये।
वो दीप्य भवन पा अखण्ड़ सौख्य को पाये॥4॥

1. ऐरावत क्षेत्र, 2. भूतकाल, 3. पंच परमेष्ठी, 4. पाते हैं।

पुष्पों की वृष्टि कर जो काम शत्रु नशाये।
वो पुष्पयान पाये कामदेव कहाये।।
नैवेद्य के विशाल थाल जो भी चढ़ाता।
दारिद्र कष्ट रोग अपना वो ही मिटाता।।5।।

दीपक चढ़ा मिटे कुकर्म मोह विशाला।
ये दीपदान भी दिलाये ज्ञान उजाला।।
सुरभित मनोज्ञ धूप जो भी भक्त चढ़ाये।
वो पूर्ण स्वस्थ देह पाय कर्म नशाये।।6।।

नाना प्रकार फल के थाल जो भी चढ़ाये।
जो इष्ट फल को पाके शीघ्र मोक्ष में जाये।।
इत्यादि आठ द्रव्य से जो अर्चना करे।
वो ऋद्धि-सिद्धी पाय कर्म वंचना हरे।।7।।

हम श्रेष्ठ-श्रेष्ठ द्रव्य से जिनेश को जजें।
दिन-रात आप नाम हम तो ! भक्ति से भजें।।
हे नाथ ! भक्त पे सदा प्रसाद कीजिये।
मुझ 'गुप्तिनंदी' को भी मोक्ष राज दीजिए।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं पश्चिम धातकीखंड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री सुमेरुआदि धर्मेशपर्यंत भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य तीनों काल में, श्री तीस चौबीसी भजे।
वो भव भ्रमण को नाशकर, सर्वोच्च शाश्वत सुख भजे।।
अति श्रेष्ठ उत्तम पुण्य पा, तीर्थेश पद भागी बने।
फिर अंत में त्रय 'गुप्ति' वर, निज आत्म गुण रागी बने।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(17) पश्चिमधातकी खंड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अवतार छंद (तर्ज-यह अर्घ कियो...)

हम सब मिल भक्ति रचाय, 'साधित' जिनवर की।
सब मिल जयकार लगाय, साधित प्रभुवर की।।
हम अपर धातकी द्वीप, ऐरावत जायें।
इस युग के प्रभु चौबीस, उनको हम ध्यायें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'साधित' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जिनस्वामी' जन मन ईश, तुमको भक्त नमे।
जिन चरण झुकायें शीश, दो आशीष हमें।। हम अपर..।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'जिनस्वामि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शत इन्द्र खड़े तुम द्वार, कीर्त्तन करते हैं।
सब 'स्तमित इन्द्र' के द्वार, अर्चन करते हैं।। हम अपर..।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'स्तमितेन्द्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'अत्यानंद'' समीप, आनंद मिलता है।
जलता है ज्ञान प्रदीप, जीवन खिलता है।। हम अपर..।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अत्यानंद' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'पुष्पोत्फुल्ल' महान, मोक्ष प्रदाता हैं।
करके उनका शुभ ध्यान, सुख मिल जाता है।। हम अपर..।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पुष्पोत्फुल्ल' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'मंडित' ! प्रभुवर आप, परमत खंड करें।
जिनमत ही है निष्पाप, कर्म प्रखंड करे।। हम अपर..।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मंडित' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'प्रहितदेव' जिनदेव, जग का हित करते।
सब पूजो सच्चे देव, ये सब दुःख हरते॥
हम अपर धातकी द्वीप, ऐरावत जायें।
इस युग के प्रभु चौबीस, उनको हम ध्यायें॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रहितदेव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'मदनसिद्ध' मद मार, लोक प्रसिद्ध हुये।
जिनने पाया प्रभु द्वार, वे भी सिद्ध हुये॥ हम अपर..॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मदनसिद्ध' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सौभाग्य जगे प्रभु द्वार, जिन गुण गाने से।
'हसदिंद्र' करें भव पार, ध्यान लगाने से॥ हम अपर..॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'हसदिंद्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'चंद्रपार्श्व' को देख, चंदा शरमाये।
करता आगम उल्लेख, वह तुमको ध्याये॥ हम अपर..॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'चंद्रपार्श्व' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'अब्जबोध' तीर्थेश, बोधि प्रदान करो।
हम धरें दिगम्बर वेष, प्रभु कल्याण करो॥ हम अपर..॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अब्जबोध' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जिन वल्लभ' परिग्रह छोड़, मुनिव्रत धार लिया।
कर्मों का बंधन तोड़, जग उद्धार किया॥ हम अपर..॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'जिनवल्लभ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुविभूतिक' भव सुख त्याग, समता भाव धरें।
हम कर उनसे अनुराग, उन सम भाव वरें॥ हम अपर..॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुविभूतिक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'कुकुद्भास' जिनराज, कुंदन सम तपते।
जो ध्याये तुमको आज, उसके दुःख मिटते॥
हम अपर धातकी द्वीप, ऐरावत जायें।
इस युग के प्रभु चौबीस, उनको हम ध्यायें॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'कुकुद्भास' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पूजें 'सुवरणनाथ', सुवरण थाल सजा।
कीर्त्तन कर नमते माथ, मंगल वाद्य बजा॥ हम अपर..॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुवर्णनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हरिवासक' हरते पाप, हर अज्ञानी का।
हम करते निशदिन जाप, त्रिभुवन ज्ञानी का॥ हम अपर..॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'हरिवासक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रियमित्र' जिनेश्वर देव, जग प्रिय कहलाये।
हम करते प्रभु की सेव, उनके गुण गायें॥ हम अपर..॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रियमित्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'धर्मदेव' का धर्म, जो भी धरता है।
वो पाता है शिवशर्म[1], जिनपद वरता है॥ हम अपर..॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'धर्मदेव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हमको लागी है प्रीत, 'प्रियरत' प्रभुवर से।
हम गायें उनके गीत, अर्चा के स्वर से॥ हम अपर..॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रियरत' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'नंदिनाथ' तीर्थेश, आनंद सुख दाता।
तुम सम बनने सर्वेश, मन तुमको ध्याता॥ हम अपर..॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'नंदिनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. मोक्षसुख।

श्री समवशरण के नाथ, 'अश्वानीक' बनें।
सुर-नर-पशु मुनि-गणनाथ, प्रभु के मीत बनें॥
हम अपर धातकी द्वीप, ऐरावत जायें।
इस युग के प्रभु चौबीस, उनको हम ध्यायें॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अश्वानीक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरब में 'पूरबनाथ', मुख चऊदिश दिखता।
इस अतिशय से जिननाथ!, सबका मन खिलता॥ हम अपर..॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पूरबनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'पार्श्वनाथ' भगवान, संकटहारी हो।
तीर्थंकर श्रेष्ठ महान, अतिशयकारी हो॥ हम अपर..॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पार्श्वनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'चित्रहृदय'! तीर्थेश, आ मम चित्त बसो।
हम पूजें नाथ हमेश, सारे पाप नशो॥ हम अपर..॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'चित्रहृदय' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह[1], हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पश्चिमधातकी खण्ड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री साधितादि चित्रहृदयपर्यंत वर्तमानकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छंद)

सुख-शांति की शुभ कामना से, शांतिधारा हम करें।
प्रभु रत्नत्रय की भावना से, दिव्य पुष्पाञ्जलि करें॥

1. महापूजा।

यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।
(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

(सोरठा)

पश्चिम धातकी खण्ड, वर्तमान चौबीस जिन।
दो आशीष अखण्ड, मिले मोक्ष सुख-सम्पदा॥

(अडिल्ल छंद)

पश्चिम धातकी के जिनेन्द्र तुमको नमन।
ऐरावत के सब ईश्वर तुमको नमन॥
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर को नमन।
जयमाला की माल चढ़ा करते नमन॥1॥

पञ्चकल्याणक युक्त नाथ तुमको नमन।
समवशरण के नाथ तुम्हें निशदिन नमन॥
सुर असुरों से पूज्य नाथ तुमको नमन।
तीन लोक के वंद्य नाथ तुमको नमन॥2॥

केवलज्ञानी तीर्थंकर जिन को नमन।
वीतराग विज्ञानी जिन तुमको नमन॥
सर्वज्ञेय ज्ञाता-दृष्टा जिन को नमन।
हित उपदेशक मोक्ष प्रदर्शक को नमन॥3॥

आठों कर्म विनाशी जिन तुमको नमन।
सिद्धलोक के वासी जिन तुमको नमन॥
सर्व शोक दुःखहर्त्ता जिन तुमको नमन।
गुण अनंत के भर्त्ता जिन तुमको नमन॥4॥

शुद्ध बुद्ध परमेश्वर श्री जिन को नमन।
विश्व विलोकी आत्म सुलोचन को नमन॥
करें सदा हम त्रिभुवन रक्षक को नमन।
मोक्ष मार्ग के पथ दर्शक तुमको नमन॥5॥

सहस-अठोत्तर-संज्ञाधर[1] तुमको नमन।
ऋद्धि-सिद्धी दातार जिनेश्वर को नमन॥
शरणागत के आश्रयदाता को नमन।
'गुप्तिनंदी' का तुम्हें अनंतों हो नमन॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पश्चिमधातकी खण्ड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री साधितादि चित्रहृदयपर्यंत वर्तमानकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य तीनों काल में, श्री तीस चौबीसी भजे।
वो भव भ्रमण को नाशकर, सर्वोच्च शाश्वत सुख भजे॥
अति श्रेष्ठ उत्तम पुण्य पा, तीर्थेश पद भागी बने।
फिर अंत में त्रय 'गुप्ति' वर, निज आत्म गुण रागी बने॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

1. एक हजार आठ नामधारी।

(18) पश्चिम धातकी खंड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ भविष्यत्कालीन 24 तीर्थंकर पूजा

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

जहाँ 'रवीन्दु' नाथ हो, वहाँ रहे ना पाप।
रवि तो सब को ताप दे, आप हरें संताप॥
पश्चिम धातकी खण्ड में, ऐरावत[1] सुख धाम।
उसकी चौबीसी सदा, पूजें भव्य ललाम॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'रवीन्दु' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सौम्य छवि जिन आपकी, हर्षाये द्वय नैन।
'सौमकुमार' जिनेश ही, देंगे मन का चैन॥ पश्चिम...॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सौमकुमार' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पृथ्वी पर अवतीर्ण हो, 'पृथ्वीवान्' जिनेश।
पृथक् करेंगे पाप को, धन्य करेंगे देश॥ पश्चिम...॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पृथ्वीवान्' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मेंगे 'कुलरत्न' जब, हर्षित सारा लोक।
धन्य बनेंगे इन्द्र तब, बालप्रभू अवलोक॥ पश्चिम...॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'कुलरत्न' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्मनाथ' भगवान का, यही एक संदेश।
धर्मध्यान के साथ में, धरो दिगम्बर वेष॥ पश्चिम...॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'धर्मनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम 'सोमजिन' आपका, शशि से अधिक महान।
सोमादिक भजते उन्हें, करने निज कल्याण॥ पश्चिम...॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सोमजिन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. ऐरावत क्षेत्र।

श्री 'वरुणेंद्र' जिनेश से, मिले मुक्ति आशीष।
इन्द्र-वृन्द-मुनिगण खड़े, जिन सम्मुख नत शीश॥
पश्चिम धातकी खण्ड में, ऐरावत सुख धाम।
उसकी चौबीसी सदा, पूजें भव्य ललाम॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'वरुणेंद्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अभिनंदन' के नाम से, नाच उठा मन मोर।
स्वागत करते आपका, भविजन भाव विभोर॥ पश्चिम... ॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अभिनंदन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वनाथ' भगवान का, कभी ना छूटे साथ।
इस असार संसार में, पकड़ो प्रभू का हाथ॥ पश्चिम... ॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सर्वनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ दृष्टि है आपकी, हे 'सुदृष्टि' जिन देव।
समदृष्टि उसको मिले, करते जो प्रभु सेव॥ पश्चिम... ॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुदृष्टि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शिष्ट' नाथ जो भी कहें, उनके वचन प्रमाण।
भविजन सुन जिनदेशना, करें आत्म कल्याण॥ पश्चिम... ॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'शिष्ट' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन्य हमारे भाग्य हैं, पाकर 'धन्य' जिनेश।
सुर-नर-किन्नर नित नमें, अर्चें नित्य गणेश[1]॥ पश्चिम... ॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'धन्य' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदा से शीतल अधिक, 'सोमचंद्र' जिन आप।
शीतल छाया नाथ की, हर लेती संताप॥ पश्चिम... ॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सोमचंद्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धक्षेत्र को पायेंगे, श्री जिन 'क्षेत्राधीश'।
कर्म काटने हम सदा, उन्हें नमायें शीश॥ पश्चिम... ॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'क्षेत्राधीश' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. गणधर भगवान।

होवे सत् का अंत ना, कहें 'सदंतिकनाथ'।
सत्पथ पर जो भी चले, उसको दें प्रभु साथ॥
पश्चिम धातकी खण्ड में, ऐरावत सुख धाम।
उसकी चौबीसी सदा, पूजें भव्य ललाम॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सदंतिकनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जयंतदेव' जिनेश ने, कर्म शत्रु को मार।
त्रिभुवन में गुंजायेंगे, शासन का जयकार॥ पश्चिम... ॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'जयंतदेव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तमोरिपु' तम दूरकर, पायें ज्ञान प्रकाश।
ऐसे ही सद्ज्ञान से, होता आत्म विकास॥ पश्चिम... ॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'तमोरिपु' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'निर्मितदेव' की, भक्ति में हम लीन।
पर निमित्त को छोड़कर, होवें आतम लीन॥ पश्चिम... ॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'निर्मितदेव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर 'कृतपार्श्व' जिन, सबके कष्ट मिटाय।
कृपादृष्टि प्रभु आपकी, हम पर भी हो जाय॥ पश्चिम... ॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'कृतपार्श्व' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बोधि समाधि निधान हो, 'बोधिलाभ' जिनराज।
तुम समान पद प्राप्त हो, मिले मोक्ष साम्राज्य॥ पश्चिम... ॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'बोधिलाभ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति में आनंद है, कहें नाथ 'बहुनंद'।
भक्ति का आनंद ही, काटे भव का फंद॥ पश्चिम... ॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'बहुनंद' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृष्टि मिले जब नाथ से, दृष्टि विमल हो जाय।
देव 'सुदृष्टि' हमें सदा, सम्यक्दृष्टि बनाय॥ पश्चिम... ॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुदृष्टि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन में कुंकुम मिला, प्रभु को नित्य चढ़ाय।
'कंकुमनाभ' जिनेश की, पूजन भक्त रचाय॥
पश्चिम धातकी खण्ड में, ऐरावत सुख धाम।
उसकी चौबीसी सदा, पूजें भव्य ललाम॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'कंकुमनाभ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ लांछन श्री वत्स से, सज्जित प्रभु वक्षेश।
सबके वक्षस्थल रहें, पूजें हम परमेश॥ पश्चिम...॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'वक्षेश' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ श्री भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पश्चिम धातकी खण्ड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री स्वीन्दु आदि वक्षेशपर्यंत भविष्यत्कालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छंद)

सुख-शांति की शुभ कामना से, शांतिधारा हम करें।
प्रभु रत्नत्रय की भावना से, दिव्य पुष्पाञ्जलि करें॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।

(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

धत्ता छंद- ऐरावत प्यारा, क्षेत्र हमारा, पश्चिम धातकी खण्ड महा।
चौबीस जिनंदा, त्रिभुवन चंदा, त्रिभुवन प्रभु को पूज रहा॥

(रोला छंद)

पश्चिम धातकी खण्ड, उत्तम क्षेत्र विशाला।
ऐरावत शुभ नाम, उसकी यह जयमाला॥
आगत जिन चौबीस, उनको नमन हमारा।
दो भगवन् आशीष, पायें दर्श तुम्हारा॥1॥
समवशरण में भव्य, मंगल द्रव्य चढ़ाते।
वसु द्रव्यों से पूज, प्रभु की महिमा गाते॥
आठों मंगल द्रव्य, जग का मंगल करते।
लेकर मंगल द्रव्य, हम प्रभु सम्मुख धरते॥2॥
दर्पण मंगलकार, प्रभु को भेंट चढ़ाते।
स्वर्ण रत्न के श्रेष्ठ, मंगल कुम्भ चढ़ाते॥
चौंसठ चंवर सजाय, अर्पें प्रभु के आगे।
ठौना सुन्दर लेय, भेंटें हम प्रभु आगे॥3॥
सुन्दर झारी लेय, प्रभु का न्हवन करायें।
चैत्य शिखर पर जाय, सुन्दर ध्वजा लगायें॥
पंखा करते भेंट, चाँदी सोने वाला।
स्वस्तिक श्रेष्ठ चढ़ाय, गायें हम जयमाला॥4॥
वसुविधि मंगल द्रव्य, इक सौ आठ बतायें।
हे जिन ! तुम्हें चढ़ाय, भक्त सुखी हो जाये॥
'गुप्तिनंदी' भी आज, हे जिन ! तुमको ध्याये।
कर्म काष्ठ को काट, शीघ्र सिद्ध हो जाये॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पश्चिम धातकी खण्ड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री स्वीन्दु आदि वक्षेशपर्यंत भविष्यत्कालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य तीनों काल में, श्री तीस चौबीसी भजे।
वो भव भ्रमण को नाशकर, सर्वोच्च शाश्वत सुख भजे॥
अति श्रेष्ठ उत्तम पुण्य पा, तीर्थेश पद भागी बने।
फिर अंत में त्रय 'गुप्ति' वर, निज आत्म गुण रागी बने॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(19) पूर्व पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ भूतकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(गीता छंद)

'दमनेंद्र' जिन को पूज हम, निज ताप का करते दमन।
शुभ भाव की ज्योति जगे, इस भाव से करते नमन॥
श्री पूर्व पुष्कर द्वीप में, शुभ भरत क्षेत्र विशाल है।
उसके अतीत[1] जिनेश को, हम अर्चते त्रयकाल में॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'दमनेंद्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'मूर्तस्वामी' ने कहे, हैं द्रव्य छह इस लोक में।
निज मूर्त्त कर्मों को नशा, प्रभुवर गये शिवलोक में॥ श्री पूर्व... ॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मूर्तस्वामि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वैराग्य स्वामी' ने हमें, वैराग्य पथ दिखला दिया।
संसार का वैभव तजा, निज मोक्ष सुख को पा लिया॥ श्री पूर्व... ॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विरागस्वामि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'प्रलंब' महान हैं, अवलंब हैं त्रय लोक के।
भवि जीव को अवलम्ब दें, आत्मोत्थ सुख अवलोकते॥ श्री पूर्व... ॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रलंब' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पृथ्वीपती' जिनराज से, सम्पूर्ण पृथ्वी धन्य है।
तीर्थंकरों के जन्म से, यह लोक अतिशय धन्य है॥ श्री पूर्व... ॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पृथ्वीपति' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'चारित्रनिधि' बतला रहे, चारित्र धारण की विधि।
जो धारता चारित्र को, उसको मिलेगी सुख निधि॥ श्री पूर्व... ॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'चारित्रनिधि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थेश 'अपराजित' जहाँ, मन में विराजित हो गये।
कामादि वसु वैरी वहाँ, तत्क्षण पराजित हो गये॥ श्री पूर्व... ॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अपराजित' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. भूतकाल की चौबीसी।

जिनवर 'सुबोधक' बोध दो, मम आतमा का शोध हो।
अर्चा करें हम आपकी, ऐसा हमें श्रुत बोध दो॥
श्री पूर्व पुष्कर द्वीप में, शुभ भरत क्षेत्र विशाल है।
उसके अतीत जिनेश को, हम अर्चते त्रयकाल में॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुबोधक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बुद्धीश' बुद्धि प्रदान कर, सद्बुद्धि का वरदान दो।
हम पूजते प्रभू आपको, गुण बोधि दुर्लभ ज्ञान हो॥ श्री पूर्व... ॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'बुद्धीश' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'वैतालिक' जहाँ, वैताल भी उनको भजें।
हम अष्ट द्रव्य सजा-सजा, नित भक्ति से उनको जजे॥ श्री पूर्व... ॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'वैतालिक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निश्चय 'त्रिमुष्टि' जिन अहा, त्रयकाल के ज्ञाता बने।
हम तीनकाल त्रियोग से, जिनभक्ति कर निज दुःख हने॥ श्री पूर्व... ॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'त्रिमुष्टि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मुनिबोध' ने निज बोधि से, संसार वैभव तज दिया।
मुनिराज बनकर आपने, मुनिधर्म का परिचय दिया॥ श्री पूर्व... ॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मुनिबोध' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन धर्म तीर्थ बता रहे, श्री 'तीर्थ स्वामि' जिन हमें।
तीर्थंकरों की देशना, सन्मार्ग दिखलाती हमें॥ श्री पूर्व... ॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'तीर्थस्वामि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थेश 'धर्माधीश' ने, जिनधर्म का अमृत दिया।
जो आ गया उनकी शरण, उसने सहज अमृत पिया॥ श्री पूर्व... ॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'धर्माधीश' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धरणेश' प्रभु की देशना, गणधर मुनीश्वर झेलते।
प्रभु का परम सानिध्य पा, श्रुत वृक्ष में नित खेलते॥श्री पूर्व... ॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'धरणेश' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का प्रभाव महान है, त्रय लोक में ही छा रहा।
श्री मान 'प्रभव' जिनेश की, शरणार्थ मन अकुला रहा॥
श्री पूर्व पुष्कर द्वीप में, शुभ भरत क्षेत्र विशाल है।
उसके अतीत जिनेश को, हम अर्चते त्रयकाल में॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रभवदेव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसका ना आदि अंत है, वो ही 'अनादिदेव' हैं।
ऐसे प्रभु की शरण में, मिटते करम स्वयमेव हैं॥ श्री पूर्व...॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अनादिदेव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! हमने आज तक, बस आपको पूजा नहीं।
अब श्री 'अनादि प्रभु' मिले, हम पूजते निश्चय यही॥ श्री पूर्व...॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अनादि जिनेन्द्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सर्वतीर्थ जिनेश से, सब तीर्थ पूजित हो गये।
श्री 'सर्वतीरथनाथ' ध्या, हम सब प्रफुल्लित हो गये॥ श्री पूर्व...॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सर्वतीर्थनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपमा रहित जिन आप ही, निर्मल व 'निरुपमदेव' हैं।
अर्चा करें नित आपकी, जिनवर बने स्वयमेव में॥ श्री पूर्व...॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'निरुपमदेव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुकुमारता उस काल की, प्रभु आप में झलके सदा।
जिननाथ 'कौमारिक' अहा, नाशे सभी दुःख आपदा॥ श्री पूर्व...॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'कौमारिक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्यात्मा के पुण्य से, होता जिनेश्वर का गमन।
'सुविहार गृह' जिनराज को, मस्तक झुका करते नमन॥ श्री पूर्व...॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विहारगृह' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! 'धरणीश्वर' प्रभो, तुम ही धरा के ईश हो।
त्रय लोक के जगदीश को, भविजन भजें नत शीश हो॥ श्री पूर्व...॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'धरणीश्वर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर विकास प्रकाश से, विश्वास आत्मप्रकाश दे।
सिद्धात्म पद के लाभ तक, हमको अशेष विकास दें॥
श्री पूर्व पुष्कर द्वीप में शुभ, भरत क्षेत्र विशाल है।
उसके अतीत जिनेश को, हम अर्चते त्रयकाल में॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विकासदेव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्व पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती भरतक्षेत्रस्थ श्री दमनेंद्रादि विकासदेवपर्यंत भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छंद)

सुख-शांति की शुभ कामना से, शांतिधारा हम करें।
प्रभु रत्नत्रय की भावना से, दिव्य पुष्पाञ्जलि करें॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।

(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- चौबीसी गतकाल की, अतिशयवान महान।
उसके सब तीर्थेश का, करते हैं हम ध्यान॥

(चौपाई)

पूर्व द्वीप पुष्कर हम ध्यायें, पुष्प चढ़ा जयमाला गायें।
भरत क्षेत्र उसमें मनहारी, भूतकाल चौबीसी प्यारी॥1॥

जिन अवतार[1] सदा सुख लाये, सर्वजीव में आनंद छाये।
मात-पिता भी अति हर्षायें, पंच महोत्सव[2] इन्द्र मनायें॥2॥
धरती अंबर स्वर्ग सरीखा, प्रभु प्रति-प्रीति ने जग खींचा।
प्रभु का है वात्सल्य अनोखा, पार लगाते भव से नौका॥3॥
वैरी अपना वैर भुलाते, प्रभु सन्मुख सब दौड़े आते।
सर्वकाल जिन पूजे जाते, हम सब उनको शीश झुकाते॥4॥
जब जिन ज्ञानावरण नशायें, केवलज्ञान उसी क्षण पायें।
कर्म दर्शनावरण विनाशें, दर्शन गुण पा स्व-पर प्रकाशे॥5॥
कर्मवेदनी को विनशाया, अव्याबाध परम सुख पाया।
मोहकर्म जिन जहाँ नशायें, क्षायिक सम्यक् गुण प्रगटायें॥6॥
आयुकर्म को जहाँ विनाशा, अवगाहन गुण पूर्ण विकासा।
नामकर्म ज्यों क्षय करते हैं, गुण सूक्ष्मत्व तुरत वरते हैं॥7॥
गोत्र कर्म जब प्रभु से हारे, अगुरुलघु गुण श्री जिन धारें।
अंतराय को जहाँ नशाया, गुण वीर्यत्व तुरत प्रगटाया॥8॥
कर्म मूल में आठ कहाये, ये सब मिल संसार बढ़ाये।
कुल इक सौ अड़तालीस सारे, तीर्थंकर के आगे हारे॥9॥
जीव अनंतानंत बताये, भेद कर्म के उतने गाये।
कर्म नाश वे शिवपुर जाये, 'गुप्तिनंदी' नित उनको ध्याये॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्व पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती भरतक्षेत्रस्थ श्री दमनेंद्रादि विकासदेवपर्यंत भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य तीनों काल में, श्री तीस चौबीसी भजे।
वो भव भ्रमण को नाशकर, सर्वोच्च शाश्वत सुख भजे॥
अति श्रेष्ठ उत्तम पुण्य पा, तीर्थेश पद भागी बने।
फिर अंत में त्रय 'गुप्ति' वर, निज आत्म गुण रागी बने॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

1. गर्भकल्याणक, 2. पंचकल्याणक

(20) पूर्व पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(चौपाई)

'जगन्नाथ' जगदीश कहायें, सोये जग को आप जगायें।
हम जिनवर से प्रीत लगायें, भक्ति भाव से शीश झुकायें॥
पुष्करार्द्ध पूरब सुखकारी, भरत क्षेत्र जिसका मनहारी।
वर्तमान चौबीसी न्यारी, जिसे सदा वन्दना हमारी॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'जगन्नाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व चराचर वस्तु प्रकाशें, क्रम से सारे कर्म विनाशें।
श्री 'प्रभास' जिनप्रभा जगायें, वह प्रकाश हम उनसे पायें॥ पुष्करार्द्ध..॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रभासनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर में स्वर दो हे 'स्वरस्वामी', भक्ति अनश्वर गूँजे स्वामी।
जो स्वर में प्रभु कीर्त्तन गाये, दुस्वर स्वर सुस्वर बन जाये॥ पुष्करार्द्ध..॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'स्वरस्वामी' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'भरतेश' भरत के देवा, सुर-नर-किन्नर करते सेवा।
पूजें भरत क्षेत्र के प्राणी, पाने प्रभु वाणी कल्याणी॥ पुष्करार्द्ध..॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'भरतेश' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीर्घ दृष्टि जिनवर की होती, प्रभुवर देते प्रज्ञा मोती।
'दीर्घानन' को जो भी ध्याये, दीर्घकाल वो नहीं भ्रमाये॥ पुष्करार्द्ध..॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'दीर्घानन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'विख्यातकीर्ति' को ध्यावे, वो विख्यात कीर्ति को पावे।
जो प्रभु का कीर्त्तन करवाये, उसकी यश कीर्ति जग गाये॥ पुष्करार्द्ध..॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विख्यातकीर्ति' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अवसानि' हमें बतलायें, पुण्य करो यह मार्ग बताये।
अवसर है ये बड़ा सुहाना, पूजा कर शुभ नृत्य रचाना॥ पुष्करार्द्ध..॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अवसानि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'प्रबोध' हैं बोधि प्रदाता, सम्यक् प्रज्ञा ज्योति प्रदाता।
ज्ञान बिना सुख कहीं न पावे, मिथ्याज्ञान हमें भटकावे ॥
पुष्करार्द्ध पूरब सुखकारी, भरत क्षेत्र जिसका मनहारी।
वर्तमान चौबीसी न्यारी, जिसे सदा वन्दना हमारी॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रबोध' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तपोनाथ' ने तप को धारा, कर्मों को उनने निस्तारा।
प्रभु ने द्वादश तप बतलाये, भव्य जीव उनको अपनाये॥ पुष्करार्द्ध..॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'तपोनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पावक' प्रभु जब ध्यान लगावें, ध्यानानल में कर्म जलावें।
पावक में हम धूप चढ़ायें, पापक से पावन बन जायें॥ पुष्करार्द्ध..॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पावक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिपुरेश्वर' त्रययुग[1] के ज्ञाता, तीन लोक इनको शिर नाता।
इनकी शरणा जो भी आता, रत्नत्रय का दीप जलाता॥ पुष्करार्द्ध..॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'त्रिपुरेश्वर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सौगत' सौभाग्य जगाये, सुप्त भाग्य को शीघ्र जगायें।
हम भी वह सौभाग्य जगायें, मोक्ष खजाना अब मिल जाये॥ पुष्करार्द्ध..॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सौगत' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वासव' प्रभु वसु कर्म नशायें, अष्टम वसुधा को वे पायें।
हम वसु द्रव्य लिए दर आये, वसु कर्मों को शीघ्र नशायें॥ पुष्करार्द्ध..॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'वासव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन को हरें 'मनोहर' स्वामी, मम मन राजो अन्तरयामी।
जिसके मन मनहर बस जावे, वो जग में मनहर पद पावे॥ पुष्करार्द्ध..॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मनोहर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'शुभकर्म ईश' बतलाते, शुभ भावों से पुण्य जगाते।
अशुभ छोड़ शुभ में लग जाओ, शुभ से शुद्ध भाव अपनाओ॥ पुष्करार्द्ध..॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'शुभकर्म ईश' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. तीन काल।

नाथ 'इष्टसेवित' की सेवा, देती इष्ट सुखों का मेवा।
इष्टानिष्ट विषय सब छूटें, कर्म श्रृंखलायें सब टूटें॥
पुष्करार्द्ध पूरब सुखकारी, भरत क्षेत्र जिसका मनहारी।
वर्तमान चौबीसी न्यारी, जिसे सदा वन्दना हमारी॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'इष्टसेवित' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र नरेन्द्र खड़े जिन द्वारे, जिन 'विमलेन्द्र' लगे मनहारे।
विमल मलों से मुक्त कराते, मन को विमल जिनेश बनाते॥ पुष्करार्द्ध..॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विमलेन्द्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्मवास' ने धर्म बताया, वस्तु स्वभाव धर्म बतलाया।
धर्म सर्वसुख को दिलवाता, धर्म दुःखों से मुक्त कराता॥ पुष्करार्द्ध..॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'धर्मवास' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'प्रसाद' को हम सब ध्यायें, मोक्ष प्रसाद शीघ्र पा जायें।
ज्ञान प्रसाद जिनेश्वर बाँटें, कर्म श्रृंखला सबकी काटें॥ पुष्करार्द्ध..॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रसाद' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभा प्रभु की चऊदिश फैले, मेटे वो मिथ्यात्व झमेले।
'प्रभामृगांक' प्रभा प्रगटाओ, जग से मिथ्या-तिमिर[1] हटाओ॥ पुष्करार्द्ध..॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रभामृगांक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'उज्झित' प्रभु ने वैभव त्यागा, कर्म कलंक दूर ही भागा।
हम सब उनकी भक्ति रचायें, अपने कर्म कलंक नशायें॥ पुष्करार्द्ध..॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'उज्झितकलंक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्फटिक प्रभा' जिन प्रभा जगायें, मोह असुर को शीघ्र भगायें।
प्रभा देख रवि-शशि शरमायें, वो भी प्रभु की भक्ति रचायें॥ पुष्करार्द्ध..॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'स्फटिकप्रभा' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'गजेन्द्र' की भक्ति रचाओ, ढ़ोल मंजीरा ताल बजाओ।
भर-भर थाली अर्घ चढ़ाओ, झूमो-नाचो पुण्य कमाओ॥ पुष्करार्द्ध..॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'गजेन्द्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. मिथ्यात्वरूपी अंधकार।

ध्यान नाथ ने चार बताये, शुक्ल ध्यान ही मोक्ष दिलाये।
भक्त 'ध्यानजय' की जय बोले, वे कर्मों के ताले खोलें॥
पुष्करार्द्ध पूरब सुखकारी, भरत क्षेत्र जिसका मनहारी।
वर्तमान चौबीसी न्यारी, जिसे सदा वन्दना हमारी॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ध्यानजय' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्व पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ श्री जगन्नाथादि ध्यानजयपर्यंत वर्तमानकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छंद)

सुख-शांति की शुभ कामना से, शांतिधारा हम करें।
प्रभु रत्नत्रय की भावना से, दिव्य पुष्पाञ्जलि करें॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिलें।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।

(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

धत्ता- पुष्कर के भगवन, तुमको वन्दन, जयमाला हम गाते हैं।
चरणों में आये, माल चढ़ायें, उत्तम नृत्य रचाते हैं॥

(जोगीरासा छंद)

पूरब पुष्कर अर्द्ध द्वीप में, भरत क्षेत्र मनहारी।
उसके वर्तमान चौबीस जिन, मोक्ष मार्ग दातारी॥

रत्नत्रय है उसका साधन, मोक्ष महापद देता।
जो रत्नत्रय धारण करता, मुक्ति रमा वर लेता॥1॥
ऐसे रत्नत्रय के प्रभु ने, तीन भेद बतलाये।
सम्यग्दर्शन जड़ है जिसकी, ज्ञान स्कंध कहाये॥
चारित[1] है उस तरु[2] की शाखा, फलश्री मुक्ति रमा है।
उसके धारी प्रभु के पद में, हर भव्यात्म नमा है॥2॥
एक अकेला सम्यग्दर्शन, मोक्ष नहीं पहुँचाता।
ज्ञान अकेला भी प्राणि को, मुक्ति नहीं दिलवाता॥
हो स्वतंत्र चारित्र पास गर[3], फिर भी मोक्ष न पाये।
तीनों का सम्यक् सम्मेलन, मोक्ष मार्ग कहलाये॥3॥
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण से, शिवपुर[4] दूर नहीं है।
जिसने इन तीनों को धारा, उसने मुक्ति लही[5] है॥
शिवरमणी के इच्छुक प्राणी, इन तीनों को धारें।
धारण करके रत्नत्रय को, सर्वकर्म निस्तारें॥4॥
समीचीन श्रद्धा के जिन ने, आठ भेद बतलाये।
आठ अंगमय सत्यज्ञान[6] भी, शुचिता दृढ़ता लाये॥
सम्यक्चारित है तेरह विध, इसको हम सब पालें।
'गुप्तिनंदी' अर्चन से खोले, मोक्षमहल के ताले॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्व पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ श्री जगन्नाथादि ध्यानजयपर्यंत वर्तमानकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य तीनों काल में, श्री तीस चौबीसी भजे।
वो भव भ्रमण को नाशकर, सर्वोच्च शाश्वत सुख भजे॥
अति श्रेष्ठ उत्तम पुण्य पा, तीर्थेश पद भागी बने।
फिर अंत में त्रय 'गुप्ति' वर, निज आत्म गुण रागी बने॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

1. सम्यक् चारित, 2 वृक्ष, 3. अगर, 4. मोक्षमहल, 5. प्राप्त की है, 6. सम्यक्ज्ञान।

(21) पूर्व पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ भविष्यत्कालीन 24 तीर्थंकर पूजा

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(नव छंद)

जिनवर 'बसंत ध्वज' आयेंगे, संयम बसंत महकायेंगे।
जो भी उनको नित ध्यायेंगे, कर्मों का अंत करायेंगे॥
पूरब पुष्करवर हम ध्यायें, शुभ भरत क्षेत्र को भी ध्यायें।
आगत चौबीसी हम ध्यायें, बहु अर्घ चढ़ाकर हर्षायें॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'बसंतध्वज' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिजयंत' त्रिजग के जेता हैं, वे मोक्षमार्ग के नेता हैं।
निर्दोष तीर्थ अभिनेता हैं, मन उनकी शरणा लेता है॥ पूरब..॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'त्रिजयंत' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिस्तंभ' नाम मनहारी है, अघ दंभ[1] दलन दुःखहारी है।
भवसागर शोषणकारी है, श्रुत खंभ जगत उपकारी है॥ पूरब..॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'त्रिस्तंभ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परब्रह्म' ब्रह्म के ज्ञाता हैं, चिद् ब्रह्म ज्ञान के दाता हैं।
आध्यात्मिक शांति प्रदाता हैं, भव्यों के भाग्य विधाता हैं॥ पूरब..॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'परब्रह्म' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव 'अबालिश' ईश बने, चक्री बलधर नत शीश घने।
हम उनको अर्चें पाप हने, जिनगुण अपनायें सिद्ध बने॥ पूरब..॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अबालिश' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'प्रवादी' वाद हरें, सत्यार्थ कुशल संवाद करें।
हम उनका जय-जय नाद करें, चैतन्य परम आल्हाद वरें॥ पूरब..॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रवादी' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. घमंड

श्री 'भूमानंद' जिनेश्वर से, भूमी आनंदित रहती है।
इस कारण वो प्रभु संगम पा, षट् ऋतु के फल से फलती है॥
पूरब पुष्करवर हम ध्यायें, शुभ भरत क्षेत्र को भी ध्यायें।
आगत चौबीसी हम ध्यायें, बहु अर्घ चढ़ाकर हर्षायें॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'भूमानंद' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिनयन' नैन के तारें हैं, भवसागर पार उतारे हैं।
वे ज्ञानामृत के प्याले हैं, हम सब उनके मतवाले हैं॥ पूरब..॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'त्रिनयन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विद्वान' परम विद्वान महा, करते विद्या का दान अहा।
हम करते प्रभु गुणगान यहाँ, उन सम बनने गुणवान महा॥ पूरब..॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विद्वान' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परमात्म प्रसंग' कुसंग हरें, सुर-नर मुनि उनका संग करें।
हम पूजें श्रेष्ठ सुसंग वरें, शुचि परमौदारिक अंग वरें॥ पूरब..॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'परमात्म प्रसंग' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भूमीन्द्र' नाथ को इन्द्र भजे, वसु द्रव्य चढ़ा अविराम जजे।
प्रभु पगरज से यह भूमि सजे, जिन अर्चा में सब वाद्य बजे॥ पूरब..॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'भूमीन्द्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गोस्वामी' सबके स्वामी हैं, सर्वज्ञ नयन अविरामी हैं।
हित उपदेशक निष्कामी हैं, परमार्थ मोक्ष के गामी हैं॥ पूरब..॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'गोस्वामी' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्याण जगत का जो करते, कल्याण पाँच को वो वरते।
'कल्याण प्रकाशित' को ध्याओ, कल्याण स्वयं का करवाओ॥ पूरब..॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'कल्याणप्रकाशित' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मंडल' ने बिना कमंडल ले, बहु तप साधा भूमंडल में।
जिनवर के आभा मंडल में, सुख-शांति मिले मुख मंडल में॥ पूरब..॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मंडल' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'महावसू' वसुधा त्यागी, शिवपुर वसुधा के अनुरागी।
वसुदेवादिक् जिनके रागी, अब लगन हमें उनसे लागी॥
पूरब पुष्करवर हम ध्यायें, शुभ भरत क्षेत्र को भी ध्यायें।
आगत चौबीसी हम ध्यायें, बहु अर्घ चढ़ाकर हर्षायें॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'महावसू' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युग 'उदयवान' का आयेगा, वह पुण्यकाल कहलायेगा।
जो 'उदयवान' को ध्यायेगा, वह पुण्य मोक्षफल पायेगा॥ पूरब..॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'उदयवान' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब 'दिव्य ज्योति' की ज्योत जगे, तब धर्मी ना खद्योत[1] लगे।
कैवल्य ज्ञान की ज्योत जगे, भव्यों के आठों कर्म भगे॥ पूरब..॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'दिव्यज्योति' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'प्रबोधेश' जब आयेंगे, आतम का बोध करायेंगे।
जो प्रबोधेश को ध्यायेंगे, वो शुद्ध-बुद्ध हो जायेंगे॥ पूरब..॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रबोधेश' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अभयांक' अभय का दान करें, वे भयहर धर्म प्रदान करें।
जो भयहर प्रभु का ध्यान करें, वो आतम सुख आदान[2] करे॥ पूरब..॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अभयांक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीप्रमित' अपरिमित सुखदाता, प्रिय हितकर शिवपथ के ज्ञाता।
जो प्रभु गुण गीता को गाता, वो मीत मुक्ति का बन जाता॥ पूरब..॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रमित' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'दिव्यस्फारक' जहाँ रहें, रत्नत्रय आभा वहाँ रहें।
प्रभु महापुरुषों की कथा कहे, जिनको गणधर जिन यथा कहे॥ पूरब..॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'दिव्यस्फारक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'व्रत स्वामी' जिन अवतारी हैं, वे पूर्ण महाव्रत धारी हैं।
जिनवर की करुणा भारी है, वे उत्तम व्रत दातारी हैं॥ पूरब..॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'व्रतस्वामी' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. जुग्नू, 2. ग्रहण।

जिनवर 'निधान' उत्थान करें, प्रज्ञा सुख-शांति प्रदान करें।
हम गुण निधान का ध्यान करें, जिनगुण अपना[1] कल्याण करें॥
पूरब पुष्करवर हम ध्यायें, शुभ भरत क्षेत्र को भी ध्यायें।
आगत चौबीसी हम ध्यायें, बहु अर्घ चढ़ाकर हर्षायें॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'निधान' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थेश 'त्रिकर्मा' कर्मजयी, पथ दिखलावें शिव शर्ममयी।
हम अर्चा कर उत्साहमयी, बन जावें प्रभु सम कर्मजयी॥ पूरब..॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'त्रिकर्मा' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्व पुष्करार्द्धद्वीपवर्ती भरतक्षेत्रस्थ श्री वसंतध्वजादि त्रिकर्मापर्यन्त भविष्यत्कालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छंद)

सुख-शांति की शुभ कामना से, शांतिधारा हम करें।
प्रभु रत्नत्रय की भावना से, दिव्य पुष्पाञ्जलि करें॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।

(9, 27 या 108 बार जाप करें)

1. अपनाकर।

जयमाला

दोहा– पुष्करमणि[1] की माल हम, प्रभु के चरण चढ़ाय।
जयमाला कर नाथ की, पुण्य विशेष बढ़ाय॥

(अवतार छंद)

शुभ पूरब पुष्कर द्वीप, उसमें भरत मही[2]।
प्रगटाने आत्म प्रदीप, हम जिन शरण गही[3]॥
जब दुखमा-सुखमा काल, उसमें आयेगा।
वो देगा धर्म विशाल, पुण्य बढ़ायेगा॥1॥

उसमें होंगे चौबीस, तीर्थंकर देवा।
आयेंगे सुर नतशीश, करने नित सेवा॥
जो करता प्रभु से प्रीत, निज मिथ्यात्व हरे।
वो गाकर प्रभु के गीत, समकित प्राप्त करे॥2॥

शत इन्द्र करें गुणगान, पूजन भजन करें।
होगा उनका उत्थान, जो नित नमन करें॥
भवनों के चालिस इन्द्र, प्रभु को ध्याते हैं।
व्यंतर के बत्तीस इन्द्र, भक्ति रचाते हैं॥3॥

वैमानिक चौबिस इन्द्र, अर्चें हर्षायें।
ज्योतिष के रवि शशि इन्द्र, प्रभु के दर आयें॥
औ मानुष गति का इन्द्र, चक्रि[4] भी आता।
पशुओं का इन्द्र मृगेन्द्र, पशुओं संग आता॥4॥

शत इन्द्रों से भगवान, नित पूजे जाते।
भवि पा प्रभु से वरदान, शांति सुधा पाते॥
हम भी आते दिनरात, प्रभु के चरणों में।
हे दीनबंधु जगनाथ, ले लो चरणों में॥5॥

1. पुखराज रत्न, 2. भूमि, 3. ग्रहण की, 4. चक्रवती।

हे नाथ ! हृदय में आन, सब दुःख विनशाओ।
हमको भी मोक्ष महान, जिनवर दर्शाओ॥
हम समकित गुण को पाय, मोह तिमिर नाशें।
त्रय 'गुप्ति' प्रगट हो जाय, निज भव दुःख नाशें॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपवर्ती भरतक्षेत्रस्थ श्री बसंतध्वजादि त्रिकर्मापर्यन्त भविष्यत्कालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य तीनों काल में, श्री तीस चौबीसी भजे।
वो भव भ्रमण को नाशकर, सर्वोच्च शाश्वत सुख भजे॥
अति श्रेष्ठ उत्तम पुण्य पा, तीर्थेश पद भागी बने।
फिर अंत में त्रय 'गुप्ति' वर, निज आत्म गुण रागी बने॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(22) पूर्व पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(काव्य छंद)

'कृतिनाथ' के द्वार, कीर्त्तन करने आये।
जो प्रभु कीर्त्तन गाय, यश कीर्ति वो पाये॥
ऐरावत शुभ नाम, पुष्कर पूर्व कहाये।
भूतकाल के सर्व, चौबिस जिन हम ध्यायें॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'कृतिनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन में तिष्ठो नाथ, हे 'उपविष्ट' जिनेशा।
सुर-असुरों से पूज्य, ऋषि मुनि नमें हमेंशा॥ ऐरावत...॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'उपविष्ट' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवों के आदित्य, 'देवादित्य' कहाते।
पाने ज्ञान सुदिव्य, हम प्रभु शरणा आते॥
ऐरावत शुभ नाम, पुष्कर पूर्व कहाये।
भूतकाल के सर्व, चौबिस जिन हम ध्यायें॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'देवादित्य' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री प्रभु 'आस्थानिक', आस्था सूत्र बतावें।
जिसको जिन श्रद्धान, वो निश्चय शिव पावे॥ ऐरावत...॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'आस्थानिक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'प्रचंद्र' का तेज, सबको शीतल करता।
मुख मंडल का तेज, सबके मन को हरता॥ ऐरावत...॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रचंद्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वेषिक' प्रभु का वेष, मुक्ति मार्ग दिखलाता।
प्रभुवर का संदेश, जीना हमें सिखाता॥ ऐरावत...॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'वेषिक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव 'त्रिभानु' आप, तीन लोक चमकायें।
दिनकर बनकर आप, तम अज्ञान नशायें॥ ऐरावत...॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'त्रिभानु' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ब्रह्म' नाथ धर ध्यान, परम ब्रह्म को पायें।
मिले ब्रह्म विज्ञान, ब्रह्म शरण हम आये॥ ऐरावत...॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ब्रह्म' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर 'वज्रांग', वज्र कर्म विनशायें।
आप नाम का जाप, वज्र कवच बन जाये॥ ऐरावत...॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'वज्रांग' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अविरोधी' तीर्थेश, कर्म विरोध नशायें।
रोग-शोक क्षय हेत, हम भी प्रभु को ध्यायें॥ ऐरावत...॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अविरोधी' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अपाप' की जाप, पाप मुक्त करवाती।
पुण्य करो भवि आप, प्रभु की भक्ति सिखाती॥
ऐरावत शुभ नाम, पुष्कर पूर्व कहाये।
भूतकाल के सर्व, चौबिस जिन हम ध्यायें॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अपाप' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाने लोकालोक, 'लोकोत्तर' जग स्वामी।
वास करें लोकाग्र, ये प्रभु अन्तरयामी॥ ऐरावत...॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'लोकोत्तर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जलधिशेष' का नित्य, शुभ अभिषेक करायें।
करके अर्चा भव्य, तीनों रोग नशायें॥ ऐरावत...॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'जलधिशेष' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विद्योत' विशेष, वीतराग विज्ञानी।
विश्व विधाता आप, पूजें हम सब प्राणी॥ ऐरावत...॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विद्योत' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'सुमेरु' को लेय, इन्द्र मेरु पे जाता।
करता जब अभिषेक, धन्य मेरु हो जाता॥ ऐरावत...॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुमेरु' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विभा आपकी नाथ, हमें प्रभावित करती।
देव 'विभावित' आप, पूजे तुमको धरती॥ ऐरावत...॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विभावित' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वत्सल' का वात्सल्य, धेनु वत्स सम न्यारा।
नाशे तीनों शल्य, करे धर्म उजियारा॥ ऐरावत...॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'वत्सल' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करने हम प्रभु जाप, चले जिनालय द्वारे।
नाथ 'जिनालय' आप, भव सागर से तारें॥ ऐरावत...॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'जिनालय' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'तुषार' ने आय, वैभव तृण सम छोड़ा।
भेद ज्ञान प्रगटाय, निज में निज को जोड़ा॥
ऐरावत शुभ नाम, पुष्कर पूर्व कहाये।
भूतकाल के सर्व, चौबिस जिन हम ध्यायें॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'तुषार' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन भुवन के भूप, त्रिभुवन को सुख देते।
'भुवन स्वामी' की आज, शरणा भविजन लेते॥ ऐरावत...॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'भुवनस्वामी' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाने शुभ का लाभ, कार्य सदा शुभ करना।
जिन 'सुकाम' की सीख, हमको मन में धरना॥ ऐरावत...॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुकाम' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'देवाधिदेव', देवों के भी देवा।
देव करें नित सेव, बनने को जिनदेवा॥ ऐरावत...॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'देवाधिदेव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव 'अकारिम' नाथ, इच्छा पूरी करते।
कर्म शत्रु को नाश, मुक्तिरमा को वरते॥ ऐरावत...॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अकारिम' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बिम्बित' प्रभु का बिम्ब, मन को मोहित करता।
अष्ट द्रव्य के साथ, भक्त जिनार्चन करता॥ ऐरावत...॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'बिम्बित' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्व पुष्करार्द्धद्वीपवर्ती ऐरावतक्षेत्रस्थ श्री कृतिनाथादि बिम्बितपर्यन्त भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छंद)

सुख-शांति की शुभ कामना से, शांतिधारा हम करें।
प्रभु रत्नत्रय की भावना से, दिव्य पुष्पाञ्जलि करें॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।
(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- पूरब पुष्कर द्वीप में, ऐरावत शुभ धाम।
तीर्थंकर जो हो चुके, उनको नित्य प्रणाम॥

(शंभु छंद)

पूरब पुष्करवर द्वीप श्रेष्ठ, उसमें इक ऐरावत नगरी।
उसकी गत[1] चौबीसी भजकर, हम पायें शाश्वत शिवनगरी[2]॥
हम पंचकल्याणक से पूजित, जिनवर की महिमा गाते हैं।
आशीष सभी जिन का पाने, मंगल जयमाला गाते हैं॥1॥
इस ढाई द्वीप में जहाँ-जहाँ, तीर्थंकर जिनवर होते हैं।
उन सबकी उत्तम अर्चा में, हम ध्यानमग्न नित होते हैं॥
इस जम्बूद्वीप में भरत और, ऐरावत क्षेत्र मनोहर हैं।
इसके कृतयुग[3] में त्रैकालिक, होते चौबीस तीर्थंकर हैं॥2॥
श्री पूर्वधातकी भरत क्षेत्र, उसमें होते चौबीस प्रभो।
उनको हम तीनों काल भजें, दो हमको निज पद दान विभो॥

1. भूतकालीन, 2. मोक्षनगरी, 3. दुखमा सुखमा काल में।

श्री पूर्वधातकी ऐरावत, उसके जिनवर को नित्य नमन।
उनकी त्रैकालिक पूजा से, होता पापों का पूर्ण शमन॥3॥

श्री अपर[1] धातकी खण्ड श्रेष्ठ, उसमें भरतैरावत मनहर।
उसके त्रैकालिक[2] जिनवर की, पूजा अर्चा है अति सुखकर॥
ये पुष्कर पुष्पों सा महके, पुष्पों सा भाग्य खिलाता है।
इसके भरतैरावत लखकर, भक्तों का मन हर्षाता है॥4॥

उसके तीर्थंकर देवों ने, देवों का मन ललचाया है।
जिस जिसने प्रभुओं को पूजा, उसने सुख वैभव पाया है॥
जम्बू धातकी व पुष्करार्द्ध, तीनों में क्षेत्र विदेह बसे।
जिनके तीर्थंकर विद्यमान, भव्यों के भव दुर्दैव नशे॥5॥

ये शाश्वत कर्म भूमियाँ हैं, जिनमें बत्तीस नगरियाँ हैं।
मिलती जिन वच से सदा जहाँ, शिवपथ की श्रेष्ठ डगरिया है॥
इनमें सीमंधर आदिक जिन, हम सबका मंगल करते हैं।
बीसों तीर्थंकर विद्यमान, कर्मों का दंगल हरते हैं॥6॥

इस विध हम सब तीर्थंकर का, अति उत्तम अर्चन करते हैं।
प्रभुओं के पूजक निश्चय से, कर्मों का भञ्जन करते हैं॥
हम आगमसम्मत द्रव्य लिये, सब तीर्थंकर का भजन करें।
यह 'गुप्तिनंदी' त्रय गुप्ति साध, अविराम[3] मोक्ष का वरण करे॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्व पुष्करार्द्धद्वीपवर्ती ऐरावतक्षेत्रस्थ श्री कृतिनाथादि बिम्बितपर्यन्त भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य तीनों काल में, श्री तीस चौबीसी भजे।
वो भव भ्रमण को नाशकर, सर्वोच्च शाश्वत सुख भजे॥
अति श्रेष्ठ उत्तम पुण्य पा, तीर्थेश पद भागी बने।
फिर अंत में त्रय 'गुप्ति' वर, निज आत्म गुण रागी बने॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

1. पश्चिम, 2. तीनों काल में, 3. बहुत जल्दी।

(23) पूर्व पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(अडिल्ल छंद)

कर्म नाश हम कंकर भी शंकर बने।
'शंकर' प्रभु की अर्चा से निज दुःख हने॥
पूर्व द्वीप पुष्कर ऐरावत नाम है।
उनके चौबीस जिन को नम्र प्रणाम है॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'शंकर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अक्षवास' श्री जिनवर अक्षय दान दें।
मन इन्द्रिय वश कर हम आत्म सुवास लें॥ पूर्व द्वीप...॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अक्षवास' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि दीक्षा बिन मुक्ति नहीं मिलती कभी।
'नग्नाधिष' जिनवर को नित पूजें सभी॥ पूर्व द्वीप...॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'नग्नाधिष' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नग्न दिगम्बर मुनियों के जो अधिपति।
श्री 'नग्नाधिपतीश' मुक्तिवधु के पति॥ पूर्व द्वीप...॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'नग्नाधिपतीश' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरी रूढ़ियाँ इनके तेज प्रचण्ड ने।
नष्ट किया पाखण्ड, 'नष्ट पाखण्ड' ने॥ पूर्व द्वीप...॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'नष्ट पाखण्ड' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वप्नवेद' को सारी धरती पूजती।
स्वप्न ज्ञान को श्री जिनवर से पूछती॥ पूर्व द्वीप...॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'स्वप्नवेद' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव 'तपोधन' में तप का उद्योत है।
तप ही धन है तप ही जीवन ज्योत है॥ पूर्व द्वीप...॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'तपोधन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुष्पकेतु' को पुष्प और केतु[1] चढ़ा।
दिन दूना व रात चौगुना सुख बढ़ा॥
पूर्व द्वीप पुष्कर ऐरावत नाम है।
उनके चौबीस जिन को नम्र प्रणाम है॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पुष्पकेतु' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हमें मिली है 'धार्मिक' प्रभु की देशना।
धर्म बिना सुख शांति रहे लव लेश ना॥ पूर्व द्वीप... ॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'धार्मिक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रकेतु को केतुग्रह वंदन करे।
प्रभु भक्तों के सर्वकर्म क्रंदन हरें॥ पूर्व द्वीप... ॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'चन्द्रकेतु' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अनुरक्त ज्योति' से नित अनुराग कर।
वीतराग पद पाये हम सब त्यागकर॥ पूर्व द्वीप... ॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अनुरक्तज्योति' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रागादिक अष्टादश दोषों को नशें।
'वीतराग' प्रभु मुक्तिमहल में जा बसे॥ पूर्व द्वीप... ॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'वीतराग' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'उद्योत' जिनेश्वर में वृष[2] ज्योत है।
केवलप्रज्ञा का शाश्वत उद्योत[3] है॥ पूर्व द्वीप... ॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'उद्योत' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तमोपेक्ष' ने तम अज्ञान मिटा दिया।
मोह विनाशक ज्ञान सूर्य प्रगटा दिया॥ पूर्व द्वीप... ॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'तमोपेक्ष' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'मधुनाद' जिनेश्वर में मन मुग्ध है।
जिनकी वाणी मानो मीठा दुग्ध है॥ पूर्व द्वीप... ॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मधुनाद' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. ध्वजा, 2. धर्म की, 3. प्रकाश।

श्री 'मरुदेव' कृपा करते संसार पे।
धर्म छाँव मिलती जिनवर के द्वार पे॥
पूर्व द्वीप पुष्कर ऐरावत नाम है।
उनके चौबीस जिन को नम्र प्रणाम है॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मरुदेव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन इन्द्रिय का दर्प हरा 'दमनाथ' ने।
दुःख से मुक्त किया प्रभुवर के साथ ने॥ पूर्व द्वीप... ॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'दमनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वृषभश्रेष्ठ वृषभेश 'वृषभस्वामि' महा।
वृषभ[1] मार्ग हे नाथ ! आप से मिल रहा॥ पूर्व द्वीप... ॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'वृषभस्वामि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव 'शिलातन' मोक्ष शिला को पा गये।
शल्य तीन हर शील धर्म बतला गये॥ पूर्व द्वीप... ॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'शिलातन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वनाथ' तीर्थेश विश्व को तारते।
वंदनीय विश्वेश वैर परिहारते॥ पूर्व द्वीप... ॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विश्वनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'महेन्द्र' के द्वार इन्द्र गण आ रहे।
श्री महेन्द्र को पूज, सुदर्शन पा रहे॥ पूर्व द्वीप... ॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'महेन्द्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नंद' प्रभु के पास धर्म आनंद है।
प्रभु पूजा से मिलता परमानंद है॥ पूर्व द्वीप... ॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'नंद' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'तमोहर' आप पाप तम को हरें।
जिन भक्ति का जोश चित्त में संचरै[2]॥ पूर्व द्वीप... ॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'तमोहर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. श्रेष्ठ, 2. बढ़े।

'ब्रह्मज' कर्म नशायें पायें ब्रह्म को।
आप भक्त पायें निश्चय चिद्ब्रह्म को॥
पूर्व द्वीप पुष्कर ऐरावत नाम है।
उनके चौबीस जिन को नम्र प्रणाम है॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ब्रह्मज' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्व पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री शंकरादि ब्रह्मजपर्यंत वर्तमानकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छंद)

सुख-शांति की शुभ कामना से, शांतिधारा हम करें।
प्रभु रत्नत्रय की भावना से, दिव्य पुष्पाञ्जलि करें॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।
(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- पूरब पुष्कर द्वीप में, ऐरावत शुभ धाम।
वर्तमान चौबीस जिन, सिद्ध करें सब काम॥

(जोगीरासा छंद)

पुष्कर द्वीप क्षेत्र ऐरावत, वर्तमान जिन स्वामी।
सब भव्यों के चित्त बसे हैं, चौबीसों जगनामी॥

सब जिनवर ने समकित गुण के, भेद अनेक बताये।
वीतराग एवं सराग ये, दो सम्यक्त्व कहाये॥1॥

सम्यग्दर्शन को पाने के, हेतु अनेक बताये।
उसमें जिन अभिषेक व पूजा, साधन श्रेष्ठ कहाये॥
पंचामृत अभिषेक सरलतम, साधन शास्त्र बताता।
जो श्रद्धा से इसको करता, वो सम्यक्त्व जगाता॥2॥

जल तरु रस वा गोरस तीनों, पंचामृत कहलाते।
भक्त इन्हें बहु घट में भरके, जिन अभिषेक रचाते॥
जल अभिषेक करें जो श्रावक, तीनों रोग नशाता।
इक्षुरस से न्हवन करें जो, सर्व सुखों को पाता॥3॥

प्रभु पर जो घृत धारा करता, बनता केवलज्ञानी।
क्षीर न्हवन से धवल स्वर्ग पा, पाता है शिवरानी॥
दहि की धारा जिन प्रतिमा सम, भाग्य सदा चमकाये।
सर्वौषधि अभिषेक क्रिया फल, सारे रोग भगायें॥4॥

चार कलश की धारा कर भवि, चहुँ गति भ्रमण मिटाये।
जिनवर पर चंदन का लेपन, सुरभित तन दिलवाये॥
पुष्प चढ़ा भवि काम नशाये, चरमोत्तम तन पाये।
मंगल आरति आर्त्त मिटाये, ज्ञान भानु प्रगटाये॥5॥

जिनवर पर गंधोदक धारा, मोक्ष प्रदान कराती।
महाशांतिधारा पूजक के, सब दुःख शांत कराती॥
ये उपदेश करें तीर्थंकर, उनको गणधर धारें।
उनको जैनाचार्य हमारे, जैनागम उच्चारें॥6॥

इस पर श्रद्धा करने वाला, दृढ़ सम्यक्त्व जगाता।
जो इस पर संदेह करे वो, भव-भव में भरमाता॥

1. ज्ञानादि अनंत चतुष्टय।

जिनवर की वाणी पर हम भी, दृढ़ श्रद्धान जगायें।
'गुप्तिनंदी' जिन मत अपनाकर, क्रम से जिनपद पायें॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्व पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री शंकरादि ब्रह्मजपर्यंत वर्तमानकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य तीनों काल में, श्री तीस चौबीसी भजे।
वो भव भ्रमण को नाशकर, सर्वोच्च शाश्वत सुख भजे॥
अति श्रेष्ठ उत्तम पुण्य पा, तीर्थेश पद भागी बने।
फिर अंत में त्रय 'गुप्ति' वर, निज आत्म गुण रागी बने॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(24) पूर्व पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ भविष्यत्कालीन 24 तीर्थंकर पूजा

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(कुसुमलता छंद)

यशोपताका जैन धर्म की, तीनों लोकों में फैलाय।
नाम 'यशोधर' होगा सार्थक, उनको हम सब शीश झुकाय॥
पूरब पुष्कर ऐरावत की, शोभा होगी स्वर्ग समान।
जब जन्मेंगे उस धरती पर, जय-जय तीर्थंकर भगवान॥1।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'यशोधर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुकृतकार्य करो भवि प्राणी, यही कहेंगे 'सुकृतनाथ'।
सुकृत प्रभु की पूजा करके, कृत्यकृत्य होंगे सुरनाथ॥ पूरब..॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुकृतनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अभयघोष' के समवशरण में, अभय दान होगा त्रयकाल।
भवभय से भयभीत जीव को, अभयघोष देंगे व्रतमाल॥ पूरब..॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अभयघोष' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-मोक्ष ये, होंगे पंचकल्याण महान।
जन्मेंगे 'निर्वाण' जिनेश्वर, पाने अंतिम पद निर्वाण॥
पूरब पुष्कर ऐरावत की, शोभा होगी स्वर्ग समान।
जब जन्मेंगे उस धरती पर, जय-जय तीर्थंकर भगवान॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'निर्वाण' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'व्रतवास' कहें हम सबसे, व्रत को धरो करो कल्याण।
एक बार जो व्रत को धारे, उसका क्रम से हो कल्याण॥ पूरब..॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'व्रतवास' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अतिराज' हमें देवेंगे, मोक्षराज का उत्तम राज।
उसी राज को जान समझकर, भव्य वरेंगे शिवपुर राज॥ पूरब..॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अतिराज' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अश्वदेव' की सेवा पूजा, सुरपति उत्सव से करवाय।
जिन चरणों में अर्घ चढ़ाकर, समता सुख में रमता जाय॥ पूरब..॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अश्वदेव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्जुन के दर रुनझुन-रुनझुन, घुंघरु सुर-नर नित्य बजाय।
'अर्जुन' प्रभु का अर्चन करके, अपनी अर्जी पूर्ण कराय॥ पूरब..॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अर्जुन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तपश्चन्द्र' प्रभु की तप किरणें, तपस्तेज जग में फैलाय।
तप से होती कर्म निर्जरा, सूत्र बतायेंगे श्री जिनराय॥ पूरब..॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'तपश्चन्द्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शारीरिक' प्रभु का उत्तम तन, मोक्ष प्रदर्शक सुख की खान।
कहते वे मानव का भव ही, उत्तम मोक्षप्रदायक जान॥ पूरब..॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'शारीरिक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'महेश' मन वश कर लेंगे, इन्द्रिय विषय कषायें जीत।
दिव्य देशना में देंगे वे, ईश्वर बनने की शुभ रीत॥ पूरब..॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'महेश' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'सुग्रीव' प्रभु का दर्शन, नाशेगा भव का संताप।
प्रभु दर्शन ही दिलवायेगा, शिवपुर लक्ष्मी आपो आप॥
पूरब पुष्कर ऐरावत की, शोभा होगी स्वर्ग समान।
जब जन्मेंगे उस धरती पर, जय-जय तीर्थंकर भगवान॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुग्रीव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दृढ़ प्रहार' व्रत के प्रहार से, कर देंगे कर्मों की हार।
फिर तो प्रभु के गुण अनंत ही, होंगे बंधु सखा परिवार॥ पूरब..॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'दृढ़प्रहार' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंबर से प्रभु 'अंबरीक' पे, होगी पुष्पों की बरसात।
पुष्प सभी सीधे आयेंगे, ये अतिशय होगा दिन-रात॥ पूरब..॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अंबरीक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दया आपकी हर प्राणी को, सहज सरलता से मिल जाय।
'दयातीत' प्रभुवर के द्वारे, सब में मैत्री बढ़ती जाय॥ पूरब..॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'दयातीत' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आतम अंबर को पाने, 'तुम्बर' देंगे धर्म अनूप।
तोड़ेंगे मिथ्या आडंबर, पायेंगे सिद्धों का रूप॥ पूरब..॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'तुम्बर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वशील' जिन शील धर्म के, अठदस सहस प्रकार बताय।
पञ्चशील अपनाने हम सब, सर्वशील जिनवर को ध्याय॥ पूरब..॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सर्वशील' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जातपात व पिण्ड शुद्धि को, बतलायेंगे प्रभु 'प्रतिजात।
वैवाहिक सम्बन्ध करो तुम, देख परखकर उत्तम जात॥ पूरब..॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रतिजात' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रियजेता नाथ 'जितेन्द्रिय', विश्व विजय के सूत्र बताय।
हम भी उन सम आत्मविजय कर, सच्ची विश्व विजय कर जाय॥ पूरब..॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'जितेन्द्रिय' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तपादित्य' प्रभु तप धारेंगे, तप में निज चैतन्य तपाय।
कर्म पिंड वे विनशायेंगे, शुक्ल ध्यान की अग्नि जलाय॥
पूरब पुष्कर ऐरावत की, शोभा होगी स्वर्ग समान।
जब जन्मेंगे उस धरती पर, जय-जय तीर्थंकर भगवान॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'तपादित्य' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रत्नाकर' की रत्नमूर्ति को, रंग-बिरंगे रत्न चढ़ाय।
रत्नचूर्ण का मंडल बनवा, अर्घ चढ़ायें मंगल गाय॥ पूरब..॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'रत्नाकर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शत इन्द्रों से पूजें जाते, श्री 'देवेश' प्रभो जगख्यात।
पाने को आशीष नाथ का, शीश झुकायें हम दिन-रात॥ पूरब..॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'देवेश' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म समय से ही प्रभुवर में, शुभ लक्षण होंगे मनहार।
'लांछन' प्रभु को लखकर सुरपति, भक्ति करेगा मंगलकार॥ पूरब..॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'लांछन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुप्रदेश की दिव्य देशना, सुनकर सबके आत्म प्रदेश।
व्रत संयम से कृत्यकृत्य हो, पायेंगे सिद्धों का देश॥ पूरब..॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुप्रदेश' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्व पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री यशोधरादि सुप्रदेशपर्यंत भविष्यत्कालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छंद)

सुख-शांति की शुभ कामना से, शांतिधारा हम करें।
प्रभु रत्नत्रय की भावना से, दिव्य पुष्पाञ्जलि करें॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।
(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- धर्म प्रवर्तन जो करे, वो तीर्थंकर देव।
हम उनकी जयमाल पढ़, करें चरण की सेव॥

(अडिल्ल छंद)

पूरब पुष्कर[1] में ऐरावत क्षेत्र है।
चौबिस तीर्थंकर जन्में उस क्षेत्र में॥
हमने पूजा की चौबीसों नाथ की।
जयमाला पढ़ सिद्धी करें सर्वार्थ की॥1॥

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण है मोक्षपथ।
मोक्ष प्रदाता ये ही सच्चा मोक्षपथ॥
सम्यक् रत्नत्रय इसका आधार है।
इसका धारक होता भव से पार है॥2॥

उसमें सम्यग्ज्ञान मध्य दीपक कहा।
जो दर्शन[2] वा व्रत[3] को पावन कर रहा॥

1. पूर्व पुष्करार्द्ध द्वीप, 2. सम्यग्दर्शन, 3. सम्यक्चारित्र।

सम्यग्ज्ञान दीप के भेद अनेक हैं।
उन भेदों के पुनः प्रभेद अनेक हैं॥3॥

मतिश्रुत अवधि मनःपर्यय केवल[1] कहा।
धन्य-धन्य वे जिनने भी इनको लहा[2]॥
अष्ट[3] भेद बतलाये सम्यग्ज्ञान के।
इनको जो पाले बनते भगवान वे॥4॥

इत्यादिक श्रुतसार दिया भगवान ने।
केवलज्ञान दिया है इस श्रुतज्ञान ने॥
जो पूजे उन तीर्थंकर भगवान को।
अल्पबुद्धि भी अतिशय प्रज्ञावान हो॥5॥

हम भी उन तीर्थंकर जिन को ध्या रहे।
आगम सम्मत उत्तम अर्घ चढ़ा रहे॥
महा अर्चना करें तुम्हारी रात-दिन।
'गुप्तिनंदी' भी जिन सम होवे श्रेष्ठ जिन॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्व पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री यशोधरादि सुप्रदेशपर्यंत भविष्यत्कालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य तीनों काल में, श्री तीस चौबीसी भजे।
वो भव भ्रमण को नाशकर, सर्वोच्च शाश्वत सुख भजे॥
अति श्रेष्ठ उत्तम पुण्य पा, तीर्थेश पद भागी बने।
फिर अंत में त्रय 'गुप्ति' वर, निज आत्म गुण रागी बने॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

1. केवलज्ञान, 2. प्राप्त किया, 3. आठ।

(25) पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ भूतकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(पद्धरि छंद)

श्री प्रथमईश हैं 'पद्मचंद्र', प्रभु को नमते हैं सूर्य चंद्र।
प्रभु को भज पावें परम हर्ष, हम पावें प्रभु का नित्य दर्श॥
पश्चिम पुष्कर का भरतक्षेत्र, चौबीस नाथ से पूज्य क्षेत्र।
पूजें चौबीसी भूतकाल, पूजन वंदन करके त्रिकाल॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पद्मचंद्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नांग रत्न वृष दान देय, 'रत्नांग' रोग त्रय क्षय करेय।
हम पूजें रत्न विशाल लेय, प्रभु पूजा मोक्ष महान देय॥ पश्चिम..॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'रत्नांग' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ने धारा था योग्य वेश, तीर्थंकर श्रेष्ठ 'अयोगिकेश'।
अवरोध किया मन-वचन-काय, प्रभु सिद्ध परम पदवी लहाय॥ पश्चिम..॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अयोगिकेश' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वार्थ' नाम जग में प्रसिद्ध, करते प्रभु सबके कार्य सिद्ध।
हम छोड़ें अपना स्वार्थ भाव, प्रगटायें अपना आत्म भाव॥ पश्चिम..॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सर्वार्थ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ऋषिनाथ' बिना हम सब अनाथ, कर जोड़ नमाते नित्य माथ।
विनती करते हम एक साथ, छूटे ना प्रभु का दिव्य साथ॥ पश्चिम..॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ऋषिनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हरिभद्र' भद्रता कर प्रदान, बतलायें सब विधि का विधान।
जो भक्ति करें तुम शरण आन, वो बन जाये प्रभु तुम समान॥ पश्चिम..॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'हरिभद्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! 'गुणाधिप' गुणप्रधान, कर दो हमको सद्गुण प्रदान।
हम तुम सम पायें गुण निधान, करके निशदिन प्रभु का विधान॥
पश्चिम पुष्कर का भरतक्षेत्र, चौबीस नाथ से पूज्य क्षेत्र।
पूजें चौबीसी भूतकाल, पूजन वंदन करके त्रिकाल॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'गुणाधिप' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पारत्रिक' प्रभु त्रय रोग नाश, शाश्वत करते हैं मोक्ष वास।
मम कर्म क्लेश को हर जिनेश, भव पार लगाओ अब जिनेश॥ पश्चिम..॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पारत्रिक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मा विष्णु तुम 'ब्रह्मनाथ' !, चिद्ब्रह्म आप त्रयलोक नाथ।
हम आत्म ब्रह्म का कर विकास, पायें निश्चय चिद् ब्रह्म वास॥ पश्चिम..॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ब्रह्मनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'मुनीन्द्र' को नमन होय, मुनिगण करते नत शीश होय।
मुनि मुद्रा मुक्ति का विधान, इसको ही तारण तरण जान॥ पश्चिम..॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मुनीन्द्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम जगमग दीपक थाल लाय, प्रभु 'दीपक' की आरति रचाय।
प्रभु केवल ज्योति कर प्रदान, प्रगटाओ हममें पूर्ण ज्ञान॥ पश्चिम..॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'दीपक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राजर्षि ने तज राज काज, पाया है निश्चय मोक्षराज।
फिर भी त्रिभुवन पर पूर्णराज, होता है पूर्ण प्रतीत आज॥ पश्चिम..॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'राजर्षि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनधर्म सभा जिनकी विशाल, शत इन्द्र जहाँ है नम्र भाल।
वे जिनवर श्रेष्ठ 'विशाखदेव', उन चरणों की हम करें सेव॥ पश्चिम..॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विशाखदेव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थेश 'अनिन्दित' जगतवंद्य, पूजें तुमको भव्यात्म वृन्द।
जिनद्वार मिले सुख चिदानंद, चैतन्य परम आनंदकंद॥ पश्चिम..॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अनिन्दित' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रवि स्वामी' की रश्मि विशेष, प्रगटाये रत्नत्रय विशेष।
रवि से भी उत्तम तेज पुंज, दर्शाये आतमगुण निकुंज॥
पश्चिम पुष्कर का भरतक्षेत्र, चौबीस नाथ से पूज्य क्षेत्र।
पूजें चौबीसी भूतकाल, पूजन वंदन करके त्रिकाल॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'रविस्वामी' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सोमदत्त' का सौम्य रूप, दर्शाये अनुपम मोक्ष रूप।
भक्तों के धुलते सर्व पाप, जब करते करुणा नाथ आप॥ पश्चिम..॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सोमदत्त' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जयस्वामी' नित जयवंत होय, प्रभु तुम सम ही मम विजय होय।
हम जय बोलें नित बार-बार, करते जिनभक्ति अनंतबार॥ पश्चिम..॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'जयस्वामी' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैलोक्य पूज्य जो लोक नाथ, उन 'मोक्षनाथ' को जोड़ हाथ।
चउघाति अघाति कर्म नाश, हम तुम सम पायें मोक्षवास॥ पश्चिम..॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मोक्षनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतिम तन धारें 'अग्रभास', तन में तप का करते प्रकाश।
जब पाते प्रभुवर दिव्यज्ञान, सबको मिलता फिर सुखद दान॥ पश्चिम..॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अग्रभास' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धनुसंग' धार व्रत धनुष बाण, चउ संघ लिए करते प्रयाण।
धनुसंग नाथ का संग पाय, भवि संग रहित हो मोक्ष जाय॥ पश्चिम..॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'धनुसंग' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रोमांचक' प्रभु का रूप देख, मिटते कर्मों के अशुभ लेख।
आश्चर्यजनक आनंद होय, वह आनंद सारे पाप खोय॥ पश्चिम..॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'रोमांचक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्तिश्री पायें 'मुक्तिनाथ', प्रभु चर्ण कमल का होय साथ।
जब तक ना हमको मोक्ष होय, भक्ति करने का जोश होय॥ पश्चिम..॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मुक्तिनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभुवर 'प्रसिद्ध' जग में प्रसिद्ध, जिनमें बस जाय अनंत सिद्ध।
ये जहाँ बसे वो शिला सिद्ध, प्रभु करो हमारे कार्य सिद्ध॥
पश्चिम पुष्कर का भरतक्षेत्र, चौबीस नाथ से पूज्य क्षेत्र।
पूजें चौबीसी भूतकाल, पूजन वंदन करके त्रिकाल॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रसिद्धनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउ कर्म जीत जिनवर 'जितेश', तीर्थंकर पद पाया विशेष।
सब भक्त कहें जय-जय जितेश, अर्चन पूजन करते विशेष॥ पश्चिम..॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'जितेश' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती भरतक्षेत्रस्थ श्री पद्मचंद्रादि जितेशपर्यंत भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छंद)

सुख-शांति की शुभ कामना से, शांतिधारा हम करें।
प्रभु रत्नत्रय की भावना से, दिव्य पुष्पाञ्जलि करें॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।

(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा– पश्चिम पुष्कर द्वीप में, भारत खण्ड विशाल।
उसके भूत[1] जिनेश की, पढ़ते हम जयमाल॥

(काव्य छंद)

पश्चिम पुष्कर द्वीप, भरत क्षेत्र मन भावन।
विगत[2] नाथ चौबीस, करते धर्म प्रभावन[3]॥
प्रभु ने दे उपदेश, मोक्षमार्ग दर्शाया।
दिया धर्म सन्देश, मोक्ष सुलभ करवाया॥1॥

रत्नत्रय के सूत्र, प्रभु ने सहज बताये।
धारण कर वह सूत्र, भव्य मोक्ष सुख पाये॥
मात्र दर्श वा ज्ञान, मोक्ष नहीं ले जावे।
उनका सम्यक् रूप, क्रम से कर्म नशावे॥2॥

सम्यक् चारित्र श्रेष्ठ, मोक्ष गमन में कारण।
इसे धरें मुनि ज्येष्ठ, करने पाप निवारण॥
गणधर मुनि तीर्थेश, इस चरित्र के धारी।
इसके तेरह भेद, कहता श्रुत सुखकारी॥3॥

समिति महाव्रत पंच, तीन गुप्तियाँ जानो।
ऐसे तेरह भेद, इस चरित्र के जानो॥
पूरी हिंसा त्याग, पूर्ण अहिंसा होती।
पूर्ण झूठ को त्याग, जगे सत्यव्रत ज्योती॥4॥

जहाँ न चोरी लेश, तृतिय महाव्रत जानो।
नहीं काम वा क्लेश, चौथा महाव्रत मानो॥

1. भूतकालीन, 2. चौबीस तीर्थंकर, 3. धर्म प्रभावना।

सब परिग्रह का त्याग, पंचम महाव्रत भाई।
गमनागमन विचार, ईर्या समिति कहाई॥5॥

भाषा समिति विशेष, वाक्य सिद्धी करवाये।
ऐषण समिति अशेष, चर्या शुद्ध कराये॥
चौथी समिति अवश्य, मोह प्रमाद नशाये।
पाँच समिति व्युत्सर्ग, त्याग मार्ग दर्शाये॥6॥

मनो गुप्ति अभ्यास, आत्म शक्ति विकसाता।
वचो गुप्ति व्यापार, वचनानंद कराता॥
काय गुप्ति अभ्यास, कायानंद करावे॥
यो सम्यक् चारित्र, तेरह भेद दिखावे॥7॥

भविजन इसको धार, मोक्ष सिद्धी को पावे।
सब दुःख दोष निवार, आत्म सुखामृत पावे॥
कर हम दृढ़ श्रद्धान, सम्यग्ज्ञान जगावें।
कर चरित्र उत्थान, 'गुप्तिनंदी' शिव जावे॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती भरतक्षेत्रस्थ श्री पद्मचंद्रादि जितेशपर्यंत भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य तीनों काल में, श्री तीस चौबीसी भजे।
वो भव भ्रमण को नाशकर, सर्वोच्च शाश्वत सुख भजे॥
अति श्रेष्ठ उत्तम पुण्य पा, तीर्थेश पद भागी बने।
फिर अंत में त्रय 'गुप्ति' वर, निज आत्म गुण रागी बने॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(26) पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(अवतार छंद)

'सर्वाङ्ग स्वामि' के अंग, सबसे सुन्दर हैं।
सर्वज्ञ नाथ सर्वांग, ज्ञान समन्दर हैं।।
पुष्करवर अपर विशाल, उसमें भरत महा।
यह वर्तमान का काल, प्रभु से शोभ रहा।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सर्वाङ्गस्वामि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पद्माकर' के गुण गाय, पद्मावती हर्षे।
बहुरंगी पद्म चढ़ाय, नरभव को तरसे।। पुष्करवर..।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पद्माकर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थेश 'प्रभाकर' श्रेष्ठ, आत्म प्रभा देते।
जिनधर्म जगत में ज्येष्ठ, भव्यों से कहते।। पुष्करवर..।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रभाकर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्यात्म बली 'बलनाथ', त्रिभुवन उपकारी।
हम बन जायें जिननाथ, तुम सम गुणधारी।। पुष्करवर..।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'बलनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'योगीश्वर' योग लगाय, योग सिखाते हैं।
फिर अन्तिम ध्यान लगाय, शिवपुर जाते हैं।। पुष्करवर..।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'योगीश्वर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है जैन धर्म ना सूक्ष्म[1], प्रभु 'सूक्ष्मांग' कहें।
हर क्रिया सूक्ष्म से सूक्ष्म, प्रभु हर बार कहें।। पुष्करवर..।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सूक्ष्मांग' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'व्रत चलातीत' की सीख, जीवन में धारो।
व्रत पालन की पा सीख, संयम व्रत धारो।। पुष्करवर..।।7।।

1. छोटा।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'व्रतचलातीत' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु कर्म कलंक नशाय, केवल सुख पाया।
जिनदेव 'कलंबक' ध्याय, मन अति हर्षाया।।
पुष्करवर अपर विशाल, उसमें भरत महा।
यह वर्तमान का काल, प्रभु से शोभ रहा।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'कलंबक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परित्याग' नाथ सब त्याग, वन की ओर चले।
निज से ही कर अनुराग, प्रभु निज कर्म दलें।। पुष्करवर..।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'परित्याग' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव 'निषेधिक' नित्य, उत्तम व्रत देते।
भव्यों के चित्त पवित्र, क्षण में कर देते।। पुष्करवर..।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'निषेधिक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पापापहारि' का जाप, पाप विनाश करें।
प्रभु हर कर सबके पाप, धर्म विकास करें।। पुष्करवर..।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पापापहारि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुस्वामिन्' को त्रयलोक, शीश नवाता है।
देता प्रभु को जो ढोक, शिवसुख पाता है।। पुष्करवर..।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुस्वामि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'मुक्तिचंद्र' के द्वार, चंदा रवि आये।
जिनरूप निरख मनहार, उत्तम सुख पाये।। पुष्करवर..।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मुक्तिचंद्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अप्राशिक' प्रभु के पास, योगीजन रहते।
बन जाओ प्रभु के दास, भव्यों से कहते।। पुष्करवर..।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अप्राशिक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय हो 'जयचंद्र' जिनेश, चन्द्र पुकार करे।
करके जिन भक्ति विशेष, निज उद्धार करे।। पुष्करवर..।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'जयचंद्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस तन के नौमल द्वार, मल से रहित रहे।
उन 'मलाधारि' के द्वार, व्रत की सरित बहे॥
पुष्करवर अपर विशाल, उसमें भरत महा।
यह वर्तमान का काल, प्रभु से शोभ रहा॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मलाधारि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुसंयत' प्रभु का संग, जिसको मिलता है।
उसको चढ़ता व्रत रंग, जीवन खिलता है॥ पुष्करवर..॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुसंयत' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'मलयसिंधु' भव पार, सबके क्लांत हरें।
श्री मलय सिंधु का द्वार, सब दुःख शांत करें॥ पुष्करवर..॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मलयसिंधु' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नाथ 'अक्षधर' आप, अक्षय सुख देना।
प्रभु हरलो मम संताप, अक्षय पद देना॥ पुष्करवर..॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अक्षधर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव 'देवधर' द्वार, देव समूह नमे।
त्रिभुवन में कर जयकार, सारे भव्य नमे॥ पुष्करवर..॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'देवधर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरदेव 'देवगण' द्वार, निशदिन आते हैं।
कर पूजा मंगलकार, पुण्य कमाते हैं॥ पुष्करवर..॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'देवगण' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थेश 'आगमिक' नाथ, आगम सूत्र कहें।
मिटता उसका अज्ञान, जो जिन शर्ण लहे॥ पुष्करवर..॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'आगमिक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'विनीत' से प्रीत, विनय सिखाती है।
यह विनय भाव की रीत, मोक्ष दिलाती है॥ पुष्करवर..॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विनीत' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'रतानंद' जगवंद्य, परमानंद वरें।
हम पाने दिव्यानंद, प्रभु का संग करें॥
पुष्करवर अपर विशाल, उसमें भरत महा।
यह वर्तमान का काल, प्रभु से शोभ रहा॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'रतानन्द' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती भरतक्षेत्रस्थ श्री सर्वांगस्वाम्यादि रतानंदपर्यंत वर्तमानकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छंद)

सुख-शांति की शुभ कामना से, शांतिधारा हम करें।
प्रभु रत्नत्रय की भावना से, दिव्य पुष्पाञ्जलि करें॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।

(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

धत्ता छंद- पश्चिम पुष्कर में, जिन चरणन में, अर्घ्य चढ़ायें नर-नारी।
जयमाला गायें, वाद्य बजायें, नृत्य रचायें मनहारी॥

(पायत्ता छंद)

पश्चिम पुष्कर मनहारी, जहँ भरत क्षेत्र सुखकारी।
जब वर्तमान युग आया, तीर्थंकर को प्रगटाया॥1॥

हम वर्तमान जिन ध्यायें, चौबीसी के गुण गायें।
नित प्रभु की भक्ति रचायें, जयमाला पढ़ सुख पायें॥2॥
सब प्रभु ने मार्ग बताया, आगम रहस्य समझाया।
जीवादिक तत्त्व बताये, हम उनमें श्रद्धा लायें॥3॥
षट् द्रव्यों को हम जानें, पंचास्तिकाय पहचानें।
षट् लेश्यायें भी जानें, पच्चीस कषायें जानें॥4॥
प्रभु तत्त्व सात बतलायें, गर पुण्य पाप मिल जाये।
वो नव पदार्थ कहलायें, हम मोक्ष तत्त्व को पायें॥5॥
उपयोग जीव का लक्षण, उसमें हैं ज्ञान विलक्षण।
चेतन से रहित अचेतन, हैं पाँच द्रव्य बिन चेतन॥6॥
कर्मों का आना आश्रव, जो पुण्य-पापमय आश्रव।
कर्मों का रुकना संवर, हो समिति आदि से सत्वर[1]॥7॥
हम तत्त्व निर्जरा पाये, जो तप से ही हो पाये।
जब सर्व कर्म नश जायें, तब मोक्ष तत्त्व हो जाये॥8॥
इस विध[2] तत्त्वों का चिंतन, करता आतम का मंथन।
ये तीर्थंकर की वाणी, भव्यों को शिव सुखदानी॥9॥
हम निशदिन उनको ध्यायें, सातिशय भक्ति रचायें।
निज तीन 'गुप्ति' प्रगटायें, जिनवर जैसा पद पायें॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती भरतक्षेत्रस्थ श्री सर्वांगस्वाम्यादि रतानंदपर्यंत वर्तमानकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य तीनों काल में, श्री तीस चौबीसी भजे।
वो भव भ्रमण को नाशकर, सर्वोच्च शाश्वत सुख भजे॥
अति श्रेष्ठ उत्तम पुण्य पा, तीर्थेश पद भागी बने।
फिर अंत में त्रय 'गुप्ति' वर, निज आत्म गुण रागी बने॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

1. शीघ्र, 2. इस प्रकार।

(27) पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ भविष्यत्कालीन 24 तीर्थंकर पूजा

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(चौपाई)

देव 'प्रभावक' भाव जगायें, हम भावों से उनको ध्यायें।
भाव हमारे शुभ बन जायें, अशुभ भाव मन से हट जाये॥
पश्चिम पुष्कर द्वीप विशाला, भरत क्षेत्र है जहाँ निराला।
वहाँ तीर्थ युग आने वाला, खोलेगा शिवपुर का ताला॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रभावक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'विनतेन्द्र' विनय गुणधारी, विनती सुनलो नाथ हमारी।
विनय सहित हम अर्घ चढ़ायें, तुम सम उत्तम पद हम पायें॥ पश्चिम..॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विनतेन्द्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'सुभावक' भव से तारें, सब संकट से शीघ्र उबारें।
भावों में निर्मलता देते, भक्तों के सब दुःख हर लेते॥ पश्चिम..॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुभावक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिनकर मध्यलोक चमकाता, दिन में आता निशि में जाता।
तीन लोक जो नित चमकाये, वो 'दिनकर' प्रभुवर कहलायें॥ पश्चिम..॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'दिनकर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अगस्त्येज' जिन अस्त न होंगे, प्रभु भक्तों को कष्ट न होंगे।
योगी उनका ध्यान लगायें, प्रभु का यश जग में फैलायें॥ पश्चिम..॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अगस्त्येजो' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'धनदत्त' आत्म धन देते, मोह मान माया हर लेते।
हम भी प्रभु की भक्ति रचायें, प्रभु पूजा से निज धन पायें॥ पश्चिम..॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'धनदत्त' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पौरव' चारों पर्व बतायें, प्रौषध व्रत की विधि समझायें।
हम भी प्रौषध व्रत अपनायें, पौरव प्रभु को अर्घ चढ़ायें॥ पश्चिम..॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पौरव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'जिनदत्त' जिनेश्वर प्यारे, तीनों जग के बने दुलारे।
जो जिनभक्त उन्हें उर धारें, प्रभुवर उनको पार उतारें॥
पश्चिम पुष्कर द्वीप विशाला, भरत क्षेत्र है जहाँ निराला।
वहाँ तीर्थ युग आने वाला, खोलेगा शिवपुर का ताला॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'जिनदत्त' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभु ! 'पारस' पास बुलाओ, मम आतम पारस कर जाओ।
पुष्कर के श्री पारस देवा, उनको निशदिन पूजें देवा॥ पश्चिम..॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पार्श्वनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिगण 'मुनिसिंधु' को ध्यायें, भवसिंधु से वो तिर जायें।
मुनि सिंधु मुनियों के स्वामी, मुनिवर बनते तव पथगामी॥ पश्चिम..॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मुनिसिंधु' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम 'आस्तिक' पे आस्था धारें, प्रभु की आस्था पाप निवारे।
प्रभु को भज हम पुण्य कमायें, परम पुण्य से शिवसुख पायें॥ पश्चिम..॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'आस्तिक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव-भव में प्रभु दर्शन पाये, जब तक मुक्ति नहीं मिल जाये।
'भवानीक' को सब मिल ध्यायें, भव दुःख से भगवान बचायें॥ पश्चिम..॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'भवानीक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूपेश्वर चक्रेश्वर राजा, प्रभु को पूजें सब महाराजा।
प्रभु 'नृपनाथ' त्रिलोकी राजा, देव बजाते दुंदुभि बाजा॥ पश्चिम..॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'नृपनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नारायण' के बनो पुजारी, भक्ति करो सारे नर-नारी।
नारायण जिनवर को ध्याओ, नारायण का आयण[1] गाओ॥ पश्चिम..॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'नारायण' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रशमभाव 'प्रशमौक' जगायें, जिससे राग-द्वेष नश जाये।
प्रशम भाव को हम भी धारें, प्रभु का नाम मंत्र उच्चारें॥ पश्चिम..॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रशमौक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. पुराण।

'भूपति' सब भू वाहन छोड़ें, अष्टम भू से नाता जोड़ें।
जो भूपति की भक्ति रचाते, भक्तों से भगवन् बन जाते॥
पश्चिम पुष्कर द्वीप विशाला, भरत क्षेत्र है जहाँ निराला।
वहाँ तीर्थ युग आने वाला, खोलेगा शिवपुर का ताला॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'भूपति' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु दर्शन से दर्शन पायें, दृष्टि भी सम्यक् हो जाये।
हम 'सुदृष्टि' को शीश नवायें, अर्घ चढ़ा समकित गुण पायें॥ पश्चिम..॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुदृष्टि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'भवभीरू' भव दुःखहारी, भ्रमतम भवभय भंजनकारी।
ये प्रभु भव से पार लगायें, हम उनका जयकार लगायें॥ पश्चिम..॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'भवभीरू' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु नंदन वन्दन स्वीकारो, हम भक्तों को आन उबारो।
हम 'नंदन' के नन्दन होके, पायें ना भव-भव में धोखे॥ पश्चिम..॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'नंदन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म भार को प्रभु ने छोड़ा, मोक्ष मार्ग से नाता जोड़ा।
'भार्गव' प्रभु भव भार भगायें, संस्तव करने सुरपति आयें॥ पश्चिम..॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'भार्गव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव 'सुवसू' शिव वसुधा पायें, उनको हम वसुद्रव्य चढ़ायें।
जो आनंद जिनेश्वर पायें, वो आनन्द हमें मिल जायें॥ पश्चिम..॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुवसू' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव 'परावश' ध्यान सम्हारें, अपने कर्म शत्रु संहारें।
हम आये प्रभु आज रिझाने, पूजन कीर्त्तन प्रभु का गाने॥ पश्चिम..॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'परावश' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'वनवासिक' वन के वासी, प्रभु दर्शन को अंखियाँ प्यासी।
प्रभु का समता भाव अनोखा, प्रभु के पास मिले ना धोखा॥ पश्चिम..॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'वनवासिक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्कर भरत क्षेत्र के स्वामी, श्री 'भरतेश' नाम सुख धामी।
अंतिम प्रभु 'भरतेश' कहाये, भरत क्षेत्र को पूज्य बनायें॥
पश्चिम पुष्कर द्वीप विशाला, भरत क्षेत्र है जहाँ निराला।
वहाँ तीर्थ युग आने वाला, खोलेगा शिवपुर का ताला॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'भरतेश' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ श्री प्रभावकादि भरतेशपर्यंत भविष्यत्कालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छंद)

सुख-शांति की शुभ कामना से, शांतिधारा हम करें।
प्रभु रत्नत्रय की भावना से, दिव्य पुष्पाञ्जलि करें॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।

(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

(धत्ता छंद)

जय पश्चिम पुष्कर, भरत क्षेत्रवर, भावि जिनवर हम ध्यायें।
चौबीस जिनेश्वर, जगत हितेश्वर, उनकी जयमाला गायें॥

(चौपाई छंद)

पश्चिम पुष्कर भरत निराला, जैन धर्म है जिसमें आला।
उसकी आगामी चौबीसी, सर्व हितंकर हित उपदेशी॥1॥
दशविध धर्म हमें वे देंगे, हमको निज सम वे कर लेंगे।
धर्मों में दशधर्म हमारा, पर्वराज पर्यूषण प्यारा॥2॥
उत्तम क्षमा धरम सिखलाये, कैसे हम निज क्रोध नशायें।
उत्तम मार्दव विनय सिखावे, अहम् नशा अर्हम् प्रगटाये॥3॥
उत्तम आर्जव सरल बनावे, कपटहीन जीवन दर्शावे।
उत्तम शौच लोभ को नाशे, आतम शुचिता नित्य विकासे॥4॥
उत्तम सत्य सफलता देता, झूठ कपट निश्चय हर लेता।
उत्तम संयम यम का जेता, साधक के अवगुण हर लेता॥5॥
उत्तम तप जिसने अपनाया, श्रेष्ठ सिद्ध पद उसने पाया।
उत्तम त्याग धर्म सिखलावे, त्यागी ही सच्चा सुख पावे॥6॥
उत्तम आकिंचन उपकारी, परिग्रह प्रति ममता परिहारी।
उत्तम ब्रह्मचर्य जो पावे, त्रिभुवन पूजित पद वो पावे॥7॥
दश धर्मों को मुनिवर धारें, उत्तम सुख हो उनके द्वारे।
'गुप्तिनंदि' नित उनको ध्यायें, इक दिन जिनसम पद को पाये॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ श्री प्रभावकादि भरतेशपर्यंत भविष्यत्कालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य तीनों काल में, श्री तीस चौबीसी भजे।
वो भव भ्रमण को नाशकर, सर्वोच्च शाश्वत सुख भजे॥
अति श्रेष्ठ उत्तम पुण्य पा, तीर्थेश पद भागी बने।
फिर अंत में त्रय 'गुप्ति' वर, निज आत्म गुण रागी बने॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(28) पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

ज्ञानावरणादि करम, क्षय करके 'उपशांत'।
तीन लोक के ईश तब, पहुँच गये लोकांत॥
पश्चिम पुष्कर द्वीप में, ऐरावत शुभ देश।
उसकी चौबीसी विगत[1], पूजें भव्य विशेष॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'उपशांत' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाग खेलते कर्म संग, श्री 'फाल्गुण' जिनदेव।
भक्ति रंग में रंगते, पशु-नर-देव सदैव॥ पश्चिम..॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'फाल्गुण' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भवास को त्याग कर, जन्मे श्री 'पूर्वास'।
गर्भ पूर्व ही सुरपति, बनते प्रभु के दास॥ पश्चिम..॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पूर्वास' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सौधर्म' जिनेश की, भक्ति करे सौधर्म।
पाँचों कल्याणक मना, पायें उत्तम शर्म॥ पश्चिम..॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सौधर्म' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'गौरिक' की देशना, झेले सदा गणेश।
तुम पथ पे हम भी चलें, दो आशीष जिनेश॥ पश्चिम..॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'गौरिक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन रोग सबसे बड़े, उसको नाशें नाथ।
'त्रिविक्रम' त्रय रत्न दो, तीन लोक के नाथ॥ पश्चिम..॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'त्रिविक्रम' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. भूतकाल के 24 तीर्थंकर।

कर्म नशे 'नरसिंह' ने, किया आत्म उत्थान।
हम भी प्रभु के सम बने, अर्ज सुनो भगवान॥
पश्चिम पुष्कर द्वीप में, ऐरावत शुभ देश।
उसकी चौबीसी विगत, पूजें भव्य विशेष॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'नरसिंह' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मृगवसु' प्रभु की शरण में, मृग गण शिवसुख पाय।
प्रभु के दिव्य प्रभाव से, सबमें मैत्री छाय॥ पश्चिम..॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मृगवसु' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सोमेश्वर' परमेश का, मुखड़ा चंद्र समान।
ज्ञान रश्मियाँ आपकी, लोकालोक प्रमाण॥ पश्चिम..॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सोमेश्वर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'सुधासुर' से वरें, ज्ञान सुधा सुरनाथ।
अगले भव वो भी बने, तीन लोक के नाथ॥ पश्चिम..॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुधासुर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अपापमल्ल' जिनेश ने, किये पाप मल चूर।
प्रभु के चरणों में हुए, पाप हमारे दूर॥ पश्चिम..॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अपापमल्ल' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'विबाध' जिनराज ने, बाधायें सब नाश।
सर्व व्याधियाँ नाश कर, किया मोक्ष में वास॥ पश्चिम..॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विबाध' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'संधिक स्वामी' ने कहा, बनो सभी के मीत।
साम्य भाव उर धारकर, गाओ आगम गीत॥ पश्चिम..॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'संधिक स्वामी' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर श्री 'मान्धात्र' का, करते हम सम्मान।
प्रभुवर का गुणगान कर, नष्ट करें हम मान॥ पश्चिम..॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मान्धात्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अश्वतेज' का तेज तो, भूमंडल में छाय।
प्रभु सम तेज उसे मिले, जो प्रभु शरणा आय॥
पश्चिम पुष्कर द्वीप में, ऐरावत शुभ देश।
उसकी चौबीसी विगत, पूजें भव्य विशेष॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अश्वतेजो' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब विद्याओं के धनी, श्री 'विद्याधर' देव।
विद्याधर करते सदा, प्रभु चरणों की सेव॥ पश्चिम..॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विद्याधर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कमल नयन प्रभु आपके, रहे स्वयं में लीन।
देव 'सुलोचन' के चरण, हो मम नयना लीन॥ पश्चिम..॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुलोचन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन-वच-तन जो वश करे, उसका सच्चा मौन।
'मौन निधि' प्रभुवर कहें, अपनी निधि है मौन॥ पश्चिम..॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मौन निधि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुण्डरीक' प्रभु को भजें, भक्ति भाव के साथ।
प्रभु अर्चा में लीन हो, झुका रहे हम माथ॥ पश्चिम..॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पुण्डरीक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह संसार विचित्र है, इसमें कहीं न सार।
नाथ 'चित्रगण' से मिला, मोक्ष नगर का द्वार॥ पश्चिम..॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'चित्रगण' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शक्र परिचारी बने, लाये दल बल इन्द्र।
प्रभुवर श्री 'मणिरिन्द्र' की, भक्ति करे शत इन्द्र॥ पश्चिम..॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मणिरिन्द्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीनकाल में श्रेष्ठ है, 'सर्वकाल' जिनराज।
सर्वकाल की अर्चना, पहनाये शिवताज॥ पश्चिम..॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सर्वकाल' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भूरिश्रवण' की देशना, सुनते हैं सब जीव।
धर्मश्रवण कर श्रमण बन, जाने जीव अजीव॥
पश्चिम पुष्कर द्वीप में, ऐरावत शुभ देश।
उसकी चौबीसी विगत, पूजें भव्य विशेष॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'भूरिश्रवण' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पूजा में पुण्य है, कर लो पुण्य प्रबंध।
भजो नाथ 'पुण्यांग' को, कटे पाप का बंध॥॥ पश्चिम..॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'पुण्यांग' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री उपशांतादि पुण्यांगपर्यंत भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छंद)

सुख-शांति की शुभ कामना से, शांतिधारा हम करें।
प्रभु रत्नत्रय की भावना से, दिव्य पुष्पाञ्जलि करें॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।
(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

सोरठा- पश्चिम पुष्कर क्षेत्र, ऐरावत जिसमें मिले।
पाने हम शिवक्षेत्र[1], पूजें गत चौबीस जिन॥

1. मोक्ष नगर।

(शंभु छंद)

पश्चिम पुष्कर ऐरावत में, जब भूतकाल आरम्भ हुआ।
उस भूतकाल के कृतयुग[1] में, चौबीसों जिन का जन्म हुआ॥
जन्मोत्सव पूर्व जिनेश्वर का, होता है गर्भोत्सव मंगल।
गर्भोत्सव पूर्व जगत जननी, देखें सोलह सपने मंगल॥1॥

गजराज वृषभ देखा माँ ने, जिससे सुत श्रेष्ठ जगत स्वामी।
मृगराज[2] गर्जना कहती है, बलधारी ये अन्तर्यामी॥
श्री गजलक्ष्मी का न्हवन स्वप्न, मेरू पे प्रभु का न्हवन कहे
पुष्पों की माला का फल है, जिन युगल धर्म का कथन करें॥2॥

परिपूर्ण चन्द्रमा कहता है, प्रभु होंगे सब जग में प्यारे।
उदयाचल का रवि कहता है, ये तीन लोक के उजियारे॥
फिर मीन युगल का स्वप्न कहे, प्रभु सुख ही सुख नित पायेंगे।
कहता है मंगल स्वर्ण कुंभ, निधि के स्वामी कहलायेंगे॥3॥

शुभ पद्म सरोवर दर्शाये, गुण निधियों के स्वामी होंगे।
लहराता सागर कहता है, सर्वज्ञ वीतरागी होंगे॥
सिंहासन मानो कहता है, नर-नारी उनको पूजेंगे।
सुर का विमान सूचित करता, स्वर्गावतार प्रभुवर लेंगे॥4॥

बहुरत्न राशि सूचक इसकी, प्रभु गुण अनंत धारी होंगे।
नागेन्द्र भवन कहता मानो, प्रभु अवधिज्ञान धारी होंगे॥
निर्धूम अग्नि का स्वप्न कहे, प्रभु कर्मकाठ को काटेंगे।
बन तीर्थंकर केवलज्ञानी, जग को ज्ञानामृत बाँटेंगे॥5॥

यूं सोलह सपनों की माला, माता को मालामाल करे।
जो पढ़े सदा यह जयमाला, उसको भी पूर्ण निहाल करे॥
देवेन्द्र सहित सब भव्य जीव, जिन मात-पिता का मान करें।
'गुप्तिनंदी निज पद पाने, सब तीर्थंकर का ध्यान धरें॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री उपशांतादि पुण्यांगपर्यंत भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. दुखमा सुखमा काल, 2, शेर।

(गीता छंद)

जो भव्य तीनों काल में, श्री तीस चौबीसी भजे।
वो भव भ्रमण को नाशकर, सर्वोच्च शाश्वत सुख भजे॥
अति श्रेष्ठ उत्तम पुण्य पा, तीर्थेश पद भागी बने।
फिर अंत में त्रय 'गुप्ति' वर, निज आत्म गुण रागी बने॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(29) पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(कुसुमलता छंद)

'गांगेयक' तीर्थंकर जग में, ज्ञान सुधा गंगा प्रगटाय।
उस गंगा में गोता ले हम, गांगेयक जिन सम बन जाय॥
पुष्करवर की पश्चिम दिश में, ऐरावत शुभ क्षेत्र कहाय।
वर्तमान की चौबीसी को, हम सब पूजें अर्घ चढ़ाय॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'गांगेयक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पास 'नल्लवासव' के बस कर, भवि अष्टम वसुधा को पाय।
गणधर सुरगण वा चक्रिगण, श्री जिनवर को शीश नवाय॥ पुष्कर..॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'नल्लवासव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भीमनाथ' ने कर्म भीम को, शीघ्र पछाड़ा ध्यान लगाय।
भीमनाथ दर हम भी आये, भीम[1] कर्म अपने विनशाय॥ पुष्कर..॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'भीमनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव 'दयाधिक' दयावान हैं, दया धर्म का पाठ पढ़ाय।
दया दान दो दया निधीश्वर, पूर्ण दया हममें आ जाय॥ पुष्कर..॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'दयाधिक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. भीषण।

श्री 'सुभद्र' जिन भद्र जीव को, भद्र मोक्ष का मार्ग बताय।
हम सब ध्यायें अर्घ चढ़ायें, पूर्णभद्र हम भी बन जाय॥
पुष्करवर की पश्चिम दिश में, ऐरावत शुभ क्षेत्र कहाय।
वर्तमान की चौबीसी को, हम सब पूजें अर्घ चढ़ाय॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुभद्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वामी' जिनवर सबके स्वामी, तीन लोक से पूजे जाय।
गुणगण मंडित भविजन वंदित, जीव जगत के शीश झुकाय॥ पुष्कर..॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'स्वामी' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हनिक' नाथ की मुद्रा लखकर, इन्द्र हजारों नयन बनाय।
प्रभुवर सबका मन हर लेते, मात-पिता भी अति हर्षाय॥ पुष्कर.. ॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'हनिक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नंदिघोष' का सुर किन्नरियाँ, त्रिभुवन में उद्घोष लगाय।
प्रभुवर का जयकारा सुनकर, तीन भुवन में मंगल छाय॥ पुष्कर.. ॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'नंदिघोष' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रूपबीज' का रूप निराला, बीज मंत्र से पूजा जाय।
बीज महाव्रत के बोकर जिन, धर्मवृक्ष फलदार लगाय॥ पुष्कर..॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'रूपबीज' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वज्रवृषभ संहनन से शोभित, 'वज्रनाभ' की सुन्दर काय।
उत्तम संहनन पाकर प्रभुवर, वज्र करम को चूर्ण कराय॥ पुष्कर..॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'वज्रनाभ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोष दोष आक्रोश मिटाकर, ढाई कोस प्रभु ऊपर जाय।
प्रभु 'संतोष' अदोष रीति से, दोष रहित शिवपथ बतलाय॥ पुष्कर..॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'संतोष' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'सुधर्म' हैं धर्म धुरंधर, धर्म मार्ग सबको दिखलाय।
धर्म अहिंसा धर्ममित्र है, धर्म जगत से पार लगाय॥ पुष्कर..॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुधर्म' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'फणीश्वर' भजें मुनीश्वर, भक्त हृदय से जिन गुण गाय।
मंगल पूजा करके भविजन, मंगल वाद्य मृदंग बजाय॥
पुष्करवर की पश्चिम दिश में, ऐरावत शुभ क्षेत्र कहाय।
वर्तमान की चौबीसी को, हम सब पूजें अर्घ चढ़ाय॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'फणीश्वर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वीरचंद्र' की चंद्र रश्मियाँ, सब जग को चम-चम चमकाय।
जिसे मिले ये चंद्र रश्मियाँ, उसका भाग्य चमन बन जाय॥ पुष्कर..॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'वीरचंद्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मेधानिक' के समवशरण में, मेघ कुँवर भी भक्ति रचाय।
केवलज्ञानी के चरणों में, मेधा सबकी बढ़ती जाय॥ पुष्कर..॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मेधानिक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म धुलाई करने भविजन, 'स्वच्छनाथ' की शरणा आय।
पाप कर्म का मैल छुड़ाते, स्वच्छनाथ मन स्वच्छ बनाय॥ पुष्कर..॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'स्वच्छनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधादिक सम्पूर्ण कषायें, प्रभु समकक्ष[1] ठहर ना पाय।
कर्म कलंक कषाय नशाने, प्रभु 'कोपक्षय' को हम ध्याय॥ पुष्कर..॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'कोपक्षय' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य कार्य को करते जाओ, यह 'अकाम' प्रभुवर समझाय।
अशुभ काम को हेय मान तज, शुभ में ही नित चित्त लगाय॥ पुष्कर..॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अकाम' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इहभव परभव साथ निभावे, सच्चा जैन धरम कहलाय।
'धर्मधाम' का धर्म यही है, सबमें धर्म प्रभाव जगाय॥ पुष्कर..॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'धर्मधाम' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सूक्तिसेन' की ज्ञान सूक्तियाँ, मम अज्ञान तिमिर विनशाय।
अपनायें हम वही सूक्तियाँ, सुक्ति से मुक्ति मिल जाय॥ पुष्कर..॥20॥

1. प्रभु के आगे।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सूक्तिसेन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षेमंकर जिन क्षेम करें जब, क्षेम कुशल जग में आ जाय।
जहाँ रहे 'क्षेमंकर' स्वामी, धरती पे खुशहाली छाय॥
पुष्करवर की पश्चिम दिश में, ऐरावत शुभ क्षेत्र कहाय।
वर्तमान की चौबीसी को, हम सब पूजें अर्घ चढ़ाय॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'क्षेमंकर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दयानाथ' जी दया सिखाते, दया धर्म जग में बरसाय।
जैसे सावन मेघा बरसे, हरी भरी वसुधा बन जाय॥ पुष्कर..॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'दयानाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'कीर्तिप' कीर्ति के सागर, दशों दिशायें कीर्ति सुनाय।
प्रभु का कीर्त्तन करने से ही, कीर्ति भक्त की बढ़ती जाय॥ पुष्कर..॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'कीर्तिप' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'शुभंकर' सौख्य समन्दर, इनके चरणों में जो आय।
शुभाशीष प्रभुवर का पाकर, शुभ मंगल सुख निशदिन पाय॥ पुष्कर..॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'शुभंकर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री गांगेयकादि शुभंकरपर्यंत वर्तमानकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छंद)

सुख-शांति की शुभ कामना से, शांतिधारा हम करें।
प्रभु रत्नत्रय की भावना से, दिव्य पुष्पाञ्जलि करें॥

यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।

(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

(धत्ता छंद)

जय पश्चिम पुष्कर, दे तीर्थंकर, त्रिभुवन पूज्य कहाया है।
जयमाला गाके, प्रभु को ध्याके, सबका मन हर्षाया है॥

(नरेन्द्र छंद)

पश्चिम पुष्कर ऐरावत में, तीर्थंकर जिनवर आये।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, उनके हम सब गुण गायें॥
तीर्थंकर से रत्न जने[1] जो, रत्नाकर वो मात-पिता।
उनको भी शत इन्द्र पूजते, सेवा करती सुर वनिता[2]॥1॥

पुण्य उदय से विरली नारी, बनती तीर्थंकर की माँ।
तीर्थंकर की माता बन वो, कहलाती सब जग की माँ॥
वो ही नारी धन्य जगत में, जो तीर्थंकर को जनती।
उन तीर्थंकर की माता को, पूज रही सारी धरती॥2॥

पूर्व भवों में जो नारी नित, जिन पूजा अभिषेक करे।
छह कर्त्तव्य सदा पाले जो, वत्सल करुणा प्रेम धरे॥
चार संघ की सेवा में जो, मातृ हृदय व्यवहार करे।
शिशुवत दे आहार मुनि को, भेदभाव जो नहीं करें॥3॥

1. जन्म दें, 2. देवांगना।

गर्भपात जो ना करवाये, वो माँ जिन जननी बनती।
तीर्थंकर सुत का पालन कर, नारी में गौरव बनती॥
तीर्थंकर जिनवर की माँ भी, शिवपुर निश्चय पाती है॥
निश्चय अल्प भवों में वो माँ, मोक्षपुरी को जाती है॥4॥

देव-शास्त्र-गुरु की सेवा में, जो सब कुछ अर्पण करते।
वो पुण्यात्मा महापुरुष ही, जनक तीर्थंकर के बनते॥
पालें षट् कर्त्तव्य सदा जो, सेवा गुरु की मन भाये।
पिता बने वो तीर्थंकर के, क्रम से वे शिवपुर जायें॥5॥

प्रथम दान देने वाला भी, मोक्ष नाथ संग पाता है।
ऐरावत गज क्रम से आगे, मुक्ति रमा को पाता है॥
शचि भी प्रभु का प्रथम दर्श पा, भव-भव का मिथ्यात्व नशे।
अगले भव वो नर तन पाकर, कर्म काट शिवलोक बसे॥6॥

प्रभु के अतिशय से सब प्राणी, जीवन सफल बनाते हैं।
निज नियोग से प्रभु सेवा कर, अतिशय पुण्य कमाते हैं॥
नाथ आपकी अल्प भक्ति भी, सर्व कर्म को विनशाये।
'गुप्तिनंदी' की यही कामना, हमें मोक्ष सुख मिल जाये॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री गांगेयकादि शुभंकरपर्यंत वर्तमानकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य तीनों काल में, श्री तीस चौबीसी भजे।
वो भव भ्रमण को नाशकर, सर्वोच्च शाश्वत सुख भजे॥
अति श्रेष्ठ उत्तम पुण्य पा, तीर्थेश पद भागी बने।
फिर अंत में त्रय 'गुप्ति' वर, निज आत्म गुण रागी बने॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(30) पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ भविष्यत्कालीन 24 तीर्थंकर पूजा

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(लोल तरोल छंद)

जिनदेव 'अदोषिक' आयें, निर्दोष मार्ग बतलायें।
हम भी उनका व्रत पालें, गुणगान नाथ का गालें॥
पुष्कर का पश्चिम प्यारा, उसमें भी उत्तर न्यारा।
जिसमें ऐरावत प्यारा, भावी तीर्थंकर द्वारा॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अदोषिक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'वृषभदेव' वृषभेश्वर, हम पूज रहे परमेश्वर।
प्रभु श्रेष्ठ परम उपकारी, हम उनके चरण पुजारी॥ पुष्कर..॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'वृषभदेव' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो विनय नाथ का करते, वो मुक्तिरमा को वरते।
श्री 'विनयानंद' जिनेशा, विनयावलि कहें सुरेशा॥ पुष्कर..॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विनयानंद' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मुनिभारत' जग के तारक, सब जीवों के उद्धारक।
मुनि भारत महा तपस्वी, ध्याते हैं तुम्हें मनस्वी॥ पुष्कर..॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मुनिभारत' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'इन्द्रक' को इन्द्र रिझायें, धरती को स्वर्ग बनायें।
इन्द्रक माँ के उर आये, जगती पे खुशियाँ छायें॥ पुष्कर..॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'इन्द्रक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'चन्द्रकेतु' आदिक ग्रह, आ चन्द्रकेतु के जिनग्रह।
ऐसी जिन भक्ति रचायें, जिसको हम गा ना पायें॥ पुष्कर...॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'चंद्रकेतु' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्वज 'ध्वजादित्य' की फहरें, जिसमें समता की लहरें।
हम धर्मध्वजा फहरायें, प्रभु ध्वजादित्य को ध्यायें॥
पुष्कर का पश्चिम प्यारा, उसमें भी उत्तर न्यारा।
जिसमें ऐरावत प्यारा, भावी तीर्थंकर द्वारा॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ध्वजादित्य' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वसुबोध' बोध के दाता, सबको सद्बोध प्रदाता।
हम उन सम बोध जगायें, निज आतम शोध करायें॥ पुष्कर...॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'वसुबोध' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव 'मुक्तिगत' का मत, करवाये निज से अवगत।
निज को जानो हे प्राणी !, ये ही प्रभुवर की वाणी॥ पुष्कर...॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मुक्तिगत' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'धर्मबोध' कहलायें, जिन धर्म बोध प्रगटायें।
हम प्रभु से बोधि जगायें, निज आत्म धर्म प्रगटायें॥ पुष्कर...॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'धर्मबोध' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके सर्वांग मनोहर, प्रभु लगते ज्ञान समन्दर।
वे प्रभु 'देवांग' कहाते, भव्यों को पार लगाते॥ पुष्कर...॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'देवांग' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मारीचिक' मन को मारें, सब कर्म नाथ से हारे।
हम आये शरण तिहारे, प्रभु मन में बसो हमारे॥ पुष्कर...॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मारीचिक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थेश 'सुजीवन' आये, जीने की कला सिखायें।
हम जीवन धन्य बनायें, उन जैसा जीवन पायें॥ पुष्कर...॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुजीवन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनकी उत्तम यश गाथा, गाये जिनवाणी माता।
तीर्थेश 'यशोधर' प्यारे, यशकीर्ति उत्तम धारें॥ पुष्कर...॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'यशोधर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गौतम' प्रभुवर की वाणी, झेले गणधर गुरु ज्ञानी।
शुभ चिंतन करते प्राणी, बनते हैं आतम ध्यानी॥
पुष्कर का पश्चिम प्यारा, उसमें भी उत्तर न्यारा।
जिसमें ऐरावत प्यारा, भावी तीर्थंकर द्वारा॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'गौतम' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मुनि शुद्धि' शुद्धि सिखाते, वे आत्म शुद्धि सिखलाते।
हम उनकी शरणा आये, उन जैसा शोधन पायें॥ पुष्कर...॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'मुनिशुद्धि' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव 'प्रबोधिक' दाता, सत्यार्थ बोध के दाता।
वह दुर्लभ बोधि जगाने, हम आये प्रभु गुण गाने॥ पुष्कर...॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'प्रबोधिक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वह सत्य तथ्य समझाये, जिन 'सदानीक' कहलाये।
वे कहते सत्य अकेला, उसके संग नहीं झमेला॥ पुष्कर...॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सदानीक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'चारित्र नाथ' को वंदन, चारित्र नशे भव बंधन।
चारित्र आत्म का भूषण, हरता है भाव प्रदूषण॥ पुष्कर...॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'चारित्रनाथ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'शतानंद' को ध्याता, श्रद्धा से अर्घ चढ़ाता।
शतबार उन्हें शिर नाता, वो शाश्वत आनंद पाता॥ पुष्कर...॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'शतानंद' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वेदार्थ' वेद को जाने, वेदों के अर्थ बखाने।
उनको पूजें सत्ज्ञानी, बनते वो दृढ़ श्रद्धानी॥ पुष्कर...॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'वेदार्थ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ज्ञान सुधा बरसाते, भक्तों की प्यास बुझाते।
ले 'सुधानीक' की शरणा, पूजें हम इनके चरणा॥ पुष्कर...॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुधानीक' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वांग ज्योति सा चमके, रविगण से ज्यादा दमके।
'ज्योतिर्मुख' प्रभु की ज्योति, मिथ्यात्व तिमिर को धोती॥
पुष्कर का पश्चिम प्यारा, उसमें भी उत्तर न्यारा।
जिसमें ऐरावत प्यारा, भावी तीर्थंकर द्वारा॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ज्योतिर्मुख' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर[1] लय में ताल बजायें, सुर ललनायें[2] गुण गायें।
वे जय 'सुरार्ध' उच्चारें, निज पाप तिमिर परिहारें॥ पुष्कर...॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुरार्ध' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री अदोषिकादि सुरार्धनाथपर्यंत भविष्यत्कालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छंद)

सुख-शांति की शुभ कामना से, शांतिधारा हम करें।
प्रभु रत्नत्रय की भावना से, दिव्य पुष्पाञ्जलि करें॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।
(9, 27 या 108 बार जाप करें)

1. देव, 2. देवियाँ।

जयमाला

सोरठा- जयमाला की माल, भव्य हृदय धारण करें।
हो जाये कल्याण, यही प्रार्थना नाथ से॥

(दोहा)

पश्चिम पुष्कर द्वीप में, इक ऐरावत क्षेत्र।
भावी चौबीसी भजें, पाने हम शिवक्षेत्र[1]॥1॥
चौबीसों भगवान ही, देंगे सच्चा शर्म[2]।
बतलायेंगे वो जगत को, मुनि वा श्रावक धर्म॥2॥
जो श्रावक श्रद्धा धरें, पाले अणुव्रत नित्य।
बारह व्रत शुचि पालकर, पाये स्वर्ग पवित्र॥3॥
पाँच अणुव्रत से अवश, पंच पाप टल जाय।
शिक्षाव्रत कुल चार हैं, चार कषाय मिटाय॥4॥
गुणव्रत के त्रयभेद भी, रत्नत्रय विकसाय।
सोलह स्वर्गों में कहीं, ऐसा श्रावक जाय॥5॥
पाक्षिक नैष्ठिक भेद भी, श्रावक के श्रुत गाय।
ग्यारह प्रतिमा श्रेष्ठतम, श्रावक ही अपनाय॥6॥
दर्शन प्रतिमा प्रथम है, दूजी व्रत कहलाय।
तीजी सामायिक कही, प्रौषध चौथि कहाय॥7॥
सचित्त त्याग है पांचवी, छठी निशाशन[3] त्याग।
ब्रह्मचर्य है सातवी, अष्टम आरम्भ त्याग॥8॥
परिग्रह त्याग नवम कही, दसवी अनुमति त्याग।
अंतिम उद्दिष्ट त्याग है, छूटे जग का राग॥9॥
पंच महाव्रत आदरें[4], आये जब वैराग।
वो श्रावक मुनिराज बन, करते हैं सब त्याग॥10॥

1. मोक्ष स्थान, 2. सुख, 3. रात्रि भोजन, 4. आकर्षित हो।

तीन गुप्तियाँ धारकर, संत बने अरिहंत।
'गुप्तिनंदी' की प्रार्थना, हम भी हो अरिहंत॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री अदोषिकादि सुरार्धनाथपर्यंत भविष्यत्कालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य तीनों काल में, श्री तीस चौबीसी भजे।
वो भव भ्रमण को नाशकर, सर्वोच्च शाश्वत सुख भजे॥
अति श्रेष्ठ उत्तम पुण्य पा, तीर्थेश पद भागी बने।
फिर अंत में त्रय 'गुप्ति' वर, निज आत्म गुण रागी बने॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

पंच विदेह में विद्यमान श्री 20 तीर्थंकर पूजा

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(जोगीरासा छंद)

'सीमन्धर' शिवपुर सीमन्धर, धर्म सभा के स्वामी।
द्वादश कोठे मध्य विराजे, तीर्थंकर जगनामी॥
शाश्वत पञ्च विदेह क्षेत्र के, बीसों जिन हम ध्यायें।
अष्ट द्रव्य का अर्घ चढ़ा हम, मनहर कीर्त्तन गायें॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सीमन्धर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'युगमन्धर' युग धर्म धुरन्धर, धर्म ध्वजा फहराये।
युग-युग तक हम उनको ध्याकर, चरणन् शीश झुकायें॥ शाश्वत..॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'युगमंधर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बाहु' जिन आजान बाहू है, महा बाहु को धारें।
हम निज बाहु धन्य बनाने, उनके चरण पखारें॥ शाश्वत..॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'बाहु' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दर सुदृढ़ बाहु जिनकी, श्री 'सुबाहु' मनहारे।
वीतराग छवि उनकी हम सब, मन मन्दिर में धारें॥
शाश्वत पञ्च विदेह क्षेत्र के, बीसों जिन हम ध्यायें।
अष्ट द्रव्य का अर्घ चढ़ा हम, मनहर कीर्त्तन गायें॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुबाहु' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म जात शुचि दर्शन धारी, नाथ 'सुजात' कहाये।
निज संस्कारों को शोधें हम, प्रभु के गुण अपनायें॥ शाश्वत..॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सुजात' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मशक्ति को निष्प्रभ करके, आत्म प्रभाव बढ़ाया।
नाथ 'स्वयंप्रभ' के प्रभाव ने, धर्म प्रभाव दिखाया॥ शाश्वत..॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'स्वयंप्रभ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वृषभानन' चतुरानन दिखते, परमौदारिक तन से।
चारों दिश में दर्शन मिलते, प्रभु के समोशरण से॥ शाश्वत..॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'वृषभानन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनंतवीर्य' नाम गुणधारी, मोह महा रिपु जीते।
इन्द्रिय मन को निज वश में कर, आत्म सुधा रस पीते॥ शाश्वत..॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अनंतवीर्य' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूर्य-शशि-सुर-सूरी-गणधर, सस्वर जिनगुण गायें।
कोटि सूर्य से दीप्त 'सूरिप्रभ' हम भी उनको ध्यायें॥ शाश्वत..॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सूरिप्रभ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'विशालकीर्ति' का जग में, है विशालकीर्ति ध्वज।
तिरकर प्रभु ने सबको तारा, गुण अनंत से सजधज॥ शाश्वत..॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'विशालकीर्ति' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव 'वज्रधर' वज्र ध्यान से, वज्र कर्म को तोड़ें।
उनकी वज्र तपश्चर्या लख, हमने करयुग जोड़े॥ शाश्वत..॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'वज्रधर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'चंद्रानन' का आनन लखकर, चन्द्र स्वयं शर्माये।
निज परिवार सहित आकर वो, प्रभु की भक्ति रचाये॥
शाश्वत पञ्च विदेह क्षेत्र के, बीसों जिन हम ध्यायें।
अष्ट द्रव्य का अर्घ चढ़ा हम, मनहर कीर्त्तन गायें॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'चंद्रानन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्वभवों में दानादिक दे, भद्र भावना भायें।
उसके फल से तीर्थंकर श्री, 'भद्रबाहु' कहलाये॥ शाश्वत..॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'भद्रबाहु' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म भुजंग महाविषधारी, भव-भव में दुखदायी।
उनको जीत 'भुजंगम' प्रभु ने, आतम शक्ति जगायी॥ शाश्वत..॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'भुजंगम' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज ईशत्व सुगुण प्रगटाकर, 'ईश्वर' जिन कहलाये।
भव्य जीव माने जगदीश्वर, हम भी उनको ध्यायें॥ शाश्वत..॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'ईश्वर' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नेमिप्रभ' जिन धर्म नियम की, निर्मल विधि सिखलायें।
व्रत के निर्मल साधन हित हम, उनको अर्घ चढ़ायें॥ शाश्वत..॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'नेमिप्रभ' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वीरसेन' तीर्थंकर जग में, वीर धर्म सिखलायें।
वीर धर्म के पालन हित हम, उनकी शरणा पायें॥ शाश्वत..॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'वीरसेन' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाभद्र' जिन भद्रज्ञान-गुण-रूप-वचन को धारें।
उनके दर्शन पाकर भविजन, भद्र धर्म स्वीकारें॥ शाश्वत..॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'महाभद्र' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'देवयश' की यशगाथा, देव सदा ही गायें।
यश पाने को हम सब मिलकर, प्रभु चरणों में आये॥ शाश्वत..॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'देवयश' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपराजेय कर्म रिपु जीते, 'अजितवीर्य' जिनरायी।
जिन सम निज बल वीर्य जगाने, प्रभु की अर्चा भायी॥
शाश्वत पञ्च विदेह क्षेत्र के, बीसों जिन हम ध्यायें।
अष्ट द्रव्य का अर्घ चढ़ा हम, मनहर कीर्त्तन गायें॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'अजितवीर्य' जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (जोगीरासा छंद)

ढाई द्वीप में पञ्च मेरु वा, पाँच विदेह बताये।
इन सबमें बत्तीस नगरियाँ, शाश्वत मुक्ति दिलाये॥
वहाँ अधिकतम शत षष्ठोत्तर[1], तीर्थंकर हो सकते।
या कम से कम बीस जिनेश्वर, विद्यमान हो सकते॥
सीमंधर से अजितवीर्य तक, तीर्थंकर सुखकारी।
अर्हत् जिन गणधर आदिक को, ढोक त्रिकाल हमारी॥
शाश्वत पञ्च विदेह क्षेत्र के, बीसों जिन हम ध्यायें।
अष्ट द्रव्य का अर्घ चढ़ा हम, मनहर कीर्त्तन गायें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पंचमहाविदेह सम्बन्धी श्री सीमन्धरादि अजितवीर्यपर्यंत विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छंद)

सुख-शांति की शुभ कामना से, शांतिधारा हम करें।
प्रभु रत्नत्रय की भावना से, दिव्य पुष्पाञ्जलि करें॥
यह तीस चौबीसी महामह[2], हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।

(9, 27 या 108 बार जाप करें)

1.160, 2. महापूजा।

जयमाला

दोहा- विद्यमान तीर्थेश कुल, कम से कम हैं बीस।
उनकी जयमाला पढ़ें, पाने त्रिभुवन शीश[1]॥

(नरेन्द्र छंद)

जम्बूद्वीप में सात क्षेत्र हैं, बीचों बीच विदेह कहा।
इस विदेह में होते जिनवर, जिनको पूजें भक्त वहाँ॥
चौथा काल वहाँ नित रहता, मोक्ष श्रमणगण पाते हैं।
सीमन्धर आदिक तीर्थंकर, नित उपदेश सुनाते हैं॥1॥

कुछ जिनवर के पंचकल्याणक, कुछ के दो या त्रय भी हो।
सिद्ध बने ज्यों इक तीर्थंकर, शीघ्र अन्य तीर्थंकर हो॥
जम्बूद्वीप वाले विदेह में, तीर्थंकर जिन चार कहे।
द्वीप धातकी वा पुष्कर में, आठ-आठ तीर्थेश रहें॥2॥

ढ़ाई द्वीप में बीस तीर्थंकर, विद्यमान नित रहते हैं।
वा सर्वाधिक इक सौ सत्तर, तीर्थंकर हो सकते हैं॥
कम से कम हो बीस जिनेश्वर, जैनागम बतलाता है।
उन सब जिन के दर्शन पाने, यह मन दौड़ा जाता है॥3॥

प्रथम नमें सीमन्धर जिन को, युगमंधर को नमन करें।
बाहु-सुबाहु-सुजात भजें हम, स्वयंप्रभु का भजन करें॥
वृषभानन वा अनंतवीरज, देव सूरप्रभ को ध्यायें।
श्री विशालकीर्ति जिनवर वा, नाथ वज्रधर मन भायें॥4॥

चन्द्रानन वा भद्रबाहु जिन, भद्र[2] मोक्षपथ दिखलायें।
नाथ भुजंगम वा ईश्वर जिन, नेमिनाथ को हम ध्यायें॥
वीरसेन वा महाभद्र को, निशदिन पूजें नर-नारी।
नाथ देवयश अजितवीर्य की, कृपा रहे मंगलकारी॥5॥

1. तीन लोक का शीश अर्थात् मोक्ष, 2. सरल।

ढ़ाई द्वीप के सब तीर्थंकर, हम सबका उद्धार करें।
हम भक्तों को मार्ग दिखाकर, भव से बेड़ा पार करें॥
हम सब के दुष्कर्म नशा जिन, सब संकट का नाश करें।
'गुप्तिनंदी' के मोक्ष पूर्व तक, हृदय कमल में वास करें॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पंच महाविदेह क्षेत्रस्थ श्री सीमंधरादि अजितवीर्यपर्यंत विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य तीनों काल में, श्री तीस चौबीसी भजे।
वो भव भ्रमण को नाशकर, सर्वोच्च शाश्वत सुख भजे॥
अति श्रेष्ठ उत्तम पुण्य पा, तीर्थेश पद भागी बने।
फिर अंत में त्रय 'गुप्ति' वर, निज आत्म गुण रागी बने॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्व तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।
(9, 27 या 108 बार जाप करें)

बड़ी जयमाला

दोहा- तीस चौबीसी के हुए, नाथ सात सौ बीस।
उनकी जयमाला पढ़ें, बनने हम जगदीश॥

(शंभु छंद)

जय पाँच भरत-ऐरावत की, त्रैकालिक सब चौबीसी की।
जय ढाई द्वीप की दस नगरी[1], उनकी त्रिंशत[2] चौबीसी की॥
पैंतालिस लख योजन विस्तृत, मनुजों का क्षेत्र जिनेश कहे।
मनुजोत्तर[3] पर्वत से आगे, ना मनुज रहे यह शास्त्र कहे॥1॥

इस ढाई द्वीप में प्रथम द्वीप, श्री जम्बूद्वीप कहाता है।
इसकी कृत-भू[4] में इक विदेह, इक भरतैरावत आता है॥

1. पाँच भरत, पाँच ऐरावत, 2. तीस, 3. मानुषोत्तर, 4. कर्मभूमि।

आगे दो द्वीपों में इनकी, दूनी संख्या बतलायी है।
भरतैरावत हैं पाँच-पाँच, यह संख्या श्रुत में आयी है॥2॥
इन दस नगरी में इक युग में, कुल दस चौबीसी होती है।
इनके ही तीनों कालों में, त्रिंशत चौबीसी होती है॥
उन सब त्रिंशत चौबीसी का, हम पुष्प लिये आह्वान करें।
श्रीफल ध्वज युत बहु अर्घ सजा, मनभावन श्रेष्ठ विधान करें॥3॥
जो त्रिंशत चौबीसी पूजें, उसके सब दुःख मिट जाते हैं।
सब कार्य सिद्ध होते तुरंत, झटपट संकट कट जाते हैं॥
गुणहीन यहाँ गुणवान बने, धनहीन धनिक हो जाता है।
विद्यार्थी विद्या सिद्ध करें, रोगी निरोग हो जाता है॥4॥
संतानहीन संतान वरें, धनहीन प्रचुर धन पाते हैं।
सौभाग्यहीन सौभाग्य जगा, तीर्थंकर सा पद पाते हैं॥
वैरागी के सब विघ्न हटे, वे शीघ्र श्रमण पद पाते हैं।
प्रभु के पूजक सब क्षेत्रों में, सर्वोच्च श्रेष्ठ पद पाते हैं॥5॥
हे सात-शतक-विंशति[1] जिनवर, हमने भी तुमको ध्याया है।
श्री तीस चौबीसी नामक ये, अतिश्रेष्ठ विधान रचाया है॥
इस पूजा के फल से जिनवर ! मम कर्म कालिमा दूर भगे।
मुझ 'गुप्तिनंदि' की आस यही, हममें भी केवल-सूर्य[2] जगे॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ढाई द्वीपवर्ती दस भरतैरावत क्षेत्रस्थ त्रिकालवर्ती त्रिंशच्चतुर्विंशतिका संबंधी सप्तशत विंशोत्तर तीर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य तीनों काल में, श्री तीस चौबीसी भजे।
वो भव भ्रमण को नाशकर, सर्वोच्च शाश्वत सुख भजे॥
अति श्रेष्ठ उत्तम पुण्य पा, तीर्थेश पद भागी बने।
फिर अंत में त्रय 'गुप्ति' वर, निज आत्म गुण रागी बने॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

1. 720, 2. केवलज्ञान।

प्रशस्ति *(शंभु छंद)*

हम ढाइ द्वीप के त्रयकालिक, सब तीर्थंकर को ध्याते हैं।
सब अर्हत् सिद्धाचार्यों वा, पाठक मुनि के गुण गाते हैं॥
जिनमुखवासी जिनवाणी वा, सब गणधर गुरु को नमन करें।
त्रयकालिक तीनों लोकों के, सब चैत्यालय को नमन करें॥1॥
अंतिम तीर्थंकर सन्मति का, जिनशासन जग में उन्नत है।
जिसको बहुशास्त्र सृजन द्वारा, गुरुओं ने किया समुन्नत है॥
निर्ग्रन्थ जैन आचार्यों में, श्री कुन्दकुन्द आचार्य हुए।
उनकी प्रसिद्ध गुर्वावलि में, श्री आदिसिंधु आचार्य हुए॥2॥
श्री आदिसिंधु के शिष्य श्रेष्ठ, महावीर कीर्ति आचार्य हुए।
उनके शिष्यों में पट्ट शिष्य, सन्मति सिन्धु आचार्य हुए॥
उनके गुरुभ्राता[1] में प्रसिद्ध, श्री कुन्थु सिन्धु आचार्य महा।
वे ही मेरे दीक्षा दाता, वात्सल्य सिन्धु[2] आचार्य अहा॥3॥
कुन्थुसागर के शिष्यों में, श्री कनकनन्दी जी प्रथम रहे।
वे ही मेरे शिक्षा गुरु हैं, जग वैज्ञानिक आचार्य कहे॥
दोनों से दीक्षा शिक्षा पा, मैं गुप्तिनंदी निर्ग्रन्थ बना।
गुरुदेव कृपा वा आज्ञा से, मैं क्रम से जैनाचार्य बना॥4॥
प्रभु वा गुरु की अनुकम्पा से, कुछ छोटे-बड़े विधान लिखे।
श्री रत्नत्रय, विद्याप्राप्ति, श्री नवग्रह शांति विधान लिखे।
यह तीस चौबीसी का विधान, निज आत्म विशुद्धि हेतु लिखा।
इस पूजा फल से रत्नत्रय, होवे मम शाश्वत श्रेष्ठ सखा॥5॥

दोहा- जब तक रवि-शशि लोक में, तब तक रहे विधान।
तीस चौबीसी नाम का, अतिशय श्रेष्ठ विधान॥
क्षुद्रश्रमण अल्पज्ञ मैं, नहीं छन्द का ज्ञान।
'गुप्तिनंदी' की भूल को, शोध पढ़ें विद्वान॥

॥ इति अलम्॥

1. गुरु भाईयों में, 2. वात्सल्य के सागर।

प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव की पूजन

रचनाकार : मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी

(नरेन्द्र छन्द)

श्री गुप्तिनंदी गुरुवर जी, कविहृदय प्रज्ञायोगी।
हृदय कमल में आन विराजो, बन जाये हम भी योगी॥
मन मंदिर की तुम हो प्रतिमा, कैसे महिमा गायें हम।
सुरभित मनहर पुष्पांजलि से, आह्वानन कर ध्यायें हम॥1॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव ! अत्र अवतर-अवतर सवौषट् आह्वाननम्, अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्, अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

क्षीरोदधि सम निर्मल गुरु से, निर्मलता हम सब पाये।
क्षीरोदधि का जल लेकर हम, चरण कमल धोने आये॥
प्रज्ञायोगी गुप्तिनंदी गुरु, त्रय गुप्ति के पालक हो।
सबके लालन-पालनकर्त्ता, श्रमण संघ संचालक हो॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

गुरुवर तुमने मुनिपद धारा, भवसंताप मिटाने को।
तुम पद चंदन भक्त चढ़ायें, भव आताप नशाने को॥ प्रज्ञायोगी...

ॐ ह्रीं .... संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

भौतिक पद के त्यागी गुरु की, महिमा हम गाने आये।
मुक्ता अक्षत अर्पण करके, अक्षयपद पाने आये ॥ प्रज्ञायोगी...

ॐ ह्रीं .... अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

कमल केतकी जूही चम्पा, पुष्प मनोहर लाये हम।
पद पंकज में सुमन चढ़ाकर, भक्तिनृत्य रचायें हम ॥ प्रज्ञायोगी...

ॐ ह्रीं ....कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

मधुर-मधुर वाणी है तेरी, जो हित का उपदेश करे।
षटरस व्यंजन से अर्चाकर, भक्त क्षुधा के क्लेश हरे ॥ प्रज्ञायोगी...

ॐ ह्रीं .... क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

केवल प्रज्ञा दीप जलाने, जगमग दीप सजायें हम।
ज्ञान दिवाकर के चरणों में, शुभ आरतियाँ गायें हम।
प्रज्ञायोगी गुप्तिनंदी गुरु, त्रय गुप्ति के पालक हो।
सबके लालन-पालनकर्त्ता, श्रमण संघ संचालक हो॥

ॐ ह्रीं .... मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

आठों कर्म नशाने गुरुवर, द्वादश तप को धरते हैं।
धूप घटों में धूप खिरा हम, पाप कर्म को हरते हैं ॥ प्रज्ञायोगी.....

ॐ ह्रीं .... अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥7॥

षट् ऋतुओं के फल लेकर हम, गुरुभक्ति करने आये।
मोक्ष महाफल की आशा ले, नतमस्तक होने आये॥ प्रज्ञायोगी.....

ॐ ह्रीं .... महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥8॥

जलगंधादिक अष्टद्रव्य ले, जय-जय घोष लगाते हैं।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से, हम सब अर्घ चढ़ाते हैं॥ प्रज्ञायोगी.....

ॐ ह्रीं .... अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

दोहा : **शांतिदूत गुरु चरण में, करते शांतिधार।**
चरण-पुष्प में हम करें, पुष्पांजलि मनहार॥

शांतये शांतिधारा...दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रूं गुप्तिनंदी गुरवे नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

(सखी छंद)

गुणमाला गुरु की गायें, फूलों की माला लायें।
हम जय-जयकार लगायें, जयमाला गुरु की गायें॥

(तर्ज : माईन माईन...)

श्रद्धा के फूलों की माला, भक्त सभी ले आये।
श्री गुप्तिनंदी गुरुवर की, जयमाला हम गाये॥ गुरुवर हो sss.....

सावन वद साते को खुशियाँ, सावन बनकर बरसे।
जन्म हुआ भोपाल नगर में, कोमलचंद जी हर्षे॥
मात त्रिवेणी बाल शिशु को, निरख निरख हर्षायें।
श्री गुप्तिनंदी गुरुवर की, जयमाला हम गायें॥ श्री गुप्तिनंदी....

पड़गाहन राजेन्द्र करे, गुरुवर को घर ले आये।
भक्ति से आहार दिया पर, अंतराय आ जाये॥
बोला मैं उपवास करूँगा, गुरुवर तब समझाये। श्री गुप्तिनंदी....

घर वालों से आज्ञा माँगी, मुक्तिपथ की ठानी।
बोले जब तक ना जाने दो, लूँ ना भोजन पानी॥
करके अनशन तीन दिवस का, शरणा गुरु की पायें। श्री गुप्तिनंदी....

रोहतक नगरी में आ करके, कुंथुगुरु को ध्यायें।
वर्ष अठारह की लघुवय में, उनसे मुनिव्रत पायें॥
श्री आचार्य कनकनंदी को, शिक्षा गुरु बनायें। श्री गुप्तिनंदी....

गोम्मटेश के द्वारे गोम्मट, गिरी इन्दौर नगर में।
नर-नारी जयघोष करें, आचार्य पदारोहण में॥
श्रुतपंचमी को मुनिवर 'गुप्ति', जैनाचार्य कहायें। श्री गुप्तिनंदी....

हे गुरुवर ! तुम कविहृदय हो, मनहर काव्य बनाते।
कलम चला भौतिक मानव की, भौतिकता छुड़वाते॥
जो तेरे चरणों में आये, सच्चा भक्त कहाये। श्री गुप्तिनंदी....

हे भवसिंधु तारणहारी, मेरी नाव तिराना।
मुक्तिराजश्री पाने हेतु, संयम शक्ति दिलाना॥
'चन्द्रगुप्त' गुरु शरणा पाके, पूजन-भजन बनायें। श्री गुप्तिनंदी....

ॐ ह्रीं ...जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : झाँझर-ढपली-ढोल ले, करते जय-जयनाद।
श्री गुप्तिनंदी गुरु, दे दो आशीर्वाद॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अर्घावली

श्री शांतिनाथ भगवान (शंभु छंद)

तुम मोक्ष महाप्रद सुखकारी हो शांतिनाथ शांतिकारी।
आठों द्रव्यों को साथ चढ़ा बन जाये हम भी अविकारी॥
तीर्थंकर चक्री कामदेव हो तीन पदों के तुम धारी।
प्रभुवर की पूजा करने से मिट जाती भव की बीमारी॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चौबीस तीर्थंकर (अडिल्ल छंद)

जल फल आदि अर्घ बनाये भाव से।
पद अनर्घ हित भक्ति रचाये चाव से॥
जिन शासन का चक्र प्रवर्त्तन कर रहे।
चौबीसों जिनवर भव संकट हर रहे॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरपर्यंत चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनवाणी माता (चामर छंद)

नीर गंध वस्त्र आदि अर्घ भाव से लिया।
आपका विधान मात भक्ति भाव से किया॥
दिव्य देशना महान है जिनेश आपकी।
मात अर्चना हरे प्रवंचना विभाव की॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीवाग्वादिनीभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री गणाधिपति गणधर भगवान का अर्घ

कर्म अष्ट से लड़ने हेतु वेष दिगम्बर धार लिया।
क्षायिक पद की अभिलाषा से कर्म अरि पर वार किया॥
जल फल आदि आठ द्रव्य से करता प्रभु का अभिनंदन।
मुनिगण के स्वामी हैं गणधर उनका मैं करता अर्चन॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वगणधर परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री तीन कम नवकोटि मुनिराज (शंभु छंद)

जल, चंदन, अक्षत, दीप, धूप, नैवेद्य, हरित फल लाया हूँ।
अन्तर में भक्तिभाव लिये ऋषिराज शरण में आया हूँ।।
नवकोटि न्यून त्रय मुनियों को मैं वंदन बारम्बार करूँ।
बन जाऊँ मुनिमन सम निर्मल यह शुद्ध भावना हृदय धरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री अढ़ाई द्वीपस्थ न्यून त्रय नवकोटि श्रमणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग. गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी (शेर छंद)

आचार्य कुंथु सिंधु है वात्सल्य दिवाकर।
हम धन्य-धन्य आज उनको अर्घ चढ़ाकर।।
जिनधर्म का डंका बजाना जिनका है धरम।
भक्ति से भक्त बोलो वंदे कुंथुसागरम्।।

ॐ ह्रीं गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी (जोगीरासा छंद)

कनकनंदी की ज्ञान रश्मियाँ ज्ञान किरण फैलाये।
वैज्ञानिक आचार्य हमारे सबको धर्म सिखाये।।
साम्य भाव ही सुख स्वभाव है यही गुरु बतलाये।
कनक रजत की थाल सजाकर गुरु को अर्घ चढ़ाये।।

ॐ ह्रीं वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी

(तर्ज-मेरे सर पे...)

हे प्रज्ञायोगी गुरुवर दो प्रज्ञा का वरदान।
गुरुवर गुप्तिनंदी को बारम्बार प्रणाम-2
अष्ट द्रव्य से सजी धजी ये सुन्दर थाल निराली है।
गुरुवर तुमको अर्घ चढ़ाकर मिल जाती खुशहाली है।।
हे कुंथु गुरु के नंदन, हे धर्मतीर्थ की शान।
गुरुवर गुप्तिनंदी को बारम्बार प्रणाम-2

ॐ ह्रीं प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

❊❊❊

समुच्चय अर्घ

(शेर छंद)

मैं पूजता अरिहंत सिद्ध सूरि को सदा।
उवज्झाय सर्व साधु और शारदा मुदा।।
गणधर गुरु चरण की नित्य अर्चना करूँ।
दश धर्म सोलह भावना की अर्चना करूँ।।1।।

अरहंत भाषितार्थ दया धर्म को भजूँ।
श्री तीन रत्न रूप मोक्ष धर्म को जजूँ।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य को ध्याऊँ।
चैत्यालयों का ध्यान लगा अर्घ चढ़ाऊँ।।2।।

सब सिद्ध क्षेत्र तीर्थ क्षेत्र को भजूँ सदा।
औ तीन लोक के समस्त तीर्थ सर्वदा।।
चौबीस जिनवरों व बीस नाथ को ध्याऊँ।
जल आदि अष्ट द्रव्य ले पूर्णार्घ चढ़ाऊँ।।3।।

दोहा : जल आदिक वसु द्रव्य की, लेकर आये थाल।
महाअर्घ अर्पण करें, प्रभु को नमें त्रिकाल।।

ॐ ह्रीं द्रव्य सहित भावपूजा भाववंदना त्रिकाल पूजा त्रिकाल वंदना करे करावै भावना भावै श्री अरहंतसिद्ध आचार्य उपाध्यायसर्वसाधु पंच परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। विदेह क्षेत्रस्थ विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। जल, थल, आकाश, गुफा, पहाड़, सरोवर, नगर-नगरी, ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक, अधोलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः। पाँच भरत पाँच ऐरावत संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनराजेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरु संबंधी अस्सी जिनचैत्यालयेभ्यो नमः।

सम्मेदशिखर, कैलाशगिरी, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, मथुरा, गजपंथा, मांगीतुंगी, तपोभूमि आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, देवगढ़, चंदेरी, पपौरा, हस्तिनापुर, अयोध्या, कुंथुगिरी, पुष्पगिरी, अंजनगिरी, धर्मतीर्थ, वरूर,राजगृही, तारंगा, चमत्कार, महावीरजी, पदमपुरा, तिजारा, अहिच्क्षेत्र, कचनेर, जटवाड़ा, पैठण, गोम्मटेश्वर, चंवलेश्वर, बिजौलिया, चांदखेड़ी, पाटन, कुण्डलपुर, अणिन्दा वृषभदेव णमोकार ऋषि तीर्थ आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परमर्षिभ्यो नमः। भूत–भविष्यत–वर्तमान काल संबंधी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपावंतं श्री वृषभादि महावीरपर्यंतं चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारत देशे..... प्रान्ते–नगरे.....मासानांमासे..... मासे.....पक्षे.....तिथौ.....वासरे मुनि आर्यिकाणां श्रावक श्राविकाणां, क्षुल्लक, क्षुल्लिकानां, सकल कर्मक्षयार्थं (जलधारा) जलादि महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(27 श्वासोच्छवास में 9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें।)

शांतिपाठ (हिन्दी)

चौपाई

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्पाञ्जलि क्षेपण करते रहें)

शशि सम निर्मल जिन मुखधारी, शील सहस्र गुणों के धारी।
लक्षण वसु शत त्रयपदधारी, कमल नयन शांति सुखकारी॥1॥

(नोट–यहाँ शांतिधारा करें।)

शांतिनाथ पंचम चक्रीश्वर, पूजें तुमको इन्द्र मुनीश्वर।
शांति करो हे शांति ! जिनेश्वर, जगत् शांतिहित नमते गणधर॥2॥
आठों प्रातिहार्य मनहारी, ये जिन वैभव हैं सुखकारी।
तरु अशोक पुष्पों की वर्षा, दिव्य ध्वनि सिंहासन रवि सा॥3॥
छत्र चँवर भामंडल चम–चम, देव–दुंदुभि बजती दुम–दुम।
शांति करो त्रय जग में स्वामी, शीश झुकाता तुमको स्वामी॥4॥

आप अनंत चतुष्टय धारी, मंगल द्रव्य आठ अघहारी।
सर्व विघ्न प्रभु आप नशाओं, हे शांति प्रभु ! शांति दिलाओ॥5॥
पूजक राजा शांति पायें, मुनि तपस्वी शांति पायें।
राष्ट्र नगर में शांति छाये, शांति जगत् में हे जिन ! आये॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् (9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

(दोनों हाथ में चावल या पुष्प लेकर करबद्ध हो विसर्जन पाठ पढ़ें मंत्र के साथ पुष्पाञ्जलि करें)

विसर्जन पाठ

(दोहा)

जाने अनजाने हुई, प्रभु पूजा में चूक।
मैं अज्ञान अबोध हूँ, क्षमा करो सब चूक॥1॥
जानूँ नहीं आह्वान मैं, पूजा से अनजान।
ज्ञान विसर्जन का नहीं, क्षमा करो भगवान॥2॥
अक्षर पद और मात्रा, व्यंजनादि सब शब्द।
कम ज्यादा कुछ कह दिया, छूट गये हों शब्द॥3॥
मिथ्या हो सब दोष मम, शरण रखो भगवान।
तव पूजा करके प्रभु, बन जाऊँ भगवान॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं अस्मिन् नित्य पूजाभिषेक विधाने आगच्छत सर्वे देवाः स्वस्थाने गच्छतः–3जः–3स्वाहा।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(9 बार णमोकार का जाप करें।)

(नोट–दीपक लेकर श्रीजी की मंगल आरती करें।)

(यह दोहा बोलते हुए आशिका ग्रहण करें)

दोहा : **गंध पुष्प प्रभु रज यही, इसको शीश झुकाय।**
पुष्प लिये आह्वान के, अपने शीश लगाय॥

(तुभ्यम् नमस्त्रि बोलते हुये भगवान को गुरु को नमस्कार करें।)

***

(1) तीस चौबीसी विधान आरती

– मुनि चन्द्रगुप्त

(तर्ज : मन मेरा मंदिर.....)

चम-चम करती सोने वाली, सुन्दर-सुन्दर थाल ली।
हर थाली में सुन्दर-सुन्दर, दीपों वाली माल ली॥
तीस चौबीसी से संबंधित, तीर्थंकर की आरती।
आरती हो भगवन् आरती..
हो भगवन् हम सब उतारें तेरी आरती।

ये रुनझुन घुँघरु वाली, सोने-चाँदी की थाली।
थाली में जले दिवाली, बाजों की ध्वनि निराली॥
हम बजा-बजाकर ताली, आरतियाँ करें निराली।
जो यहाँ बजायें ताली, उसके घर रोज दिवाली॥
प्रभु आरती भव से उबारती॥ चम-चम...

श्री जम्बू धातकी पुष्कर[1], ये ढाई द्वीप सुखकारी।
जहँ पंच भरत-ऐरावत, ये दशों करम भू न्यारी॥
मिल इन सबकी त्रैकालिक, तीसों चौबीसी प्यारी।
इन सबके तीर्थंकर की, ये आरतियाँ मनहारी॥
प्रभु आरती पाप निवारती॥ चम-चम...

जो आरती करने आये, वो मोह-तिमिर विनशायें।
जो मोह-तिमिर विनशाये, वो पूर्ण ज्ञान को पायें॥
जो पूर्णज्ञान को पायें, वो ही अर्हंत कहाये।
जो अर्हत् देव कहाये, वो आगे सिद्ध कहाये॥
'चन्द्रगुप्त' रचायें प्रभु आरती॥ चम-चम...

1. पुष्करार्द्ध

(2) तीस चौबीसी विधान आरती

– आर्यिका आस्थाश्री माताजी

(तर्ज-मेरा मन डोले...)

जय-जय बोलो, आरती कर लो, श्री तीस चौबीसी विधान की।
हम करें सभी मिला आरतियाँ...

जम्बू धातकी खण्ड द्वीप वा, पुष्कर द्वीप मनोहर।
उसमें हैं दस भरत क्षेत्र वा, ऐरावत दस मनहर॥
प्रभु जी - ऐरावत-2
दीपक लायें, आरती गायें, सब तीर्थंकर भगवान की॥
हम करें..... ॥1॥

दस क्षेत्रों के तीन काल की, तीस चौबीसी प्यारी।
उसके बीस सात सौ मनहर, तीर्थंकर सुखकारी॥
प्रभु जी- तीर्थंकर-2
उनको ध्यायें, आरती गायें, सब तीर्थंकर भगवान की॥
हम करें..... ॥2॥

पञ्च कल्याणक से पूजित जिन, सबके पाप नशाये।
ढाई द्वीप के ये सब जिनवर श्रद्धा भाव जगाये॥
प्रभु जी-आस्था-2
'आस्था' आये, आरती गाये, सब तीर्थंकर भगवान की॥
हम करें..... ॥3॥

***

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

अतिशय क्षेत्र धर्मतीर्थ, जिला औरंगाबाद (महाराष्ट्र) द्वारा

आर्ष मार्ष संरक्षक, कवि हृदय, प्रज्ञायोगी, दिगम्बर जैनाचार्य

श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव ससंघ का प्रकाशित साहित्य

1. श्री रत्नत्रय आराधना
2. श्री लघु रत्नत्रय आराधना
3. श्री वृहद् रत्नत्रय विधान
4. श्री लघु रत्नत्रय विधान
5. श्री रत्नत्रय भक्ति सरिता
6. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 1)
7. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 2)
8. श्री वृहद गणधर वलय विधान
9. लघु गणधर वलय विधान
10. श्री वृहद नवग्रह शान्ति विधान
11. श्री सूर्यग्रह शान्ति विधान (श्री पद्मप्रभु आराधना)
12. श्री चन्द्रग्रह शान्ति विधान (श्री चन्द्रप्रभु आराधना)
13. श्री मंगलग्रह शान्ति विधान (श्री वासुपूज्य आराधना)
14. श्री वुधग्रह शान्ति विधान (श्री शांतिनाथ आराधना)
15. श्री गुरुग्रह शान्ति विधान (श्री आदिनाथ आराधना)
16. श्री शुक्रग्रह शान्ति विधान (श्री पुष्पदंत आराधना)
17. श्री शनिग्रह शान्ति विधान (श्री मुनिसुव्रतनाथ आराधना)
18. श्री राहूग्रह शान्ति विधान (श्री नेमिनाथ आराधना)
19. श्री केतुग्रह शान्ति विधान (श्री पार्श्वनाथ आराधना)
20. धर्मसूर्य श्री पद्मप्रभ-वासुपूज्य-नेमिनाथ विधान
21. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (बड़ी)
22. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (छोटी)
23. श्री पंचकल्याणक विधान
24. श्री त्रिकाल चौबीसी (लक्ष्मी प्राप्ति) रोट तीज विधान
25. श्री तीस चौबीसी (महालक्ष्मी प्राप्ति) विधान
26. श्री सर्व तीर्थंकर विधान
27. श्री विजय पताका विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री पंच परमेष्ठी (सर्व सिद्धि) विधान
30. श्री विद्या प्राप्ति विधान
31. श्री श्रुत स्कन्ध विधान
32. श्री तत्त्वार्थ सूत्र विधान
33. श्री भक्तामर विधान
34. श्री कल्याण मंदिर विधान
35. श्री एकीभाव विधान
36. श्री विषापहार विधान
37. श्री णमोकार विधान
38. श्री जिन सहस्त्रनाम विधान
39. श्री चौबीस तीर्थंकर, लक्ष्मी प्राप्ति बाहुबली-धर्मतीर्थ एवं आचार्य गुप्तिनंदी विधान

40. श्री चन्द्रप्रभु विधान
41. श्री शान्तिनाथ विधान
42. श्री सर्व दोष प्रायश्चित्त विधान
43. श्री रविव्रत विधान
44. श्री पंचमेरु-दशलक्षण-सोलहकारण विधान
45. श्री नंदीश्वर विधान
46. श्री चन्दन षष्ठी व्रत विधान
47. आचार्य शांतिसागर विधान
48. आचार्य श्री कुन्थुसागर विधान
49. आचार्य श्री कनकनंदी विधान
50. आचार्य श्री गुप्तिनंदी विधान
51. श्री छयानवे क्षेत्रपाल विधान
52. श्री भैरव पद्मावती विधान
53. श्री धर्मतीर्थ आरती संग्रह
54. सावधान (काव्य संग्रह)
55. महासती अंजना
56. कौडियो में राज्य
57. महासती मनोरमा
58. महासती चन्दनबाला
59. विलक्षण ज्ञानी (आचार्य श्री कनकनंदी जी चरित्र कथा)
60. वात्सल्य मूर्ति (गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी स्मारिका)
61. धर्मतीर्थ प्रवेशिका (भाग-1)

सी.डी.

1. श्री सम्मेदशिखर सिद्ध क्षेत्र पूजा (सी.डी.)
2. श्री रत्नत्रय आराधना व महाशांति धारा (डी.वी.डी.)
3. श्री नवग्रह शांति चालीसा (सी.डी.)
4. श्री बाहुबली पूजा (सी.डी.)
5. ये नवग्रह शांति विधान है (सी.डी.)
6. गुप्तिनंदी गुणगान (सी.डी.)
7. वात्सल्यमूर्ति माँ राजश्री (डी.वी.डी.)
8. मेरे पारस बाबा (डी.वी.डी,)
9. देहरे के चन्दा बाबा (एम.पी. 3)
10. श्री कुन्थु महिमा (डी.वी.डी.)
11. कनकनंदी गुरुदेव तुम्हारी जय हो (एम.पी.3)
12. गुप्तिनंदी अभिवन्दना (डी.वी.डी.)
13. जयति गुप्तिनंदी डाक्यूमेन्ट्री (डी.वी.डी.) I,II
14. श्री गुप्तिनंदी संघ हिट्स
15. श्री रत्नत्रय जिनार्चना

* * *